नं० ९८ क-२
सूरसागर
९८२ [illegible]
[illegible]

९८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐश्रीगणेशायनमः॥
रागसारंग॥ ॐस्वा
सकल्यौसुकदेवसों
श्रीभागौतबखान॥
दसमस्कंधपरमसु
भगप्रेमभक्तकीखा
न॥ नवमस्कंधपर्यन्तसों
कहेश्रीसुकदेवसु
जान॥ सूरकहतअव
दसमकोंउतपतिहरि।

कोध्यान॥ ॥ रागसारंग॥ हरिह

रिहरिसुमरनकरो॥ हरिच

नारविंदउरधरो॥ जयअरु

विजयपारषददाई॥ विप्रश्राप

सोअसुरभईसोई॥ होईजन

मज्यौंहरिगहारे॥ मातोमेत

मसौंउद्धारे॥ दंतचक्रसिसुपाल

सुभये॥ वासुदेवकैसोपुनि

हूये॥ ह्योरलीलावहुविस्ता

र॥ कीनोजीवनकोनिस्तार॥

सोअवनमसोसकलवषा

नों॥ प्रेमसहितसुनहिरदेआ

नों॥ जायहकथासुनेचितला

इ॥ सोभवतरवैकुंठसिधार

जैसेसनकन्दपसोंसमुझाई ॥
सारदासमेंसोहीकहिगाई ॥२॥
रागआसावरी ॥ आदिसनातन
हरिअविनासी ॥ सदानिरंतर
घटघटवासी ॥ पूरनब्रह्मपुरा
नवषानैं ॥ चतुराननसिवअंत
रजानैं ॥ महिमाअगमनिगम
जिहिंगावै ॥ सोजासुथालिये
गोदषिलावै ॥ एकनिरंतरध्या
वैज्ञानी ॥ पुरुषपुरातनहैनि
रवानी ॥ सकसारदजाकोक
रतविचारा ॥ नारदसैंनहीपावै
पारा ॥ जपतपसंजमध्यानन
आवै ॥ सोईनंदकेआगनथावै ॥

जोवनअवननरसननासा ॥
विनपदपानकौरेपरकासा ॥
अरुनअमितसितवरननथौरे ।
श्रुतिमनसामैंकहाविचारै ॥ वि
श्वंभरनिजनामकहावै ॥ घर
घरगोरसजाइचुरावै ॥ जराम
रनेनरहितअमाया ॥ मातपि
ता[illegible]रवंधनजाया ॥ अदिअने
नरहैजलसाई ॥ परमानंदसा
दासुषदाई ॥ ज्ञानरूपहिरदैमे
बोलै ॥ सोईवछरनंदकेपाछै
डोलै ॥ जलथलअनलनभछा
या ॥ पोवनलेतेजगाउपजाया ॥
लोकरचेपालेअरुमारे ॥ चोद

हृभवनपलकैमेटारै ॥ कालड
रैजाकेडरभारी ॥ सोऊषलवो।
यौमहतारी ॥ मायाप्रगटसक
जगमोहे ॥ कारनकरनकैसो
सोहे ॥ जाकेमायालषैनकोई ॥
निरगुनसगुनयैतननदोई ॥ सि
वसमायजाकोअंतनपावै ॥
सोईगोपिनकोगाइचरावै ॥ गु
नअनंतअविगतहिजनावै ॥ ज
सअपारश्रुतनपारनपावै ॥ बर
नकमलनितरमापलोवै ॥ चा
देरसपलोवलजोवै ॥ अगम
अगोचरलीलाधारी ॥ सोराधा।
संगकुंजविहारी ॥ जेरसअला

दिकनहिंपायो॥ सोरसगोकु। लगालिनवहायो॥ वडभागीप सव्रजवासी॥ जिहिंसंगषेले। अविनासी॥ सुरजसकहिक हावषानै॥ गोविंदकेगनगा। विंदजानै॥२॥ रागरामकली॥ अदभुतचरितगोकुलराई॥ दवा नलकोपानकीनोपियनदवि सिराई॥ पूतनाकेप्रानसोषेर। हेडरलपटाई॥ कहतजननीह चिडारनषिफनकछनचाई॥ तनावर्तप्रकासनेपटकौ। सिनापसोआई॥ डरनलालहिं ऊरवलिनपदेनफुलाई॥ वा।

सू॰
सा॰
४

कासुरकीचौषफोरीसकलदि
षदिषाइ॥कीरपिजरेदीनश्रेग
रीलेनस्यामभजाइ॥विनादीप
कवारंश्रयारेस्यांमथरननणा
इ॥श्रवासुरमुषपैटनिकसो।
वालवछनिवाइ॥यसोगिरव
रदोहनीकरथरनवोहिपिाइ।
सेकरभजनछवनेनियकुवा।
कहिनलागनपाइ॥लिषोंको
रैनागकेरोस्यामटेषिहुवाइ॥
सहसफणाधरनिरनकोनीस
मनालवजाइ॥चोषनारीसग
मोहनरचोरामवनाइ॥कहि
नजननीवाहकीनवलजिन

वढ़नउराइ ॥ जमलअर्जुननतोर
नोरे हृदयप्रेमबढाइ ॥ बहुत
नानपलासपलवहेहेदनदि
खाइ ॥ हरेबालकबछनवह्मा-
नेहेननैटोरीमाइ ॥ फूलिनसखा-
निरहननवनमैडुमनिकुंछनजा
इ ॥ वृषभभजनमथनकेसीह
मोप्रलंफिराइ ॥ भजनसघन
समेनमोहनटेषिबाईगाइ ॥
कहोकहानप्रकारसनाकेरा
अनेकउपाइ ॥ सूरप्रभुकीअग
ममहिमाप्रकगानितनभाइ ॥
रागकेदारा ॥ वदिनविरंचविसे
षसहृतनव्रजवासिके ॥ श्रीह

रिन्केभीषसकृतनुजवासिनि
को॥जोनिरूपजगनाथजगत-
गुरुजगतपिताजगदास॥जो-
गजतजयतपसनिदुर्लभसो-
प्रभुगोकुलईस॥एकएकेरोम
विराटकोटननअनंतकोटि-
ब्रह्मांड॥ताकोउछगालेनजसो
दाअपनेनिजभुजदेउ॥अनुदि
नस्नानकरैवसधारसचिता-
मतिसबचैन॥सोनजनसम
तिकोपयपीवतभगनननको
सबदेन॥रविससिकोटिका-
लासेचनविविधतिमरभजि
जात॥अंजनदेतहैनसनकेव

षकरागहिजसुमतिमान ॥ क
मलानाउकवैअंहहाउकउ-
षम्रषजाकेहाथ ॥ कोपेकाम
रहाषलऊटीयाविहरतवक्ष
गमाथ ॥ जाकेजटरलोकेत्रै-
जलथलपंचतत्वकवरूषान ॥
सोवालकहैउलतपलनाज-
सुमतिकेयहश्रान ॥ छिनिम
पिछिपदकरीकरूणामयव
लछिलदियोपतार ॥ देहरीउ
लेछिमकननहिसोपप्रभुषल
नेदहुवार ॥ हरनकरनदा-
नाभुकनाप्रभुविस्वंभरजग-
जानि ॥ निहिलगाउमाषनकी

सू. सा. ८

6

चोरी कौ पति है नेह तानि ॥ वदन-
वेद उपनिषद षट शास्त्र समग्र पै अक्ता-
नाहि ॥ गोपी गोप ग्वाल मंडल मे
हसि हंसि तन छन घोरि ॥ वको-
वकासुर सकट त्रिनावर्त अघ
प्रलेव हूष भास ॥ केसि कंसि-
को वह गति दीनी राषी चरण-
निवास ॥ भक्ति वछल प्रभु पति-
त उधारन रसैं सकल भरिहर ॥
मारग रोकप है हो हद ह्वारै पति-
त सिरोमन सूर ॥ ५ ॥ जनम लीला
वरनन ॥ राग सारंग ॥ वाल विनो-
द भावनी लीला अति पुनीत मु-
नि भाषी ॥ साधु साधु जन मन सैनो

परीछित सकल देव मुनि साखी ।
कालिंदी के कूल प्रगट इक मधु
पुरी नगर रसाला ।। कालनेम उ
ग्रसेन राज उपज्यौ कंस भुवाला ।
आदि ब्रह्म जननी सुर देवी नाँव ।
देव के बाला ।। दइ बिवाहि कंस
वसुदेवहि उषभंजन सुखमा ।
ला ।। हय गय रतन हेम पाटंबर
आनंद मंगलचारा ।। समदत भा ।
ई रथ नारद बानी कंस कान परी
सारा ।। याके कूख षश्रव ने रेगो सन
करै है प्रान प्रहारा ।। रथ ते उतर ।
केस गहि लीनी कैरो षइं गपट
तारा ।। तब वसुदेव दीन है बोला

पुरुषन तिय वध कराई ॥ सो कोंभ
ईश्वन ना हृदय वानी ताते सो चवनदर-
ई ॥ आगे वृक्ष फले जो विष फल-
वृक्ष विना श्रम राई ॥ याहि भांति
और विवाहों कहें सो वडधनर-
ई ॥ यह सुन सकल देव मुनि भाषी
राजन ऐसी कीजे ॥ तुम मेरे मान्य
व सुदेव देव की जीवदान यहि-
दीजे ॥ कीनो जज्ञ सो न है निर्फल
वेद भंग नहीं कीजे ॥ याके कृष-
श्रवन ते जो सुन सावधान है लेज
वाचावंध कं सकरि छोडन वव
सदेव पतीजे ॥ मनि सगे पर न ग
हवन मेनन नीर दुरभीजे ॥ पहि

लोपआरेवकीजायोसोवसुदे-
वदिषायो॥वालदेषकेसहसि-
हीनोसुतनथपराधकमायो॥के-
सकहालरकारकीनीनारदक
हिसमुझायो॥जीकेरानमक
रनेहेअपरसोमतिमहिलेआ
यो॥यहसुनिकेसखत्रफिरिमा
रयोहरिविधिकेसंधाहो॥न
वेदेवकीभई॥ग्रनिमाफलकेस
मानपहाहो॥केसवेसकोना-
सकरनेहेकहेलोजीवरवारो
यहविपराकचमिटेहैश्रीप-
तिश्रोरेकरूपकारो॥येउरूप
रेषरूमषकारोसिवविरंचके-

हारा॥ सबमिलगयेथ्सोतमग्र-
गैजिहिगतश्रगामग्रपारा॥ क्षीर
समुद्रमथनहूपैठबोलतनि
गमअधारा॥ उथ्यैथ्यरदानवक्रु-
लभानैलैनरतनअवतारा॥ आ
पहिगारभदेवकीआज्ञमयुपरी
पानअधारा॥ असुरमारसबमा
पुवछाकेअजनसभदातारा॥
सरनअग्रहपमुपंक्षीपाकैसब
कौआपुसदीनो॥ गोकुलजन्म-
लेहूसंगमेरेजोचारोसषकोनो
नबमायाविरंचसिवमोहेवहे-
मानकरिदीनो॥ देवेकृषपचक
धरोहलीआपुनआसनलीनो॥

हरिकेगर्भदेवकीजननीवद
नउजारैलागे ॥ मानोसरदचं
द्रमाअगस्यादेषनहीनमभा
गे ॥ सुरनरदेववंदनाआधिवा
सदेवसोवतजागे ॥ अवनासी
कौअगमजान्योसकलदेवअ
नुरागे ॥ कछूदिनगयोगर्भकौ
आगमउरदेवकीजनायो ॥
कहांकरोसषीनांहीकोऊचा
हनगर्भडरायो ॥ आदेउपरोह
नीपहूचीवसुदेवनिकटचु
लायो ॥ अषिललोकनाइकसु
षदाइकजननजन्मधरिआयो ॥
मेघस्यामऊटपीतपटओढ्यरु

सु
सा
८

सोहै भगतरेषा ॥ संषचक्रगदाप
द्मविराजतअतिअनापतिम
मेषा ॥ नवदेवकीभईअतिवा
ऊलखअद्भुतचरितविसेषा ॥
वैटसकुचतिकटपतिवोलो
इहूनिजरुमुषदेषा ॥ सनदेव
कीरकथानजनमकीताको
कथासुनाऊं ॥ नैमांग्योमैदि
यौकृपाकरितमसोवालक
पाऊं ॥ शिवसनकादिकआदि
ब्रह्मादिकज्ञानध्याननहिंआ
ऊं ॥ भक्तवछलयहविरदहै
मेराविरदाहैकहालजाऊं ॥ य
हकहिमायामोहउरकापसि

१

मेहेरोवनलागे ॥ अहोवसुदेव
ह्वैलेगोजलह्मेहे परमअभा
गे ॥ धनदामिनिथरनीलोकेय
जमुनाजलमेंपागे ॥ लेवसुदे
वहमेंदह्मुयेसकलदेवअनु
रागे ॥ आगेजोउजमुनाजलग
ह्रेरोपाकेसिंहदहागे ॥ तलफ
जेद्यकटिगहोनासकानवल
पस्यामडक्तागे ॥ चरनपसारि।
परसकालिंदीनरूवानीरन।
लागे ॥ ऊपरसेससहमफण।
क्षापलेगोजलकोभागे ॥ पहु
चेजाइमेंदरमंदरमेनैंकनक
नकीनी ॥ पारथरीजागकोसे

पतिवसदेवगोयकरिलीनी ॥
लैवसदेवनरानरानहीश्रीवैस
कलदेवजेयमानी ॥ देवैकुब-
श्रवनरीकेमाकेसपतीननमा-
नी ॥ पटकनसिलाजगगईश्राका-
सकैदेहभुजलपराई ॥ गाइ
श्राकासवोलीसुरदेवीकेस-
श्रावपितिपुराई ॥ जैसैमीननी-
रमेकीडनसकेनश्रापुलघाई ॥
यसकंसकालउपज्योहैब्रजमे
नाटवराई ॥ यहसुनकेसगप-
देवैपोजाइवरनलपराई ॥ मै
श्रपरायकियोसिसमारेलि-
योनमैसौंजाई ॥ वृसिश्रप-

गायदेवकीमोकोकरिजोरवि
लषाई॥ आठेंगरभप्रवेनमोह्रा
सनप्रकुमिनीबुलाई॥ वारपा-
हरसोंज्ञापरपाछैनेक्रनीरन-
हीआई॥ रोवनलगेभषाउज्ञि-
पारोप्रगटेकुवरकुनहाई॥ जा-
गेमहेरष्वरउच्चमुषदेषोआने
दनरवनाई॥ केचनकलसहो
महिजप्रजावेदनभवनलिपा
ये॥ हारनवंधनवारवंधायेजन
वननमंगलगाये॥ दिसदिस-
नेवरषेकुसुमनसरफलनि-
गोकुलछाये॥ अतिआनंदप
रसिपरनमनसरनरमुनिहर

सू
सा
॥

षाये॥आनंदभरेकरतकौतूहल
उदितमुदितनरनारी॥निरभय
भयनिसानवजावतदेतनंदसो
गारी॥नाचतमदनमगनमनकौ
नेनारीवजावतितारी॥सूरदास
प्रभुगोकुलप्रगटेकैमहिगरवा
प्रहारी॥८॥रागविलावल॥आनं
दैआनंदवैसोग्रति॥देवनदेव
दुंदुभीमजाईसुननमथुराप्रगटे
जादवपति॥गावनगुनगंधर्वपु
लकतनतनाचतसवसुरिनारिर
सकग्रति॥विद्याधरकिंनरक
लोलमनउपजावतमिलिके
द्रग्रमितगति॥वरषतकुसम

सदेससरागनगरजनथेईथे।
ईमालजननजंति॥ सिवविरं
चग्रुरुदंइअमरमतिफलेस।
घनसमानसदितमाति॥७॥
रागगूजरी॥ नेदंनेदनहेदावन
वेद॥ नउझलननमतिथडनी।
थेदेवकीप्रगटेत्रिभुवनवंद॥
जटरकहूनेवड़रिवाकणीवि
समपुगीसकंद॥ वसदेवसे
भुसीसथत्रिअनेगाझलथ्रानें
दकंद॥ वजप्राचीदमुथारा।
कातिससरदससबनद॥
उंइगनसघासहितसंकरव
ननमझलदउजितिकंद॥

गोपीजनचकोरचितवाको-
निमनलगावतहैंद॥ सरसुष
टदसकलाविराजतश्रवनप
रमानंद॥८॥रागकेदारा॥हरि
सुषदेषहेसवसुदेव॥कोटि-
काममनरूपवालककोऊन
जाननभेव॥फोरेतोरपेरपह
रभजेगमनसंदेह॥रैनिअंध्या
रीवीजवमकेसघनवरषैमह
स्वानसोपयहेत्रपोढभपसु-
कनार॥वंदवेरीसवेकूटीका
नकेसवकार॥चारभुजजाके-
चारआयुधनिरषहोनरनाहि॥
सजहूंमनपरतीतनाहींनंदग

रैलेजाहि॥ लैवेलनवैसंगसन
कोउ छिनवहुनससेक॥ हृदय
लाइउराइलीनो रही निधिमनु
रेक॥ सिंवआगेसीसपाउंजा।
निजमुनापुर॥ नासिकालैानी
रआधोपारपोलाहार॥ गोदने।
धुनकारदीनोनदीपायोभेव॥
९लकिकेहरवरनपरसेपार।
गाएवसदेव॥ महारिद्धिगमनि
जानिसषश्रमरमनिश्रानंद॥
सूरदासविलासव्रजहितप्रग।
टेआनंदकंद॥ ५॥ रागधनासिरी॥
भादोकी रैनअंधियारी॥ द्वारक
पाटवाटराकेभवदिसकेसम

सू

सा

१३

13

यभारी॥ गरजतमेघमहाउरला
गनवीचचच्यौंजमुनाजलका
री॥ तातेसोचभईमनमेरेकौंउ
रैहैंसिसवदनउजारी॥ नवकिं
नकेसरोकिराषीहैंवारीदिन
काहीनहीमारी॥ देषोयाकेसो
हनविछुरनकौंनेविधिजीवे॰
महनारी॥ सनिसनिदीनवच॰
नजननीकेदीनेंवधुभक्तनिभ
यहारी॥ छोरीवेंटकिवारउव
रगपसूमचावाहूहिनिवारी॥
रागकेदारा॥ अहोपियसोईउपा॰
वकछुकीजै॥ जिहिउपावध्रव
नोयहवालकराषिकेसनेली

९

जे॥मनसावाचाकरहुनकर्मएक
रूपकबहूंनपतीजे॥छलबल
करउपावकैसेहूंकाढ़िअनेन
कहूंदीजे॥नाहीअपनोभागजु
गहूमुषनिनलोचनपुटपीजे॥
सूरदासऐसोमनकौंजसश्रव
ननिसुनिसुनजीजे॥४९॥रागके
दारा॥सुनिदेवकीकोहिनहूं१
मारे॥अमरकेमअपवेमबिना
मनसिरऊपरवैहैरषबारे॥ओ
सोकोत्रिभुवनमेंसमरथजोइ
हिबालकनेकरवारे॥षड़गाय
हैंआवततहिदेषतअपनेकर
छिनमाहिपछारे॥इहिसनके

सू
सा
ष

14

ग्रऊल्लाइ गिरीयरै नैन नीर टोऊ।
भरछाये ॥ तुषित नैदेषव सदेव देव
की सगत मधुपरि कै भुज चारे ॥
वेलि उटिपर तिज्ञायद्दू ग्रमुद्दम
नैउ वैरे न वमुहि मारे ॥ ग्रनिक्कुष
मैसुषदेषत न मानहिं सरजुप्रमु
नेद भवन सिधारे ॥१२॥ राग विहाग
डे ॥ देवकी मन मन चकृत भाई।
देष्यो आई पुत्र मुष काहू न ऐसी।
कहूं देषी न नाई ॥ सिर पर मुकुट
पीत उपरैना भृगुभृगुपद उर भुज चारि।
करे ॥ पूरव कथा सुनाइ कही ह
रि तुम मांग्यो यह भेष धरे ॥ बं।
दी निगड सब वापप रहू हारे को

कपाटउघैसो॥ नैननमोहिगो।
कुललैजावहूयहिकहिकौसि
षयसो॥ नवहिउदिवसदेवा
ववनसुनहरषेनंनंदघरआ
याये॥ बालकयहलैसुरदेवी।
कोसुरमथुरीआये॥ १४॥ राग
धनासिरी॥ अंधियारीभादोकी।
रात॥ बालकहितवसुदेवदेव
कीवैदिवहूतनपकुनात॥ वीच
नदीचनवरखतगाजतनदामि।
निआवतजात॥ वैठनउछनसे
जसोवतमैकेसहरनिआऊला
त॥ गोकुलवाजतसनीवधाई
लोगनिहियेसहात॥ सूरदास

यानेदकेदकेदेनकनकनग
दान ॥ ४ ॥ रागविलावल ॥ गोकुल
प्रगटिहैहरिआई ॥ अमरउदार
नअसुरसंघारनअंतरजामीत्रि
भुवनराई ॥ माथेपरवसुदेवथ
रिआपनंदमहरघरगएपहुंचा
ई ॥ जागीमहरिपुत्रमुखदेख्योपु
लकअंगकउरमेनसमाई ॥ गदग
दकंठबोलनहिआवेहरषवंत
हेनंदबुलाई ॥ आवोकंतदेवप
सन्नभएतनतनपुत्रमुखदेखोआ
ई ॥ दौरिनंदगएसुतमुखदेखोसो
भामोपेवरनीनजाई ॥ सूरस्या
मयहिलैयहमांगोहरिपिवा

वहूजसमतिमाई॥५॥रागआसावरी॥व्रजभयोमहरकेपूतजव
यहवातसनी॥नवग्रानंदेसव
लोगगोकुलगनकगुनी॥ग्रति
पूरवपूरेपुन्यरोपीकुलकलस
थुनी॥यहलगनक्षत्रवलसो
धिकेनीवेदधुनी॥सुनिधाईस
वव्रजवालासहजसिंगारकि
येॆं॥तनपहिरैनूतनवीरकाज
रैननदियें॥कसिकंचुकीतिल
कललाटसोभितहारहिये॥क
रकंकनकंचनथारमंगलसा
जलियें॥वग्रपनेग्रपनेमेलनि
कसीमानभली॥मनोलालमु

स्र॰ सा॰ १८

16

नकीपांनपिजरनरघुबली॥नेगा
वेमंगलगीनमिलटसपांचअली
मनेभोरभयेरवदेषस्लीकमल
कस्ली॥उरग्रेवरउरनमजानेसोरे
सरगस्हरी॥सुषमेउरनरोरीरंगोस
उरमांगसुहरी॥सवअवननतरा
लनरोनावेनीसमनगुहरी॥सरा
वरषतसमनसदेसमानोमेघ
झरी॥पकपहिलेपइवीजाइ
प्रतिप्रानेदमरी॥लइमीनअभव
नवलाइसवसिसुपाइपरी॥इक
वदनउघारनिहारेदेदृअसीसव
री॥चिरजीवोजसोदानेदश्यनं
कामकरी॥धनधनमहराकी

कृषभागसुहागभरी॥ धनिदिन
धनिधनवहगानधनिघदणहि
रहरी॥ निहिंजायोश्रैसोसुतस
वसषफनिफरी॥ थ्यरथ्यापोपर
वारसवमनकेसुलहरी॥ सुन
ग्वारमगाइवहोरिबालकेवा
लिलिवये॥ गुहिगजाबसवनथा
नेंअगअंगविचकिये॥ सिरदय
माषनकेमाटगावनगीतनचे
नेफेंाफसृदंगवजावतसवने
दुभवनगये॥ रकनाचनकरत
फ़ेलाहलछिरकतहरदहो॥
मेनोवरषतभादोमाससनदीवू
नहयवही॥ जहींजहींमनजार

कौनकनंहीनही ॥ अतिग्रानंदम
गनगुवारकाहूवदननही ॥ इक
थारनंदपैजाइगुनिगुनिपारप
रे ॥ इकग्राघुहीमारहिंहंसंग्रक
मोरभौ ॥ इकग्राभरनसवैउता-
रदेननसंककैरै ॥ इकदधिगेव
नग्रहहवसवनकेसिरनधरै ॥
जेवनहारनंदभयेढाढैलेऊस
हाथधरै ॥ नंदीगुवपिवप्रजार-
ग्रेनरसीचहरै ॥ वसिवंदनवा-
रूमागारविप्रवतिलककरै ॥
हिनगुरुजनकोपहिरारसवके
पारपरै ॥ गुनगेंधाकहीनजाहि
नहनसवछवधी ॥ रनचरित

जमुनकैकछूरनीहरिपिवढी ॥
ध्रुअपेतावेपीटसौंनेसीगम-
ढी ॥ नेटीनोहिजनथनेकहरा-
षअसीसपढीतवरहमित्रअरु
वेपुहरसिहसिवोलिलिये ॥ वसि
ष्टगमदमलयकपरमाथेंतिल
काकिये ॥ उरमनमालापहिराई
वसनविचित्रदिये ॥ मनोवरषत
मासअसाढदादुरमोरजिये ॥
वेदीजनमागधसूतनआंगनभव
नभरे ॥ नेवोलेलेनाममनिकी-
उनाविसरे ॥ जिहिजाचेसोति
निदीनेरसमेदराइढरे ॥ अति-
दानमानपरधानमरनकामकरे

नवखंडवरखोरमगारसरीसंगव
नी॥नेदीनीवेपुनतुलाइजेसेमा
इवनी॥वैनिकसीदेनअसीसव
कुअपनीअपनी॥नेअनिआनेद
सेमतनिजगरहगरहगवनी॥न
वचरचाभेरमटगपटहिनिसा
नवजे॥यरवेधीवेदनवाकह।
चिजलकलमसजे॥नादिनते
वैलोगमघसंपतननजे॥हन।
सासवनिकीघहगानजिनरा।
चिरनभजे॥५॥ रागआसावरी॥
आजनवनकोऊवैजिनजाइ॥स
वगाइनिवलइनमसेनसवआ
वहविवबनाइ॥वालकआज

भयोजुमहूरकेकहूनसुनाइ
सवैवोलसैमभयोऊलाहूलश्रा
नेहउरनसमाइ॥कतहोगहर
करनवेकाजेवलोवेगिउटि
धाइ॥अपनेअपनेमनकोवे
मोसवकोऊदिषोधाइ॥एक
फिरतदधहूवधरतसिरएक
रहतगहिपाइ॥एकेहूसिहूं
सिटतवधाईएकहूसनउटि
गाइ॥वालकहूहतफनतरना
रीभयोचोगुनोचाइ॥सूरदास
सवप्रेममुदितभयेगनतना
जाताइ॥ ८॥ रागआसावरी॥सषी
रीकाहेकोंगहरलगावति॥

सबकोऊऐसोसुनिकेकौंना
होउदियावति॥ ग्राजुसबान
विधानकीनौमनिजुहूनीति
नभावति॥ सुतकोजन्मजसो
दाकेचरनालगिनमहिंलुला
वति॥ दधिरोचनभरिबेगिचा
लोमिलिकनकथारकरगा
वति॥ सोवैहोसतभयोनंदकै
काहिकौंचोरावति॥ ग्रंचलउा
उनमिथलचोटीसिरसमनि।
सबजनबरषावति॥ सूरदाससन
जेहोतेहोतेग्रावनसोभापाव
ति॥ ९ ॥ रागकली॥ सषीहोंग्र
पनीचाहसाआर॥ ऐसीदिन।

नंनंदकैसुनिघनउपजौंऊंवा
कनहाई॥बाजानवजनिसाना
सुविकीर्नैधिफसुरजनसहना
ई॥महरमहरिदोऊहाथलटाव
निधानैदउरनसमाई॥चलोस
षीहमदूंमिलिजैयेनैककरो
धानताई॥कोउपहिरीकोऊप
हिरनकोऊअसीहोउदियाई॥
केवनथारहवदधिरोचनगाव
निचलीवधाई॥भांतिभातिवा
नचलीनवतिजनउपमावर
नीनजाई॥अमरविमानचढे
सुषदेषतजयधुनसवदसुना
ई॥सूरदासप्रभुभक्तहेतहिंतदू

हनकेउघदाई ॥१८॥ राग सारंग ॥
आजहरिकभलीबातसुनआई ॥१
महरिजसोदाबालकजायोआ
गनवजतवधाई ॥ कहियेकहा
कहतनेहीआवैरतनभूमसव
छाई ॥ नाचतवृद्धतरुनअरुवा
लकगोरसकीचमचाई ॥ हरि २
भीरगोपगवालनकीवरनीक
हावनाई ॥ सूरदासप्रभुअंतरजा
मीनंदसुवनसुषदाई ॥१९॥ राग
धनासिरी ॥ आजनंदकेद्वारेभीर
इकआवतइकजातविदाहैइ
कठाढेमंदरकैनीरे ॥ कोउके
सरकोतिलकवनावतको

ऊपहारनकेवुकोचीरे॥एकन
कोगोदानसमर्पनएकनिकौ
पहिरावनहीरे॥एकनिकोत
लसीकीमालाएकनकौदेरा
घनधीरे॥सूरदासधनस्याम
मनोहीधमजसोधाउन्यवा।
सीरे॥२१॥रागधनासिरी॥आज
वधावानंदराइकैगावनमंग
लचार॥आएमंगलकलस।
साजकैदधिफलदूननडार
डरमिलेनंदराइकौगोपीसब
निमिलहार॥मागधवंदीसूत
अतिकरहिकौनदूचार॥आ
पएरनआसकैसबमिलदेत

सू॰
सा॰
२१

असीस ॥ नंदराइकौलाडिलौजी
वौकोटिवरीस ॥ नवव्रजलोग
नंदनंदीनेवसनवनाई ॥ ऐसौ॰
सोभादेषकैसूरदासवलिजाइ
रागजैतसिरी ॥ आज्ञवधाईनंदके
मंदर ॥ प्रगटोपूतनसकलसुष
कंदर ॥ जनमनढोटाव्रजकौ॰
सोभा ॥ देषिसषीकछुऔरेओ
भा ॥ जकुमीसौजदहामालनवौ
लै ॥ वंदनमालावंधनतोले ॥
हारतुहारनफिरतअहसिपि ॥
कौरीसथियाचेततननवनिधि ॥
गहरगहनेनिकसेगोपीजव ॥
रंगगलिनमैभीरभईतव ॥ के

२१

21

वनघारारहेह्राधनलसि॥ कम
लनचढिआपमानेंससि॥ उमं
गेप्रेगमनदीलहिविपावै॥ नेदस
हनसींगरकोंधावै॥ कंचनक
लसजगामेंगेनपके॥ भोगस
कलअंसगलजगके॥ झेलन
खालमतोरनजारीते॥ भपसा।
वनकेमनकेचीतै॥ अतिआने
हासमीनें॥ पावनसानरोनन
कोटीनें॥ कामधेनुनैनेंझना।
हीनी॥ हेलषधेनुहजनेकोदी।
नी॥ नेंदहारजेमागनआप॥
नेवहरीमागनकहाप॥ यरा।
कोहाझलकेसनजायो॥ सुर

दासनहांसबसुखपायो ॥ २१ ॥ राग
विलावल ॥ आलचरानेदमहरके
वधाई ॥ आनसमैमेमोहनहुअब
निरषतिकोटिचंदछबिछाई ॥
मिलब्रजनागरिमंगलगावत
नंदभवनमेआई ॥ देतिअसीसा
जियोजसुदासुतकोटिकवरष
कनहाई ॥ अतिआनंदबढौगो
कुलमेउपमाकहीनजाई ॥ सूर
दासधनिनंदकीघरनीदेषतनै
नसिराई ॥ २२ ॥ रागकान्हरा ॥ नंदा
ारकेनवनिधिआई ॥ माथेमुकु
टस्रवनमनिकुंडलपीतवसन
भुजचारिभुजाई ॥ बाजतबेनुरू

देगवनरगनियसैअरगज्ञाअेंग
धाई ॥ अक्तनहवलिपेंरिछलाहे-
वारनिवेधनवारवेधाई ॥ दीयली
पनअरुवेंदनक्रिरकनरपटिप
रनथैलेनठलाई ॥ सुदासमव-
मिलनपरसपरदानेदेननहीं-
नेंदअधाई ॥ २५ ॥ रागगोंडी ॥ गो-
पीगावैमंगलचारवधावानंद
कै ॥ रानीजायोमोहनशनवधा
वाब्रजराजकै ॥ वहुतनारिसिं-
गारहेंदरबारगोपकुमार ॥ स-
जनधीनमनामलेलेदेनपरस-
परगार ॥ आनेदअनसैवध्योंव
रवारनिरनठावै ॥ नेंदहारेभटले

मै.
सा
२२

23

लैउमडुमडैबोगोकुलगावे॥ सा-
खियासामाहेहिंहारैमातसीकव
नाई॥ नवकिसेरीसुदितहैवेहेगा-
हनदसोदापाई॥ चोकचंदनले-
पकेग्रारतीधरीसेजोर॥ करनि-
ऱ्योछकमारथेसोग्रानंदजोनित
होर॥ करिकरिश्रलिंगनगोपका
पहिरैश्रभूषनचीर॥ गाइबछकसि
गारल्याथेभईगवालनकीभीर॥
सुदितमंगलसहितलीलाकरै-
गोपीगवाल॥ हरदश्रक्षतदवध
दिलैतिलककरैब्रजवाल॥ एक
एकगननतनकाहूएकबिलाव
नगार॥ एकहीरैदैदैगावेएक

ज्ञैबैठैयाइ॥ एकहूहूकिसोर।
बालकएकजोवनजोग॥ कु
मजनमसेप्रेमसागरविलस
नसबव्रजलोग॥ प्रभुआनंदके
होतनवतनहोहिभोगविलास
देखिव्रजकीसंपदकोंफूलेस
रजदास॥ २५॥ छाकीवर्नन॥ राग।
असावरी॥ नेदज्जूमेरेमनआनंद
भयोहोगोवर्धननेआयो॥ त
मेरेउछवभयोहोसनकेअंतआ।
नेहुपायो॥ वडीजनअरुभिछ
कसनकेदेसदेसतेंआये॥ एक
पहिलेदीआसालागेवहुतनदि
नकेछाये॥ नमहीनेकंचनम

नयक्रानानावसनचत्रूप॥ मो
हिमिलैसागनमैसानोज्ञातक
हूकेभूप॥ नमनोपांमउदारद
हूनजोमागेपोसोदीनो॥ ऐसो
औरकौनत्रिभुवनमैसमसर
सोकाकीनो॥ लछदेहूनोपा
सवारसोंमेविनदेषनहिजेदो।
नेदनाइसनविनतेमेरीमैनव
हीविघाभलेहूदो॥ दीजेमोह
कृपाकरिजोइसोहौंआपोमा
गन॥ जैसमतिसनअपनेपा
इनचलेषेलनआवेआंगन॥
नेवनममदनमोहनकहिदे
रोघरहसनिकेचोजोव॥ दो।

मैनिहारी घरको राछी सूरदास
मेरी नाव ॥ २८ ॥ रागजैतसिरी ॥ मैतो
नेरे घरको छाछी मोमरयो आग्या
न ॥ सोई लैहों जाई मेनभावै नंद
राइकाआन ॥ धमनेदधमजसो
दाधनिधनजाघोसुत ॥ धन्यभा
मिव्रजवासी धनिधनआनंदक
रभूत ॥ धक्कलधरहोनआनंदव
धाईजहोनदेमाधाधसुन ॥ मनि
मानकपाटेवरछेवरलेननवा
ननविभूत ॥ द्रधगाधषोलमडा
रदेधसबफेरिभेरेनोभात ॥ लो
गनदेनफेरिफुनिदेखतिसंपा
निचरनअमात ॥ नेभुहरिमिहि

स
सा
२५

25

ग्यानवरग्रपनेमेपूछीनवद्यानि
ह्रसिह्रसिदैरमिलेग्रकनभरि
ह्रमनमपेकैग्यान॥संपतिदेह्र
लेह्रंनेद्रिपकाग्रत्रवसत्रकिद्रिका
ज॥जोमैपैमांगनग्रायोसोलेह्र
नेदग्राज॥ग्रपनमनकौंवदन
दिषावैवेमह्रसिरताज॥त्र
मह्रिममेछाछीनैरोप्रभुमेरोव
जराज॥वदनवदनसंपतिदास
देसोमैलेघरजाऊं॥जोसंपति
सनकादिकलेभसोसववनमरे
ठाऊं॥जोकोनेननेनक्रानिगा
वतनेईकमपदध्याऊं॥ह्रौं
तेरोजनमजनमकोछाछीस्र

रतुदासमकहाऊं ॥२०॥धनासिरी॥
छाडीदानमानकेभाई॥नंदउ
दाभपवहिरावनवहूतभलीव
निआई॥जवनवजनमथरीछा
टीकोजननमकरमगुनगाऊं॥
अर्थधर्मकामनामुक्तिफलवा
रणदारणपाऊं॥लेछाडिन
कंचनमननुक्कानानावसन
अनूप॥ हारीरत्नपटंवरहस
कोंटीनेत्रजनकेभूप॥अवनोमि
लेभयेपारायननंदरसिनिरष
निधिपाप॥जहतनहूंवदनमाल
विराजननगरहरवजनवधाई॥
जिहिंनाचीसोईतिहिपायोन

मरीभईबडाई॥ भक्तिदेहुपावै
फललाकेसूरदासबलिजाई॥१॥
धनासिरी॥ नेदनुतेरेसुषदरषपाये
सबनकोदेवपितरभलोमामो
नसेगोपउमानसबदिनकीभ
वनचनदेसजामो॥ होतोनिद
रेघरकोछाडीनामसुषसनि
सुषपाऊं॥ गिरगोवरधनवा
सहमारोगिरतनजमुनतनजाऊं
छाडिनमेरीनाचेगावेहोही
छाडिनजाऊं॥ हमगोवीनोभ
पोनमरेनोमांगोंसोपाऊं॥ अ
वनममोकोंकरोअनाथीनी
कहूकानपसोरो॥ डारेरहोदेहु

इकमेदासनामसरूनिहारौं ॥
रूसिछाडिमेंबोलीश्रवनन
वरनबृथाई ॥ ऐसोदियोदेइ
सूरकोऊजनसमनिहारौइहि
ई ॥ २५ ॥ इतिश्रीभागवतेसूरदासकृ
तप्रथमोध्यायः ॥ ॥ ॥
रागमलार ॥ जबतेनिरषाऊधोजान
लगेमनमनपहसोवनमली
नहियहवान ॥ श्रमसुभुजपति
होतदादेनिहुरजैसेंकाठ ॥
सगपहनहिवननतनीकोहो
इजैसेपाठ ॥ जौकहौनौकरै
कहयहनीदहैश्ररुमोह ॥
देषिवेकोंपरमसंदरहननै

स
सा
२१

27

ननिजाहि॥ गंगाकलमसुप्रषा-
नमैसैनैसोयहरूप॥ ब्रह्मोकेसे
प्रेमपावनविनाद्दोरसरूप॥
१३॥२१॥ रागनट॥ नइपतिनाभो
उधारीन॥ जिह्विप्रकृतिनिज
सषाकहीपनकरनभावप्रनी
त॥ विरहउषजहानाहिनैक
हूंनहनउपजैप्रेम॥ रूपरेषनव
रनजाकैरहपहोवहनेम॥
विगुननकलषनहमको
ब्रह्ममानतप्रोर॥ विनागुनकैां
गुहमउधरेयहकारनमनदोर॥
यहसबसकिहिमेवकहिये
कौंवलेसेमार॥ कछुकह

नयहएकसगाटनअतिभयौश्र
हंकार॥ प्रेमभजननैनकथाकेंना
इकौंसमुझाइ॥ सुरसभुमनथ
हैअ्राईव्रजहिवेहूपठाई॥ ३२॥ रा
गनट॥ यहकथोऊदासींरंग॥ स
दामिलइकसाथवैठनचलन
संग॥ वानकहननवननयासो
निठुरजोगीजंग॥ प्रेमसनिवि
परीनभाषतहोनहैरसभंग॥
सहाव्रजनकोंध्यानमेरोरासरं-
गनरंग॥ सूरयहरसकहेकेका
सौमिल्यौंसषाभरंग॥ ३॥ राग-
नट॥ संगमिहिकहेंकासोंवा
त॥ यहजोकहनजोगकेवातें

नोमैंरसनरनान ॥ कहूंनकहा
पितुमातकोंनकेप्रकृषनारि
किहिनान ॥ कहांनसोदासीमे
याहैकहांनंदसमतान ॥ कहांवृ
षभानसुतासंगकोसुषवहूवा
सवहूथान ॥ सषीसषासुपनही
भवमैंनहिंवैकुंठसुहान ॥ वैवा
नैकाहूपैकिहिआगैघरहुति
हरिपछतान ॥ सूरदासप्रभुय
हमहिमाकहिलषीवदनवल
भान ॥ ५ ॥ धनासिरी ॥ कहांसुषव
नकोंसोसंसार ॥ कहांसुषवं
सीवटजमुनायहमनसदावि
चार ॥ कहांवनधामकहांराधा

सेंगकहांसंगब्रजनवाम॥कहां
रसरासवीचग्रंनरसषकहां।
नागरिननवाम॥कहांलनानरू
नरूपतिश्वननकुंजनकुंजनवन।
धाम॥कहांविरहसषविनगो
पिनसंगसरसस्यामममनकाम
रागपञ्जासिरी॥ सषाहमकोंमि
लेऊंधोवचनटारतजात॥श्र
त्रागनिजमनकोअगटक
रकहेंकासेंवान॥भजनभा
वविनानाहीसषकाहांप्रेम
श्ररुजोग॥कागहसहिसंगजै
कहाउषकहांभोग॥नागन।
मेंयहदेषोवचनप्रतिकहैंबल

५

साधुनकीकथासौंकहोपर।
कैसेंभ॥७॥रागकान्हरा॥ हंस।
कागकोसंगभयो॥कहांगोकु
लकहांगोपिकाविधिपरसं
गदयो॥ जैसेकंचनकोचमों।
चंदनसंगऊगंध॥जैसेषरीक
पूरदोऊरामपरभईऐसेसंथ
नलबिछुमीनरहनजैगनारी।
परसोरीनचलावत॥नवब्रज
कीबानेपहिकहियतनहितव
हिउचटावत॥योकोतानथा।
पिब्रजपठवोंग्रानपाहिपाउ
सनोसरयाकोब्रजपठवोंभले
वैनेगोदाउ॥८॥रागधनासिरी॥

याहियौरकछूनहीउपाउ॥ ऐसै
प्रगटकहौंनहिवहिहैवन-
कोदेहुपठाइ॥ गुपतभीतनु-
वनिनकीकहियाकोकराम-
हेन॥ गोपिनकीपरमोधनका
रनमैंहैसवननतरंन॥ अतिअ
भिमानकरैगोमनमैजोगिनि
कीपहुंचान॥ सूरस्यामयह-
मननिहवैकरिवैकरिवैहि
रहेमिलपांनि॥१॥२९॥ धना-
सिरी॥ नवहीपाहिकहितेजा
हि॥ मोहिपटवनगोपकनपै
हाथहैहैनाहि॥ जोगकोअ-
भिमानकरिहैवजहिजेहैथा

स
सा
१
३०

ई॥ कहैहोमोहिस्यामसमानकुरो
यबनराई॥ आइगइनिहिसमैक
थोसषाकहिलियेबोलि॥ के
धधरिभ्रजभयेयहाठिकानवचन
नहोलि॥ वारवारउसासझरत
कहतब्रजकीवान॥ सरप्रभुके
वचनसुनिसुनिउपगासुनसु
सिकान॥११॥४॥ धनासिरी॥
हरिगोकुलकीवीतचलाई
सुनेउपगासुतमोहनविस
रतब्रजवासीसुषदाई॥ यचि
तहोनजाउमैयवहीइहानही
मनलागत॥ गोपीग्वालगा
इवनभ्रतिउषपायोसभागत॥

कहांमाषनरोटीकहांनसमती
जेवहिगहिगहिप्रेम॥ सूरस्या
मकेवचनहसतसुनियापति
ग्रपनोनेम॥ ५२॥ ५॥ रागरामकली
नउपतिलिष्योतिहिंसुमिकां
न॥ कहतस्रोमनरहीजोईसो
भईयहवान॥ वचनपरगटक
रनप्रेमकथाचलाइ॥ सुनो
ऊधोमोहिव्रजकीसुरतनहि
विसराई॥ रैनसोवनदिवसजा
गतनाहिंनैमनश्रान॥ नंदजस
मतिनाहिनव्रजनहांमैंरोश्रान
कहतहरिसुनि३पगसुतपह
कहतिहेंरसरीत॥ सुरविननें

सू
सा
३१

31

टरतनाहीराधिकाकीप्रीत
॥२॥४२॥रागकलीसषासुनिए
कमेरीबात॥वहललनामहा॰
गोपकनिसंगसुधिकरतप॰
छुतात॥विधिलिषीनहीट
रतकैंगहूंयहकहतअकुला
त॥हेसिउपगसुतवचनबो
लेकह्याहरिमुलान॥सदा॰
हितयहरहतनाहीसकल
सिष्याज्ञान॥सूरप्रभुयहस
नोमोसोंपकहीसोंनात॥२॥
रामकली॥जबऊधोयहभा॰
तकही॥नवजऊपतअति
हीसषपायोवानीप्रगटस

४२

ही॥ श्रीसुषकह्यौमाहूतनमा-
व्रजकोंमिल्यौजाइव्रजलोग
मोविनविरहिभरीव्रजहूतो
ग॥ प्रेमसिंटाइग्यानपरमोथै
तुमहोश्रमग्यानी॥ सूरउपग
हूतमनहरषानोइहमहिमा
इनजानी॥२॥४४॥रागगौरी॥
ऊधोयहतुमनिहचैजानौं
मनवचमभैतुमैपठावनव्र
जकौतुरतपलानौं॥ पूरन
ब्रह्मसकलअविनासीता-
कीतुमहोज्ञा—ना॥ रेषनरू
पजातकुलनाहीजाकीना-
हिपितुमाता॥ यहमतिदे-

सू
सा
११

32

गोपिनकोंग्यावहुविरहनदी
मैंकोंमत॥ सूरनरतनमना
इकहैयेयटवहलविनानहिंग्रा
मत॥२॥४५॥रागकल्यान॥ऊधो
मनअभिमानवडायो जदुप
तिजोगजानिनियसोंवोनेन
अकासचढायो॥ नारिनयें
मोकोंपटचमहैकहनेसिया
वनजोग॥ मनहीमनअपक
रतअसेंसायहमिथ्यासव
भोग॥ आपसमानलियोसि
रूपरप्रभुअज्ञापरमान॥ सू
रदासप्रभुगोकुलपटवनमें
कोंकहोकग्यान॥२॥४६॥

रागकान्हडा॥ नमपठवतगोकु
लकोनेहो॥ जोगग्यानहेव्रज
कीबानैनोऊनसोमैकेहो॥
गदगदवचनकहतप्रफुल्लित
वारसमुझैहो॥आनहीनेजो
कैरोकाजहोकोनकाजपति
ग्रेहो॥ यहमिथ्यासंसारसदा
ईयहकहिकेपतिग्रेहो॥सूर
दिनहैव्रजतिनसषदेवाइचर
नपुनिगैहो॥ ३ ॥ ५१ ॥ धनासिरी
ऊधोव्रजकोंगवनकरो॥मो
विनविरहभरीव्रजवालाति
नकोदुषहरो॥ जोगग्यानपर
मोधिसुवनिकोंजोंसषपावै

सू
सा
५५

33

नाहि॥ पूरनब्रह्मअलषविरंचो
करिमोहिबिसारीऊंगी॥ सष
प्रवीनहैमोरेहोनमनमतेन-
हीमहेन॥ सूरस्यामयहका-
रनपठवतहैमाधैगोसंत॥ ५३॥
रागविहागड़ा॥ कुधौवेगिहीअन
जाहु॥ सुरनमैदेससुनाइमेटो
नलफननकोदाहु॥ कामपा
वकतूलसमतनविरहस्वा-
ससमीर॥ जरिमसमनहिहो-
नपावैलोचननकेनीर॥ आजु-
लोंरहिभांतिहैवैकछुकऊम
लसरीर॥ समाधानाकियेवि
नातियकोंयरैजीपधीर॥ बा

खारकहाकरौमनमधासाश-
वीन॥ सूरसुमतिविचारदेषौ
मीवैनलविनमीन॥ १२॥ ४९॥
रागकैदारा॥ सुनिसषाहितश्या-
नमेरैनाहिनैसमतोहि॥ कैसे
कुकरिश्रिनकीजोगोपिक
नमोंमोहि॥ रैनदिनममभक्ति
उनकेहृकरतननश्रान॥ श्रोरा-
सरकसमोहिश्रंप्योनरूनित
नयनश्रान॥ श्राजसेपातनरी
नेहृथ्यागोपकुमार॥ सालो-
कतासामीपतासारूपताभु
जचाति॥ एकरसीसाजुहुता-
सोसिहनहिविनज्ञान॥ मोइन

सू
सा
३४

34

मउपदेसीयोजिहिलैहैपरति-
र॥ जोनअंगीकृनकौंवैदोइहैं
तिनदास॥ सबगाइचगाइदोमैं
बहुरिबसिब्रजवास॥ १२॥ ५०॥
बिहागडा॥ तुरनब्रजनाहुउपग
हनआज॥ तानबुफाइषबरदै
आवहुपकपंथहैकाज॥ जब
तेंमधुवनमेंहमआयेओरगा-
योनहिकोइ॥ जबतिनपैनाहि
कोंपठवौजोतुमलायकहोइ॥
इकअवीनश्रीमथाहमारेता-
मीतमसरकौन॥ सोइकीजो-
जैसेब्रजवासासाधनसीषैपो
न॥ श्रीसषस्यामकहयहवानी

कथोसुनतसुदात ॥ श्रासुसमा
नसूरप्रभुजेहेनारिमानिहेवा
न ॥ १३ ॥ ५१ ॥ रागगौरी ॥ कथोव्रज
जनगहरलगावहु ॥ तमव्रजना
रिजानसुकवतकहियेंजोगा
सुनावहु ॥ वानीकहतसमुझ
वेलेहेंकहीहमारीमानो ॥ विर
हदाहयहुसुनतवुझेहेमानोश्र
मलेयानो ॥ श्रवहीयाहुविकल
सवगोपीजोमवचनकहियो
षो ॥ सूरनंदवावाजसुमतिकों
वेगिजाइसंतोषो ॥ १३ ॥ ५२ ॥ रा
गगौरी ॥ गाहरजिनलावहुगोकु
लपाई ॥ तुमहिविनाहमहेहे

व्याकुलनंदपतिकरिवतराइ
अपनोईरषानुरतनंगायौदियौ
नरतपलभाई ॥ अपनेअंगआ-
भूषनकरिकरिआउनहिंपहि
राई ॥ अपनोमुकटपीतांवरअ
पनोदैनसवैसषदाई ॥ सूरस्या
मनहूपउपगासुतभगपदपक
वचाई ॥ १२ ॥ ५३ ॥ विहागडा ॥ स्या
मकरपातीलिषीवनाइनंदवा
वासोंविनयजोरकरओरश्वा-
सोदासाइ ॥ गोपीग्वालसषा
सवहूनसोंमिलियोकठलगा
ई ॥ औरोवोषनातिनरजेहेविन
सोंपीनमनाइं ॥ सूरजप्रभुम

नखौरैपहकहिप्रेमहिलेलहा।

छाई॥ १२॥५४॥ विहागडा॥ उपग

सुनहानदईहरियाती॥ पदक

हियोजसमतिमैयासौनहिवि

सरनदिनराती॥ कहनकहाव

सदेवदेवकीनसकोहसहेजा

पे॥ कंसत्रासतिसुमनहीजान

कैअनमैंराषिद्धराप॥ कहेवना

रकोटकोऊवानेकहीवलरा

मकन्हाई॥ सुरकानकरकैदि

नकछुनमैंवहुरमिलेगेआई॥

१२॥५५॥ रागमलार॥ ऊधोइतनो।

कहियोजाइ॥ हमआवैगेदो

ऊमैयामैयाजिनअकुलाई॥

याकोविलगवहुतहमसामैं
नवकहिपठवैाधाई ॥ वहुगन
हमकोंकहांविसरनहैवडेवि
येपपप्पाइ ॥ अरुनवमिलोंने
हवावामैंनवकहियोसमुका
इ ॥ तोलोंहषीहोननहीपावे-
धौरीधूमरगाइ ॥ नरषिरहोंअ
नेकभांनसषनहपिरह्योनर्भ
इ ॥ सूरदासमासैदेषोव्रजवासि-
ननवहीहिपोसिराई ॥ १२ ॥ २८
असावरी ॥ मोरीहोनीमोननवी
कौंमिलऊसलानकपेरो ॥ वा
वानेहरियालागनकहिअनउ
नचरनगहेगो ॥ जादिनतेंमधु

वनहमश्रायेसोधनहीनमली।
नो। हेहैसोहकहौगोहितकारक
हानिहरविनकीनो॥ यहकहि
यौवलरामस्यामश्रवश्रावहि
गेहोडुभाई॥ सूरकरमकेरेष।
मिटैनहियहहिपोजडुरार्इ
१२॥५०॥रागकेदारा॥ विधिनाथ
हलिष्यौसंजोग॥ कहांतेमथु
पुरश्रायोनमोमाषनभोग॥
कहांवैव्रजकेसषासवकहा।
मघुरालोभा। देवकीवसुदेव
सुतसुनजननीकरहेसोग॥
रोहनीमानाकृपाकरउछेगले
नीगोद॥ सूरश्रीमुषयहवचन

स्म
स्त
३८

37

८

कहिलिषपठायोजोग॥१३॥५

विहागरा॥ऊधोजानतञ्जनहिसु
ने॥देवकीवसुदेवसुनिकैसु
दयहेनगने॥आपुसोपातीलि
षीकहियनंजसुमतिनेह॥
सुतहमारेपालपठपेञ्जतिदि
यौञ्जानंद॥आकरिमिलजान
कबहुनिस्यामञ्जरुबलराम
यहैकहतपठाइदेहोनवहि
नमविश्राम॥वालसुषसव
तमहिलूटेमोहुमिलेकुमार
सूरयहउपकारतुमतेकहत
वारंवार॥१२॥५९॥रागगोडी॥
पातीलिषऊधोकरदीनी॥

नेवहूनसोंदेहितकरदीजोंहम्।
नतपगासतलीनी ॥ सुषहिवच
नकहिहेनननावोंनमरोहि
तहमारे ॥ बालकलषिपठये।
नृपघरनेनमऊनिपालनहारे।
ऊवनासमपेजानवनऊथोम
हलहिलियोउलाई ॥ आउन।
पानीलिषिराधाकोंगोपिन।
सहितभलाई ॥ मोकोंनमम्र
पगानलगावनकृपाभईमत
पास ॥ ऊकतिकहामोपरम्र
नवारीमनहूनसूरऊदास ॥ २२
रागमलार ॥ हमपरकाहेंकुकन
वजनारीसांकेमांगमहीका।

सू.
सा
८५
38

हकेशंभुकेरूपानिरारी॥ श्र
वनालिषोसमसवनकोंश्रीरक
रीमनुहारी॥ हैंनोदासीकेंस
रारकेदेषोहदैविचारी॥ फल
न्मधुमेंकटुनोंमरीलैजलषा
रीझारी॥ जवबहपरीवनुरकेपा
लैबाजननपासनभईअधिक
री॥ सूरदासकरुणामयके
मनअपनेहाथसंवारे॥ ३९
रागगौरी॥ ऊधोअजहिमाहूपा
लागो॥ यहपानीराधेकोंदी
नोयहमैंनुमसोंमांगो॥ गारी
देहग्यानउरिमोकोंमनननरह
नयहवानी॥ मोपरसिपा

नकाहूकौंब्रजहिस्यामकौं-
नराषौं॥ लरकाईनेवांधतिन
ह्रमतिकहूंऐसोमाषनचाषौ
रनलैसवैहून्तराहूतीतुमसदि
नसुनतावृषभान॥ सूरस्यामव
ह्रौब्रनमेनेहैसुसेभयेसुजान॥
१३॥९१॥धनासिरी॥ ऊधोयहदा
धासोकहियो॥ जैसीकृपास्या
ममहिकीनीआपुकारनसोर
हियो॥ मोपैरिसपावनविन-
कारनमैंजुनिहारीदासी॥
तुमहीमननमैंगुनधौदेषोवि
ननपपायोकांसी॥ कहांश्री
मकीनमथुरांधंगनमैंतुमी

सू॰
सा
१८

34

सरिकीतीही ॥ सूरनप्रभुकों
यहिनव्रकियैकौंनउहोलीना
ही ॥ १२ ॥ ९३ ॥ रागविलावल ॥ नव-
ऊधौंहरिनिकटबुलायै ॥ लि
षिपातीदोऊहाथदईनवमु-
षतेवचनसुनाइ ॥ व्रनवासी
जाचिंतनारिनरनलघलहु-
मवनपात ॥ मोजिहिविधिता
सौंनेसीविधिव्रसपरसऊस
रात ॥ जोसुषस्यामसंगमेंहेंने
पायेंसोत्रिभवकहूंनाही ॥
सूरनप्रभुहेंसोहम्रापनीसमु
झतहेकोंनाही ॥ १२ ॥ ९४ ॥
रागसारंग ॥ पहिलेप्रनामनंदरा-

राइसों॥नाथाछैमेरापालाग
नकहियौजसमतिमांईसों॥
एकवारतमवरसानैल्यांजा
इसवैसुधिलीजो॥कहिवृष
भानमहरसोमेरासमाचार
सवदीजो॥मीदामाश्रुहसव
ग्वालनिसौंमेरीकोनोभेटौ।
करिसमाधानतीकीविधि
कौकौमाथ्यानैहो॥उपोत्रि
सुषहिंसंदेससुनाइसवनकौं
दिनदिनकोउषमेटो॥मित्र
एकवनवसतहमारेतोहिमि
लतसुषपैहो॥कहिकरिस
माधानतीकीविधिकोकौ

सू
सा
५
40

मायोनैहौं॥ अपोनिनतमम
वनकुंनमैहैनहूंकेतरुभारे॥
ह्वेंदावनमनरहतनिरंतरक
हनहोतनिनारे॥ ऊधोमोसूम
काईप्रगटकारअपनीमनकी
वेनी॥ सूरदासस्वामीमेछु॥
लसौंकहोसकलव्रजपीनी
॥२॥८५॥रागसोरठ॥ हलधरकहत
प्रीतजसुमतिकी॥ कह्यारो॥
हिनीजननीपावै॥ वहवोलि
नप्रतेहैनही॥ एकदिवसह
रिषेलतमोसोंझगरोकीनो
पेलि॥ मोकोंदोरकोंरकरि
लीनोरहिदीनोकरिठेलि॥

नेदवावानवकान्गोदकाषी
नलागेमोकों॥ सूरस्यामना
ल्होतेरोभैयाछोहनग्रावन॥
नाकौं॥ १३॥ ९९॥ रामकली॥ नसु॥
मतिकरनमोमोंहेत॥ सुनोऊ
धौकदतनवेनेननभरिभरिले
त॥ इहूनिकेऊसलानकहियो
तैमेभूलतनांहि स्यामहलध॥
तनमारेग्रोरकेनकहाई॥ ग्राई
नमकोंधारमिहकछुकका॥
नग्रोर॥ सूरदमकोंनमविना
सूषकोंनहीकहाहैरे॥ १३॥ ९८॥
रामकली॥ कहीहरिऊधेंसोबन
प्रीत॥ मोलेचलयोजोगमापोत्र

सू
सा
ध

41

कौनहोकरनविपरीन॥नरनय्रे
कभतिराधहरिबतायोविनय॥
कहोकरनाहि॥विरहजंजा॥
लमेटगोपिमकोनयावहूक
जुनिवाहि॥लेरजचरनसीसवे
वनकरियजहरिसौदिनहैक॥
सूरजुप्रभश्रीमुषकहिपठव
ननमवितरहोनेनेक॥१२॥९८
विलावल॥ऊधोचलेस्यामयाय
सलैब्रजनारिनकोजोगकहो
हरिकेमनयहप्रेमलहेगोव॥
हूतोजियअभिमानगह्यो॥
आतुरचलेसोहाथमनकाके
हरिमहंतनकोपदैदियो॥सो

रनवैहेस्यामसरवभूषनजाति
पैरनंदसौंवनवियो॥ जुवती
कहाल्लानसमुफैगीगारववव
नकरह्लनचलेयो॥ सरल्लानको
मानवछायेमधुवनकोमार
गाहिमिलैयौ॥ २॥ ६९॥ रागकेदा
रा॥ नवहिचलेऊधोमधुवनकें
गोपीमनहिंननाइगाई॥ वार
वारआदिलागेश्रवननकछु
इषकछुजियहरषभई॥ म
हंनहंकागउरावनलागोहरि
आवनउडिजाननहीं॥ समाचा
रकहिनवैमनावनउडिवैठि
नसनिश्रननकहीं॥ सखीपर

स्र
सा
५२

42

सपरयहकहिवातेग्रानसाम
कोग्रावननहे॥किधौमरवन।
कोउपरप्रभुपठयोग्रानषबर
कैणावननहे॥१२॥ ॥बनग्रागम
न॥यनासिरी॥ग्रगिवनदेषन।
कोसवधाप॥हरषिउमंगगाव
सपरशकुनसामउलहग्रव।
ग्राप॥सोइंउजापनासोईजार॥
षवठिउमिथाप॥पीतवसन
निकरनकेउलकविवेसरसा
नवनाप॥ग्राइनिकटपहिचा
तिउयोनेननलदनलक्षाप॥
सरवडीदरसनकाग्रसानव
नविरहजनाप॥१३॥ ॥नसोदा

बचनधनासिरी ॥ ऊधो आजु हम मे भ-
ये बड भागे ॥ जिन अंषियान म
स्याम बिलोके तिन आपि निर
मल लागे ॥ जैसे सुपन सुगांधले-
आवत पवन मधु पै अनुरागे ॥
अति आनंद बढौ अंग अंग मै-
पैहो हौ नो सुष मागे ॥ ज्यौ दू-
पन मै हैरा निरषन दृष्टिन है
नं हू जागे ॥ जैसे तूर हम मिले सा-
वे बिरह बिथा नन भागे ॥ ३ ॥
रागसोरठ ॥ कब हू सुधि करन गो-
पाल हमारे ॥ एकुतनंद बबाउ
धो मैं अक्रून समन न महू नारी ॥
बहु नै बकपरो अनुजाने कहा-

सू
सा
४२

43

श्रवकेपछ्तानें॥ वामदेवब
रभीनरश्रायेहमश्रहीरकर।
नाने॥ यहिलेभाररनकहेरोंहोंर
मसोंसोसुषत्रषगायोभल॥
सूरदासस्वामीकीविछुरन।
मरियतहेयहिमूल॥३॥९३॥
ऊधोवचन॥धनासिरी॥ कहोका
नूसनिजसुमतिमेया॥ श्रावहि
गेदिनचारपांचमेहलियेदाऊ
भेया॥ वसीवेनुविषानदसारो
कहेश्रवेरसवेरो॥ मतिलेजाई
चुराईराधिकाकछुविलोना
मेरो॥ श्रानकियोकलेऊकव
हूसोकनचोषीगाई॥ जादिन

नेहमतनमतनमसोंविछुरेकाहू
नकह्योकान्हाई॥ कहांकहैं
कछुकहतनआवैजसमति
नीजुषपायो॥ अवसुनियनव
सुदेवकीकहतनहमारोजायो
कहियेकहैंनदवावासोंवहू
ननिदरमनकीनों॥ सूरस्या
मपहूंचायमधुपुरीवहुरनफे
रोदीनो॥ १२॥ ७४॥ नंदवचन॥ राग-
सोरठ॥ चूकपरीहरिकेसीवका
ई॥ यहअपराधकहांलोंवर
नौंकहिकहिनंदमहरिपछि
ताई॥ कोमलचरनकमलके
टकमैंउनपेगाइचराई॥ रंचक

सु
सा
ष्ष
44

दीपिकोकाम्लनसुथावोधो
ऊषललाई॥ सुरपतिकोधजा
निनिचयुपनेवरूनफोसने
मुहिमुकराई॥ अपनेतनथ
रलोभकेसम्भ्रयागोकरिदी
नेदोकुभाई॥ निकटनवसन
कचहूंनमिलयावनदनेसान
मेरेनाइताई॥ सुरअनेलोना
तैमानतप्रमसहिनकैरनेर
इहाई॥ ६॥ ०५॥ नसुमतिवचन॥
ऊधोहमश्रेसीनहीनानी॥
सुतकेहेतमर्मसनहिनामोउ
गटीसारंगपानी॥ निसवास
रछतिपेसोलाऊचालकली॥

लागाऊं॥ असीकहूभागगरान
हैवहूरोगोदषिलाऊं॥ कोआ
वगालसषासगलीनेसोफ
समेअ्जनप्रावे॥ कोअवबोरबो
वयिषहैमेयाकोनवुलावे॥
फाटतनहीवज्रकीछातीहरि
वियोगकोंमसहियें॥ सूरदास
प्रवनंदनंदनविनकहोकोंन
विधिरहियें॥ ३॥ ०८॥ अथोववन॥
धनासिरी॥ नातविनाकहवैस्र॥
षनाही॥ घटघटव्यापकदार॥
अगनज्यौंसदावसनहरमाही
निरगुनछ्वासिमगनकोदोर॥
नसोयोकहोकिहिमाही॥ न

सभसौंजिननिकटनछूटैसौ
तिनतेपरछ्वातो॥ तिहिनेक
हीकौनसषपायौंनेप्रवलौ
प्रवगाही॥ सूरदासप्रेसेक
लागनसौंगुरुविनहैवाही॥२१

जसोधावचनऊधोप्रती॥ रागकेदारा॥
ऐसोजोगनहमपेहोई॥ सुनि
कैवचनतुमारेऊधोनैनाआव
नरोई॥ कंनलकुंडलमुकुटऊं
डलछविरहीजोचितमेंपोई॥
सूरजप्रभुविनप्रानरहतनही
कोटकरोकिनकोई॥२२॥२८॥

रागगौरी॥ ऊधोपालागतहौंक
हियोस्यामहिइतनीवात ५

स
सा॰
५५

रतनीहरवनकौंगइहांउंअपनी
जननीतात॥जातिनतेमधुपु
रीसिधारस्यामसनोहरगात
नातिनतेमेरेनैनअपपीहाद
रसनकौंअकुलात॥नहांबे
लनकीठोरतनुमरीनंददेषिप
छतात॥जोकवहूंइहिंजात
षरिकलोंगाइडुहावनप्रात
देषिअौरनिकेलरकाप्रानति
कसमहींजात॥सूरदासवहू
रोकवदेषोंकोमलकरदधि
षात॥३॥२९॥रागमलार॥नः
वनममेरेकाहेआप॥मधुरा
कौनवसेनंदनंदनजोपेका

सू
सा
५९

नूदेवकीजाये॥ हृयदहीका।
हेकोचोर्योंकाहेकोंवनवक्र
छाय॥ काहेकोगोवरधनध
रकरवकरनफांसनेनंदकृश
प॥ अचअरिष्टकालीफनक
ठौविषनलनेसवसषानि।
वाये॥ सूरदासलोगनकेफो
रेकाहेहरिअवहोनपराए॥
१३॥ ॥ धनासिरी॥ मेरेकान्हक
मलदललोचन॥ अवकीवे
रवहुरवजनपावहुरहतियहै
जियसोचनि॥ यहमेरेनयव
हुनलामावेहीटेषनिरहिहौं
गाइचरावनभलिस्यामकोंव

हरनिकेवङ्घकमाषनकी
चोरी॥अपनीनियतनेनभ
टिदोहरिहलधरकीचोरी
दिवमहारमिलिज्यइसोवरे
कहियोपहेमंटेसो॥षकहूं
वेरयानमषटीजैसहरनिटा
रयुदेसो॥५॥८२॥धनासिरी॥
ऊधोअवनोकाजनयहे जि
धनानोअकह्यदेविचारोहम
अनहरीअरुचपेहे॥छाहो
जाइकोनकोछोटानवकः
होउनरदेहे॥षायोषेलोसंग
हमारेनाकोकहावनेहे॥गो
कुलअरुमथुराकेवासीक

सू
सा
४०

४७

लोकहठकेहैं॥ अवहमलिषि
पठियोबारनतेहैहाहेपनिना
हीपैहैं॥ इहिमाइनचरिबोन
छायोहैनानहिलालवेरैहैं
इननैपरनहिमिलनसुरथ्थ
फिरिपाछैनैहैं॥ १३॥८२॥ राग
कल्यान॥ ऊधोइननीकहियो
जाइ॥ अतिकृसगातमईनम
हीविनुपरमदुषारीगाईं॥ ज
लसमूहवरषतिअषियनले
लेहूंकनतनाईं॥ जेहेनहुंगऊउ
हनतमकीनोमंथतिसोई।
सोईठाइ॥ परमविचारकहै
अवतमरैहमअतिवाऊल

दीन॥मानोमहरकाढिडारहै। पानलमैंनेमीन॥२॥८२॥राग सारंग॥इनेजितमकाहेकोकिये॥अपनेजानिजानिनंदनवहूतभयिनिनेराखिलिये॥अ...ववकहुमभवकनवंधनेन...आलजीतिदावाग्रिपिये॥इ...इमानमेछौंगिरिकरधरननखलकिआवंटदिये॥विछुरनकीहवातजानीववनमारितिअनवारदनिये॥सूरदासप्रनहूंउढिलालचसवैसहिनकठिनहिये॥२॥८४॥सारंग॥ यहक्रमयाजोतवहीकरते॥

सू
सा
५८
48

तौकरतनहनेजीवतनसबलोक
नगोकुलकेलोगउबरते॥ तृ
नावर्तेअरुबकीबकासुरक
हौकौंविधिमरते॥ भ्रमिषव-
लवऔरदावानलसबसष-
नाउबरते॥ सबसुरिहकेसीवृ
षभासुरबलनईकौंटरते॥
सूरदासप्रभोषकहांहांजो-
ऐसीमनधरते॥२॥८५॥ऊधो
वचन॥सारंग॥धन्यनंदधनिजस
मतिरानी॥धनिसवालधनि
धनिगोपीजननिजिनगोदलि
वायेसारंगपानी॥ धन्यहतनभ
मधमहंदावनजहांसबविना-

सीश्राप ॥ पतिनिपतिनिश्रानुसरा-
हमहूयनितमसवदेषपाप ॥
१२ ॥ ८८ ॥ गोपिकावचन ॥ रागसारंग
भलीवानसुनियतहैश्रानु ॥
कोऊकमलनैनपठयौहैनव
वनाईश्रपनेमोंसान ॥ एछत
सषाकहेहैकैसेहैश्रवनारीक
रनैकहूकान ॥ कंसमारिव
सुदेवचरश्रायेउग्रसेनकोदी
नौराज ॥ राजाभयेकहांहैय-
हसुरभीसंगविनगोपस-
माज ॥ श्रवसुविसरकरैंको
टिकवनमेंनाहिंवसनवजना
ज ॥ १२ ॥ ८९ ॥ श्रीराधिकाभगुनविचारि

सू
सा ४९

49

राग सारंग ॥ आजु कोऊ नीकी-
बात सुनावै ॥ कै मधुबन नें नं-
दलाल लै कें कोऊ इन पठावै
भोग पकवहूं दिस नेंइक कान
लागि कै गावै ॥ ब्रज मभा षाऊ
वै चढि चढि ऐंगगा सुगन-
ननावै ॥ भामिनि एक सषीन
न विन यौ नैन नीर भरि आवै ॥
सूरदास कोऊ वन ऐसो जो व्र
जनाथ मिलावै ॥ २२ ॥ ८८ ॥ गो
पक परसपर वचन ॥ राग मारू ॥ देषो
नेंद दुलार घर हांतो ॥ बहुरि स-
षी सुफलक सुत आयो प-
हौं संदेह स्यनि गातो ॥

ग्यानहमारेतबहीलैगयोसु॰
बकिहिकारनआयो॥ मैंना
नीयहबानसुनतप्रभुकृपा॰
करनउठिधायो॥ इननीकहू
नआइगयेऊधोनिहिछिनद
रसनदीनो॥ तबपहिचानस
षाहरिकोपरमसुचितम
नकीनो तबपरनामकियो
अतिहरषमैंऔरसबनकरा॰
नोरे॥ सुनियतहेतेसोईदेषे॰
परमसुचितअतिभोरे॥ तुम॰
रोदरपाईहमसुपनोजनम॰
सुफलकरमान्यो॥ सुरऊयो
मिलनभयोसुषमोरूषपायो

स.
सा.
५९

50

पानौ ॥ ३ ॥ ८ ॥ रागमलार ॥ हैं को
ऊवैसीयेप्रभुहार ॥ मधुवनतें।
वैसावनसषीरीदेषौनैनपा।
सार ॥ वैसोरंगऊदमनोचरके
उलपीतवसनविकारि ॥ वैस
ईवानकहतिसारथसोव्रज।
मनवाहपसारि ॥ केनकवीच
किधौहरिअंतरमनवीनेदिन
चारि ॥ सूरस्यामविनयोनल।
फनहैजनोमीनविनवारि ॥ ५
९ ॥ रागअसावरी ॥ आजुवनस्या
मकीअनुहार ॥ आवनउनप
उमगासोदेषिरूपकीपारि ॥ ई
इधनुषसीउरवनिमालाचित्र

वह्निविन्नहरै ॥ मनुहूलयरम्रु·
ग्रनमोहनकश्रवननणावूतरै
गईवलनिकटनदेपेमोहन·
मनकियेवलिहारि ॥ सूरस
कलगनस्नमरस्यामकेविक
लभईव्रनवारि ॥ ३ ॥ ९५ ॥ रागध
नासिरी ॥ आजव्रजकोऊआयो
है ॥ कियोवहैअक्रूरक्रूरहैनि
यनआनिरहियांयोहै ॥ ताको
रथराठेमैंदेष्योजमकोसा
थवनायाहै ॥ कियोकरिक्रु
पाइषनदीनपरप्रभुसंदेसप
ठयोहै ॥ चलेसिमरसवदे·
षनकारनऊयोदरसदिषायो

म
सा
५१
51

है॥नवपहिचानजानिप्रभुको
भूनकमलजोरिसिरनायोहै
हरिहैकमलकमलहोप्रवत
मकमललोगसवभायोहै॥
हैवहनमकमलस्वजुप्रभु
करिसुदृष्टिनेछायोहै॥२५९
अमावरी॥त्रिभंगीछंद॥हरिस्थरतन
नहीसमनूपदिखावै॥जिहि
मगहसगयोतिहिमतनें
आवै॥ तुहिमगतेआवैसषि
नवलावैदेषौआनिविचारी
मुकटकुंडलतनपीनवसन
कोझगोविंदकीप्रजुरीवेईभूष
ननिरषनलीगीनवलगनेरआयो

ह्यो नियजानी अकुलानी कु
समे हेम पठाये ॥ ॥ चलौ चलै
अछे कछु वाते कहि कहि ह्र
यो हरि ज्ञ सवाने ॥ कहि ह्र पारा
नै सो चे वाते आवन कह्यो कन
ही ॥ कैद्यव वाने राज समाने अ
वधि नह मनम्हा ही ॥ हाठ
नन का पै हेरै ख्वा कै वार वार
अकुला ही ॥ अव नियकपट
कछु जिन राखौ अछे सो हदि
वाही ॥ २ ॥ कह्यो ऊधो नमको
वन आये ॥ नवहम कह्यो हम
कुल पठाये ॥ कुल पठाय नव
वन आइ कहन मनो हरवानी

मोहनमायापीरनदुषायासब॰
घटअंतनिवासी॥४॥उधौनिन
कह्यौअगुनकेगुनगाईं॥मनिजि
यअनषवट्ठौतिसकहीनजाईं
अनषवट्ठौअतिगुनिह्यौलो
वनववनगाईं॥दासीकुवजानी
वकीसंगतकौनवेदमनपाईं
मनोसंदेसोननोसंदेसोनम॰
होवनरसयानी॥गोपसषिद्दि
यमैनिनताषोअवगातिहैअवि
नासी॥नमहीभलीकहनहा
आपहमकोभलीसयाने॥
मोकछुवरुदेषियतनैननि
सोकिनमनहीमाने॥५॥

नाहीसोक्योंनहीमनमानै॥गो
विंदकेवानेसवकोऊजानै॥स
वकोऊजानैक्योंमनमानैश्रव
नकाहूकहिआवै॥जोकहूकऊ
नाकेमननभावैसोईनाचनचा
वै॥वाकोंमाइडषमसहमकों
करमरेषकोनानै॥गोरसहेषि
जुराष्योगाहकविधनाकीभा
तिश्रानै॥५॥ऊथोकमलनैनसी
किहियोजाई॥एकवेरवनदेहू
दिषाई॥जिहिकीप्रीतनिरनर
मनकोसमझावै॥संकरब्र
ह्मसेषअरुसारपतिकोऊदरस
ननहिपावै॥वेसिपैरासविला

सू
सा
५३

53

सकुलाहलचरचरसाषनहरि।
यै॥ सूरदासप्रभुमिलनवहुरनस
षविरहिस्वासकौनरिधै॥ ३५

३

कुधोवन॥ रागसारंग॥ गोपीमनोह
रिकसराति॥ केसनृपकोमारि
कोरीआपनीपितमात॥ वहु
तिविधिमनुहारिकरिदियौउ
ग्रसैनहिराज॥ नगरलोगसुषी
वसतभएसवसरनकेकाज॥
मोहियपातीदईलिषकहौ।
कछुकसंदेस॥ सूरनिर्गुनव्र
ह्मपतिउरनतौसकलउपदेस

५४

गोपिकावचनपरस्पर॥ विलावल॥ पा
तीमधुवनतीआई॥ ऊधोहरि

कीपरमराने हीनाकी हाथ-
पढाई ॥ कोउ पठति कोउ प
रति नैन परहा है कैठ लगाई
कोउ पूछति फिरि फिरि ऊधौ
कौं आपुन लिषी कन्हाई ॥ वहू
रौ हरि फिरि ऊधो कैंन वउन
वाचसुनाई ॥ मन मैं ध्यान हा-
मारे राषौ सूर सदा सुषदाई
॥ ३ ॥ ९५ ॥ राग सारंग ॥ पाती मधु
वन हीते आई ॥ सुंदर स्याम-
का आपु लिष पठै आइ सुनो री
माई ॥ अपने अपने ग्रह ते नि-
कसी लैले कैंठ लगाई ॥ कहा
करै सुने गोकुल हम दहीं विन

सू
सा
५४

कहूनसहाई॥नैननिनीर-
रटनञ्जनसदरिप्रेमतृषान
बुझाई॥सूरदासस्वामीसगु
णवससुधिहमरीबिसराई
॥३॥१९॥मला॥कोऊब्रजबां-
चननाहीपाती॥कृनलिषि
लिषिपठवतनंदनंदनकठि
नविरहकीकाती॥नैनसज-
लकागदअतिकोमलकर-
अंगुरीअतिताती॥परसेंजरेवि
लोकैभीजेउहूभांतिदुषछाती
कोबांचैपअक्षरमधुकरदिन
मदनसरछाती॥सबसुषलैगए
स्यामम्मनोहरहमकोदुषदेथाती

धनासि

लिषीब्रजनाथकीपटछाप॥
ऊधोबाचैंकितनसीसपरवीव
नआवैताप॥नवननप्रीतननेद
नैदनकीविरहज्वरभयौसंताप॥
मानैंकहांजोगग्यानध्यानअवि
गतअगमअमाप॥हरिआगेंऊ
विनाअधिकारीहुतिपन।
ताकोदाप॥ताहीकौनसिषा
वहुसरज्ञुकननकीनेव्रजथा।
प॥१२॥९८॥रागसोरठ॥लिष।
लिषषटवनलागेकागर॥
मदनगोपालप्रगटदेषैविन
कैसैंवधेमननागरि॥ऊधो
जोगकहालैगकहालैकी।

नैनलवित्रसकौसागर॥स
निरैमधुपकोवकेवरलैकौ
देहूवैनागर॥मधुपसदेसोवि
नैदैसतिपैमधुवनस्यामउ
जागर॥सूरदासप्रभुविन॰
कैनाघैननजोगवनकोआ
गर॥१॥११॥रागनट॥ऊधोत
मैगोपालउडाई॥कवहूका
रनसषिनिकोकिथौंशीन
विसराई॥हमसवचलाग्रजा
ग्रलपमनवरनननषीनलगी
ई॥मोईवानकहौंकिनसा॰
वीढ्यारोउसहउस्यारी॥कहू
कवहरीग्रावहिगेऊधोक

रैकेलिषपठाई ॥ काहूकृपा
ननसूरस्यामनैवारकदरस-
दिषाई ॥ १ ॥ ४ ॥ रागमलार ॥ ऊ
धौकहाँमधुवनकीरीत ॥
राजाह्वैनंदनाथनम्मारेक-
हावलाईलीन ॥ निसकरक
रमैरहेनैमदासरिसीनप
रवापवनकहोनहिमानन
कियोसीजनपटपीन ॥ कुब-
जाकानकंसकोमाहोभ
ईनिरनरेप्रीत ॥ सूरदासब-
नभलौनमानननहांआह
नहीगीन ॥ ४ ॥ १ ॥ धनासिरी ॥
कहाँभयोहरिमथुरागए ॥

कहूंऊधोकैसेसवविपावनतेना

हैभोतनभए॥ अहोप्रागप्रतिप्रेम

प्रीतनउहांनिजनेमनए॥ हां

कहियतहैंगानकानवसहो

करवैनलए॥ कहांगायपहों

सफलकसवनपहठगठाठ

ठए॥ कैसेकानूरहितगोकुल

बिनलोगानकासिषए॥ राजा

गानवसतघरप्रपनेमाघेक

उटये॥ चिरजीवौसूवमूरनं

दसतजीजनसुषचिनपे॥ ५

रागसारंग॥ हमारेबोलवचनए

रनीति॥ सुनिऊधोहमैनाही

जानीनमरेगांवकेरीति॥ ह

५८

56

मेरोप्रीतमसतमतमनोलैगा
एआवनकहिगएकैंसहिनी
ती॥ नमेरोबोलनकोऊपती
नैमैप्रभुसवरकीभीत॥ आव
नअवधिवहीहरिहमसेंसो
इगईबिनीति॥ सूरदासप्रभु
मिलैकृपाकरिसवमरिप्रान
नप्रीत॥ ४ ॥ र॥ धनासिरी॥ क
हियतकुवनाकुसनिवानी॥
कुवतप्रटपटीचालगईमि
लिनवसनकंचुकीसानी॥
मिलीआगेदसाजैदेवंदन
दुगवानी॥ पायोनरतसहू
गसवनिकोंविमलप्रीति३

पानी॥सुफलभयोपिछलो
नपकीनौदेषिस्वरूपकामस
त्रिलानी॥जगकोनगकोअ
भुवसकियेसुरसनिसक
लसुहागिनिसिवटिगानी
सारंग॥सुनियतवाननीतपरि
आय॥संभुफीवानकहनम
धुकरकीसमाचारसवपाय
इकअतिचतुरहूनेआगेइश्रो
रंगयपटिआप॥वनीतुडना
नीनोअनकीनोगसंदेसपठ
प॥अवअपनेमनफेरवाइहे
चलननहहूनेआय॥पकोअ
नीनकोरोकपोओरअनीन

छुडाय ॥ राजधर्म तो यहै सूर जो
प्रजा हि संताप ॥ ८५ ॥ ५ ॥ राग नट ॥
कथो नैकु स्याम सुंदरि को अब न
निसाति ॥ कांचन बानक धरक
ऋसम समुझु ःषगुन ॥ श्रीगुनर्न
मधुन हि को स्वन न गो हन त्रिजा
इव सत वन कानन ॥ परमहंस
नेह गि दे षि यत है श्राव न भिक्षा
में मागन ॥ बालक पित्र को राड्-
स चाहौं लोक लाज रघुराई ॥
सूपनखा की नाक नि पाती ति
ष व समहै रसुरारी ॥ बलि सों वा
धपताल पठायो कीन्न नवना
ई ॥ सूरश्री निजाने मैं हरि की ॥

सू
सा
५८
58

कहूतननजीनहिमाई॥ध्रु॥९॥

रागसारंग ऊधौयनननमरौव्यौ
हार॥यनिवैठाऊऊधनिनम
सेवकथनहूमपरमनहार॥
कारदूधूबवन्नरलगावहूव
टकौकियोवार॥हमकौ।
जोगभोगऊवनाकौअसी
मुकतपार॥नमहगिपठैवा
नरीविधालिपटकपटवट
सार॥पकरौसाहवारकौ।
छाडेतुगलनकोशनवार॥
सुकिनधरैनतारेऊधोह
मजनवारिगवार॥सूरदा
ससेमेकैंगावहीअगुपयम

पकार॥१४॥१ रागगवट॥का
धौगोपालकहांकेवासीकै
मेहैंपरहिवान॥तमकौंलाग
कौंनकेसिषयेइहांकहन
हांआलिमध्यमवेनधुनिक
रनहरनमनरागनीहरम
धुनिकहआथवंसविसवा
सनहननविषमसरनानि
ग्रपनेवोरभौरउहिवैहनि॥
कमलभलोरसनानि॥हप
नछानासिकानिपानीसरस
रागहवान॥१४॥१०॥मला॥
विलसिहमसानेऊधौका
को॥तलफनरहेवसदेवद

सू
सा
५५

59

वकीनोंहितमानपिताकैं
काकोमानपिताकोकाको
हयपियौहरिनाको॥ नंदजा
सीदलाइलजापनोहमयौह
रिनाको॥ कहियोजाइवनाइ
वैननीइहमेदेसव्रजलाको
सूरजस्यामसीनहैनासोंकु
टिलसीनकुवनाको॥५०॥
९॥सोरठा॥ जधौभीतनईनिनसी
ही॥ श्रापुननाइमधुपुरीछा
एहमननमोगावसीही॥ का
टेऊपरलोनलगावनलिषि
लिपठवनचीठी सूरदासप्रभु
तुमरेदरसबिनुनीवरिसूर

ग्रीठी ॥ ४ ॥ १ ॥ रागसारंग ॥ श्र
रीप्रकारद्वारगृहगृहनमम
नीसषीइकनेगगप्रायो ॥ पव
नसथावनमवनकुंजवनरा
मालगुपालपटायो ॥ आमन
वेधमोप्रेमप्रवधमईनिनेक
हाहिनलायो ॥ कनकवेलि
कामिनिब्रनवालाजोगप्र
सिनिदैवेकोंयायो ॥ भवभ
यहरनप्रसरमारनहितका
रनकान्हमयुरीछायो ॥ ना
दवमैपकोब्रननीहीकाहेउ
लटेनमविथायो ॥ सिथल
सामथामसमैवैठेप्रतिप्रयिकै

सू
सा
९.

60

रतनायौ ॥ सुरविसारीप्रीत-
सांवरे भलीवनरतानगानरे
सायौ ॥ ४ ॥ ॥ रागमलार ॥ को
ऊ माई है मधुवनतें आयौ ॥ स
षीसखिमिटिसुनिहोनमषिन
देहिनकरकानूपठायौ ॥ जो
मोहनविछुरेयाव्रजमैंतेहि
वसइषपायौ ॥ सोइनकमल
नैनकरुणामयहिरहैमा-
रूवनायौ ॥ जाकौंनीगीनन-
नकरनहेंसानसुकरवसना
यौ ॥ सोइनपरमउदारमवी-
थिनकौंफवहायौ ॥ श्रवणप
लआनन्नस्रववलनकौंव्यापक

भ्रगहगहायो ॥ भनिसुरमुनि
होनश्रवनसुषनेनननिगमन
गायो ॥ ४ ॥ २ ॥ रागमल्हार ॥ ऊधोजो
कोऊपाननफेरवनावै ॥ नऊ
नेदनेदनविनमधुकरग्रोरनउ
रमैंश्रावे ॥ जोपाननकीतवा
काटकरिलेकेउंडमिसानै ॥
सुपैउडंगासुपतसुरनिकसे
कानूकानूहीवाने ॥ निकसैं
श्रानपरेजिहिमाटीडूमला
गेतिहिठाऊ ॥ श्रवसुनिसरप
उफलसाषालेनउठेहूरिनाउ
रागनट ॥ ऊधोनाहनाहुनम
जाने जेसेहरिनेसेननमसेवा

१२

स्त
सा
८१

कवचनवनरइहाने॥ निरगुन।
नेगकहातमपायोकायैसीष
सियाने॥ सोउपदेसदेहूऊवजा
केगरवभुलाने॥ वसिवसिवंद
नउरपलाचैकोनेइनिवनग्या
ने॥ सरदासकेसीवहग्रवला।
नाकैहाथविकाने॥ ६॥ ४॥ सो
रठ ऊयोकहिसाफिरनकहि
यै॥ जोतमुहसोजुवायोवाहै
सतुवोलेहैरहियैं॥ हमरेगान
नुवातहातैहंन्तुमरेभावेहासी
यानीवनतेमरनभलोहेलैहा
करवनकासी॥ केहरिवैरिकि
यौहेहरोलिषिलिषिनोगपटा

यौ॥ दीनीजारिभस्मकरिडा
रीवहुरिमसानन्नगायौ॥ को
हरिहमकौंग्रानमिलावहु
कैलैनेहैसोद्यु॥ गोपीग्रानन
ननसरजग्रभुदोसत्तमारेमा
ये॥ १४॥ १८॥ गोपिकावचनभौ
रप्रति॥ रागसारंग॥ इहिग्रंतर
भौराइकग्रायो॥ निजसभा
इग्रनसारनिकटहैसंदरमहु
सुनायो॥ मधुबनलागेनाहि
गोपिकाऊधवजानोहुपठायो
कैथोंसरसामसंदेकोंहमें
संदेसोयो॥ १५॥ १९॥ विलावल॥
कहोंकहांतेग्रायेहो॥ लषि

62

यनहैमन्नमानकियेतमजाद
वनाथपठायेहो॥वैसेईव
सनवारनननहैरावैभषनम
निलाईहो॥सावसलेसंगा
आपसियारेअवकापरफि
रिआपेहो॥सनोमधुपरके
मनहोतेसतोनहोलेआप
हैं॥अवपहकौनसयान
कियौजोताकारनउठिधाए
हैं॥मधुवनकीमाननीम
नोहरनहींजाहूनहोधाए
हो॥सूरजहांलौंस्यामगात
हैनानिभलोकारिपापहो॥

सारंग॥पेसेहैकारनकीरीत

मनदैसरवसहूरनपरायोक-
रतकपटकीप्रीत ॥ जोघट्टपट
प्रभुजकेटलमैंवसतनिसाव
तिमानि ॥ तिनकोरेउदेग्रवनत
उरिवैठनफिरलेकरनपहिवा
नि ॥ भवनभयंगपिटारीघार
लोनैसेजननीतान ॥ कुलक
रतनमिटैनहिकवहूंसहज-
उसिभजिजात ॥ कोकिलका
गकुरंगस्यामघनहमैनदेषे-
भावे ॥ सूरसवैसुरुहारस्याम-
केफिरिफिरिसरनकरावे ॥
ॐधोवचन ॥ रागनट ॥ जवलोंहू
दैजानननग्रावे ॥ नवलगासव-

पानीकोउपरीविनविवेकन-
हिपावै॥विनैविचारसुवैसुप-
नेसुसोमैंदेखोजगजोई॥ना
नाटरमध्यजोपावकप्रगट-
मथ्येतेहोई॥तुमहीकहतस
कलव्यापकश्रोरसवनि
नेनेरे॥नषसिषलोंनननरात
निसादिनिकअैसकरतकि
तिसेरे॥सांचीवानसवैवोलत
होंमुषमैमैलेनलसी॥सरस
श्रोषदहमेवतावतपन्नरूप
रसरसी॥ ४॥ १९॥ गोपिकावचन॥
सोरठा॥ ऊधोमोमनअधिक
कठोर॥ विगसनगयोकंम-

कावैलोविछुरतनंदकिसोर

हमतीभलीजलचरीवपुरी

अपनेप्रीतनिवाहै॥ जलतेवि

छुरैरनतनमागेपुनिजलहीं

कोचाहै॥ हमनोप्रीतरेतनहि

मानीनोवजनाथतजी॥ हमरे

प्रेमनेमकेऊधोसवसरीत

लनी॥ अचरनपकसनोहो

सनोहोमधुकरजलविननावे

सरदासप्रभुआवनकहिगा

पिमनविवासकियेवे॥२॥

सोरठ॥ लरकईप्रेमकहौअलि

कसेछूटत॥ कहाकरोवजन

नाथचरितनअंतरगतिलूटत॥

वहविनवनवहवालमनोहरव
हसुसकानमदयुनिगावत॥
वहनषभेदनेंदनेंदनकोवह·
विनोदवनवहनेंआवत॥च
रनकमलकामोहकरतहो
यहंसंदेसमोहिविषलागत
सादासुहिथलकनविल
रनमोहनमूरनमोवतनागत
य नासिरी सुमनतेकेवानकहैं
नोकहोंवकाहूभोगे॥केह
मनानैकेहरीतुमहूरतनोप
वैमांगे॥एकदिनावसीवट
कीरनकंटकगड़िगयो।
पाइ॥कंटकहीसोंकटक।

काहौ अपने मन मन सभाई ॥ एक
दिना विचरन हुंदावन मोहि ना
नाई भूष ॥ पाके फल छुन ट्टियम
नोहर चढि करि पाके रूष ॥ पे
मीट मसीउनके केते मो लेगो
कुल वास ॥ सूरसा मग्र वनि ह्र
भये हो मधुवन कियो निवास
धनासिरी ॥ ऋषि याह रिद्रसन
की भषी ॥ कैसे रही अपविन दे
षस निषो वा ते रूषी ॥ छिन छि
न पल पल रकटक नो वन न रू
हो त है रूषी ॥ अवई जोगा संदे
सो सनि अति अकुलानी दोष
वारि क कव हम अष आति दिषा

सू
सा
६५

65

फेंनो पीय पीय तन पतो ४॥ सूरजो
गनिन नोड बलाव हूरुविसरा-
नासवमोष ॥ ५॥ ९२॥ रागकेदारा
नैननि निपट कठुन ईठानी॥ ना
हिन ते बिछुरे नंदनंदन नाहिन
नैन हिनैं सिरानी॥ पलकलाव
नरहन थानपरिवारेंबाइरा
वनपानी॥ लालगोपाल मिल
रूपोसैंकमहीनकछुवैना-
हिजानी॥ समुकिसमुकियउ
हासामकी अतिनिंदावासा
रैगापानी॥ सूरदासप्रभोहि-
है अतिहरिवानिमनमोहिम
मानी॥ ५॥ ९४॥ रागसारंग॥ वै-

वातेनसुनातीरकी ॥ कबहूं
सुरतकारतहैऊधौहूरगएहमा
रेबीरकी ॥ लैसबबसनसहाडु
मऊपरचढनलबीरकी ॥ देहू
देहूसबसषीपुकारतग्रपिन
गहीबीरकी ॥ कबहूंसुरतक
रहैऊधौंहानहूमोरेहीरकी ॥
दोऊहाथजोरिकरिमामोदो
हीनंदग्रहीरकी ॥ सूरदासप्रभु
घेतरजामीजानबिथापरपीर
की ॥ ४ ॥ ५ ॥ रागगौरी ॥ ऊधौ
कैसेजीवेकमलमेनबिन ॥ न
बनोतनलकलगानइषषावन
सबजुवरषभरिनानपकछिन

सू
सा
९९

66

ज्योंऊनरषैकीउतरीकैंपनैके
माने॥ ज्योंहमविनगुपालभईऊ
धोकहिनपीरकोमानै॥ तुमते
होइकरोमोईऊधोहमअवला
वलहीन॥ म्रवटनदेषहमे-
मीवैंज्योंनलपायेंमीन॥ ४॥
रागमरू॥ हरिविनरहिहिविथ्या-
करिवनरहिहिघत॥ पपीराना
ननहोंऊधोंनानेनमसोंकहि
घत॥ चंदचंदकिरनपावकस
मपलपलहीननरहिहिघत॥ र
ननीनानगननहीनारेननन
कीनिरवहिहिघत॥ वासरहेया
विरहसिंधुकोकोंहूपारनल

हियत ॥ फिरिफिरिपारथ्रवधि
अवलोकततवूइतमोतनगा
हिवैहैयत ॥ मनसावाचाक्रम
सूरप्रभुवातनोनमसोंकहि
यत ॥ ४ ॥ २१ ॥ रागगूजरी ॥ क
हालोंराषैनमैंधीर ॥ सुनोम
धुपश्रपनेइनैनैवतिविनदे
षीवलवीर ॥ चरणांगनमें
हाईरैनदिनभूलेभूनचीर ।
दीठतिदेहवंदवदसषश्रोरें
मलपमसमीर ॥ छिनछिनव
हैसरतिश्रावतिनवविनवत
नमुनागीर ॥ सूरदासमगहिर
हैहियेमेसंदासामसरी ॥ २२

सू
सा
९०

67

रागकल्याण॥ नमनदपालनिधिक
हियतनमानतहोपरपीर॥ बिछु
रेमाननलाथनबनयहैहैकिहमोकि
नतजेबीर॥ मननप्रपनसप्रानमो
सिरप्रपनोकठिनमदनकी
बीर॥ सूरदासप्रभुमिलनक
हनहैरवतनयाकीतीर॥ ४॥
धनासिरी॥ ऊधौंपठवानेकौंचा
ली॥ कछुसीदीकछुथाटीह
रिकीनेउरअंतरमाली॥ ह
रिबनस्यामसीचापवेलीह
लकमलकीपाली॥ अवते
वेलीसीचनलागीछ्राङिग
येवनली॥ नववहूछूपाडूनी

२९

वृंदावनमेंगालियेनंदलालहि
सुरनशंभुविरंचिजननमपरमगी
वतैहैकालकालहि॥४१॥
धनासिरी॥जोपैकृस्नहूमैनप्रि
यभावत॥तोसुनमथुपज॰
सोदानंदनप्रवरीगोकुलग्रा
वन॥तिहिंनैनविमोहनि॰
मषनिरषतनिसदिनरूपवि
चौरे॥तिहिननश्रामनसैनसं
गसुषहरिसमीपसुवसानी।
सोतननविरहनहुटनसमाग
नैनैकहूंवियानजानी॥तिहि
श्रवननिसनैनवचनमनोहर॰
लीकलमषवाजन॥सोईश्र।

सू॰
सा॰
९९

68

बननिग्रवसनिपतमथुवनदेन
संदेसननलाजनत॥ स्रुतिग्रवेस्म
घोमटनमहाभटन्नादिस्रवैन
गन्नावैनगजानै॥ सोईवदन
टीनसमागेंकोपथनुषनहिं-
जानै॥ विनविलाविनवास-
सकलसपटेषिटेषिसवपा-
वन॥ सरदासवननोंवियोग
तिकविनलनकेंगावन॥४॥
रागगौरी॥ हरिविनकौनसोंउ
घकहियेमनसिनमनहि॥
मथतदिनहीदिनग्रहगग्रेन
रदहियै॥ कानननभवननैनग्र
सग्रहवासरकवहनामषनहियै

२१

ह्वैकैसुकमनतकेपसलोंको
लगियहिरुघसहियै॥कबहूं
कैग्रैसीत्रिपयपनतनसुना
नलमैंनहियै॥सूरदासप्रभु
कमलनैनबिन्नुकैसेब्रजमें
रहियै॥५२१॥जैतसिरी॥लैव
लिऊंयोअपनेदेस॥मदनगो
पालनीरमन३महौंकौंनव
सरहौंजहिपसुदेस॥बहुमो
हिरनमोहिरिटेवसनहैंमुर॰
लीग्रधरमनोहरवेस॥कुंड
ललोलतिलकमृगमदरु॰
चिगावतश्रावनटवरभेस॥
रूमबानकवनस्रलिऊंस॰

स
स
१५

69

भितननइकटकारद्दतिसदा
नमदैस॥भ्रदासमथकेस
भिरनअवद्दरिकवमिलैन
रैस॥१४॥२३॥सोरठा॥ऊधोद्दा
तिपद्दकद्दाविचारी॥सदास
मीपारद्दनहेदावनकरनवि
द्दारविद्दारी॥इकतोरेगराचे
ऊबनाकेविसरगईब्रजनारी
कछुइकमउकियाउनदासी
निहिविनोदअधिकारी॥दि
नरैनभेररहैतमवनमैंदे
षोटसाविचारीमानरहतहैआ
सालागोकवभ्रावैतितिपारीनम

नोकरत्वनोगदेवीकोंकहेंकोनविधिकीम

हमतुमध्याननंदनकोनिरषिनि
रषिसुषजीजै॥ सूरदासप्रभुमके
वैनंतीमाथेमुकुटविराजै॥ क
मलनैनमकराकृतकुंडललरष
तहैमधुमाने॥ नानेजेगप्राव.
नमनमैंतुनीकेकरराष॥ सू
रदासस्वामीकेआगेनिगम.
प्रकारनसाष॥ ४॥ २९॥ धना
सिरी॥ ऊधोतुमजोगसिषाव.
नआयेश्रककेसेधीरजधरैं
जौतिमोगिविनजोविजुरानैं
नोराजोरनजामो॥ नवधो.
मोगाकरहांहोंऊधोंश्रवपदूनो
गहछामो॥ ऊधोहरिहमसोपर

स॰ सा॰ ७०

कीजैसैमीनअरूपानी॥नरफि
नरफिरनआनदिपैपरणानीपी
मतजानी॥निसवासरमेपल
कनलागतकोटतननकोहा
री॥जैसेंभवंरोमनमेकोंउरी॰
मोगतिभईहमारी॥वानीसभ
गुरहीकरअपनेवननमाव
कहीनो॥कहाकहीवास्याम
सुदरसोंनिपटनिठुरमनकी॰
नो॥पकसमेअपनेकाहितन
करनफलपहिराए॥अवकेसे
माटीकीमुद्राकरहाथपठाये
वोवाचंदनअोरअरगजासब॰
मैंहमराषी॥अवतनकोंहम

मसमवडोवैनममधुकरहों
साषी॥तुमजोवसतहोमा
धुरानगरीहमतुवसतया
गांऊ॥ऊधोहरिसोंपैंजाक
हियेग्रानतजैकैठाऊ॥पीत
मप्यारेप्रानहमारेरहेग्रधर
परचाई॥सूरदासप्रहरिविनुकै
ग्रागेकोनकहैडुषनाई॥ ५
रागधनासिरी॥ग्रषियांहरिद
रसनकीप्यासे॥चाहतक
मलनैनकौनिसिदिनरह
तउदासी॥ग्राएऊधोफिरिग
येग्रांगनडारिगएगरफांसी
केसरतिलकमोतिनमकीग

१५

सू॰
सा॰
५०

मालावृंदावनकेवासी॥क
हूकेमनकीकोजानतलो
गनकीमनहांसी॥सूरदास
प्रभुतुमरेदरकौलेहोकरा
वनकांसी॥४॥३६॥रागबि
हागरा॥मधुकरफिरकव
हूमिलहैहरि॥कमलनैन
कौमिलिवेकारनप्रपनो
मोजनतहीवहनेकरि॥
नैननपथिकनानमधुवनन
नतिनसोविथाकहनपाइ
निपटि॥काहेनधरहकेरी
नेइपतिसोंडसहइघकीग्र
वधगाईहरि॥धीरनधरनसे

मव्याकलमनलेनइमामनी
रलोचनभरि॥ सूरदासतन
थकितभयोहैथतिवियोग
माइनमकननरि॥ ५४॥ २८
रागसारंग॥ मैरेवनवेमीयें
मरनकरे॥ मऊमसकान
वेकअवलोकनहिरदेतेन
वैरे॥ नवगोपालगोपनसं
गथ्यावनमुरलीअधरपरे॥
मपकैरेनफारअंचरमोनम
मनयुकभरे॥ संध्यासमैगो
थकेअलनवहमयिनकों
विमरे॥ सूरदासप्रभुदरमन
कारननेननिनीरहरे॥ ५५॥ २९

रागमारू॥ कमलनैनश्रवने-
गुननिमनहमारोबांध्यो॥ ला
गतनेनमोनहिविसमबा-
मसांध्यो॥ कटिनपीरवैध्यो
मेरेमारेगयोमाई॥ लागनते
नामेंनहिसबसहोंननाई
नैंनमेंजनितककरोंनऊरुप
ननाई॥ हेकोरूपवारकरैक
विनदसाई॥ कैसेंऊंनंदलाल
पाऊंवैसिमिलोधाई॥ सूरदा
सप्रेमफदनोहोंनहिनाई॥
ऊधोवरननरागबिलावल॥ गोपी
गोपीसुनोहरिसंदेस॥ कह्यो
पूरनब्रह्मध्यावनसकलमि-

घ्याभेस॥ मैंकहोंमोसममा
नौसगुणइनैनाषि॥ पंचतै
गुणसकलदेहीजगतमैंसो
भाष॥ ज्ञानविननरसुकनाही
पहविषमसंसार॥ रूपपरेषा
नतामनलथलवरनअवरन
सार॥ मातपितुकोऊनाहिना
रीजतलमिथ्यालोई॥ सुरद
षसुषनहीजाकेभनैताको
नोई॥ ४४॥ ४॥ गोपिकावचनऊ
धोप्रती॥ रागसोरठ॥ ऊधोकोऊ
नाहीअधिकारी॥ लेनजाहु
यहनोगअपनौतुमकतहो
तदुषारी॥ पढ़तौवेदउपनिष

दनतहैमहाउरूपव्रतधारी
हमअबलाअहीरबनवासी
नाहीपरतसभारी॥ कोइहा
मनतकहतहैंकासौंको
नकथाविस्तारी॥ सूरस्या
मकेसंगगयोचितनैंयोअह
कोंचरीझारी॥४५॥४५॥ राग
सारंग॥ मधुकरप्मनविगर
परे॥ समुतनाहिजानगी।
ताकोमहुअमकानअरे॥ वे
पदनलिननाहिंनैविसरत
सीतलउरसंचरे॥ कमलनै
नअंगरामभागभविमसी
रसगलितगरे॥ बांकेभौंह

पकरि हृगारा षेना ते च गरि-
षे रे ॥ ऐसे हौ न न सवान स्रु
ऐं पवि पवि वैद मरे ॥ जो गा-
गं भी र ह्रु पग्रा ये ऐं दे षन द्
ति रे ॥ ऐ का कहन हू मग्ने सा
र हि हे स्या म वियोग मरे ॥ ४

धनासिरी ॥ कहां न कीजै री अ
पने काजै ॥ दिन दस ग्रे से रू-
करि दे षो जो हरि मिल्या जो-
ग हू माजै ॥ माथे न टा पहिर-
ग लं कं या ल पा व हू भ स म ग्र ग
मुष मांजै ॥ सीगी दर मे ष ला-
से ली लो च न सं दिर टो व न-
ग्राजे ॥ मन्न ष हे म र स हैं स

यानीनाहीआनिउपरियता
भाजै॥ विरहकेतेजोगपरम
हषमतियतहैपहडमहउरा
मै॥ ऊधोकहीममोवीमानो
हृयावदजिमजनीवेकाजै॥
मौनमुनामलमाहिमवश्र
भुलियेवमनझारीऊलला
मै॥१४॥४२॥ धनासिरी॥ कहो
लेकीजैवहूतवडाई॥ अतिअ
भाधश्रुतिवचनगोचरमनन
मातहोनजाई॥ रूपनरेषवर
नवपुनाहीमषानसंगमहा
ई॥ नलविनतरंगचिनभीत
हिमवचेनेवनुराई॥ अवया

व्रनमैमेनईरीतव्रनऊथोग्राति॰
वलाई॥मनहूरिलियोमायुरी
स्नातरोमरोमब्रफाई॥स्पा॰
मस्नभगातनसंदरलोवनस्न:
रनिरषवलिजाई॥४॥४४॥
रागमलार॥गोपालहिपाऊंतो
नाऊंउहिदेस सींगीमुद्राकर
षप्परलैथरिजोगीरिकोभे
स॥कंथपहिरोंभस्मलगाऊं
नरामहाऊकेस॥हरिमिल
षैकोंग्रलषजगाऊंजेसेरंगा॰
मदेस॥ननमनजाऊंपेहूऊह
शऊंविरहाकेउपदेस॥स्नाद
प्रभुविनजनगासूनोंजेसेमति॰

सू
सा
५५

75

विनमेस ॥१४॥४५॥ रागसारंग॥

मीठीवातनिमैंकहालीजै॥
मोहहरिमिलिहूमोरेऊधोक
रनकौसोकीजै॥लाइहृगं
धवनाईआभूषनअरुकीनी
अरुगाथ॥जेमोहनकेसेकर
कहिहैभसमचढावनअंग॥
तिनकेसवअपनेकरकान.
नकरनफूलपहिराई॥तिन.
मोहनमाटीकेमुद्रासुधकर
हाथपहराई॥एकसमैंवेनीहू
दावनरचिपचिमानवनाई॥
जौपैहाहिनदामाथेपरऊल
टौनामकन्हाई॥हमकहा.

करेहरषनंदनंदनतनमनुमधुप
ती॥ न्हानदेहिहमस्यामकैसं
कीनाहुननारीहुलानी॥ ५१ ॥
रागसारंग॥ सैनधरैंयहजोगा
यपनोऊधौंपाईपरी॥ कहा
रसरीतनसोधनसुनिसुनि
लाजमरौं॥ चंदनन्हारिविभू
तलगावनइहउपरिधिकत
रौं॥ सगुनरूपतुहिनउरअंत
रनिरगुनकहाकरौं॥ निसदि
नरसनारटनस्यामगुनकाक
तिजोगमरौं॥ नासागहितम
ध्याननसिषावनवेसरकहा
धरौं॥ मुद्रास्यामअंगअंगाभू

76

घनपतिव्रतनेनटरौ ॥ सूरदा
सप्रभुयहव्रतमेरैहहाँमिलि
नहिंविछुरौँ ॥ ७४ ॥ ७१ ॥ रागन
ट ॥ ऊधोहमतवहीनोगलि
यौ ॥ जादिनतेमदकरमन
मोहनमदवनगवनकियौ
श्रुतिनाटंकमेलिमुद्रावलि
अवधअधारायौरै ॥ दरसन
भिछामांगनझोलनलोचन
पत्रपसारेवांधेवेनुकंठसी
गीपियसिमरगुनगावन ॥
पहिरिअगाननचीरमेषला
फिरिफिरिफिरिसहावन
रहननचितदासफिरनहै

वहुवीयत्नुरिनरात ॥ चरीक
श्रावनऊटेवनातरासोऊय
वनसहुरात ॥ भोगभुगतभ
लैनहिंभावनविरहविघोग
विराग ॥ गोरससवृपकार
नश्रारनरसनाप्रगुरागमैंर
सोमीरहिगनोगकहनजि
हिश्राप ॥ जानीसियितमा
रेसाथकीनुमतिनपदाप
राप ॥ परमगुरुहतिनाथ
नहाघसिरदियोमेउपदे
स ॥ वनरचेटकीमथुराना
थसोनाइकहोंश्रादेस ॥ नि
हिनमकोनिजजनलषायो

सू॰ सा॰ ३

77

सोहमेरेनिनध्यान॥ स्रावा-
ध्यावककादकरनदोऊकै
नमरोतान॥ ५॥ ५८॥ रागके-
दारा॥ ऊधोकरिरहीहमनो-
ग॥ कहापनोवादठामोदो-
षिगोपीभोग॥ सीसमेली-
केमम्रदाकानमेवीर॥ वि-
रहभस्मवठाइवैठीसहन-
कैध्यावीर॥ हदैसीगेटरमु-
लीनैनषप्पारहाथ्य॥ चाहती
हरिदरसभिछादेहुदेनमा-
थ॥ जोगकोगनतगनहम
कौंसरदेषैंजोर॥ कहनहम
कौंजोगकरनसोजोगकेसे

होइ॥४॥५८॥रागसारंग॥म
५करकेह्योसदेससिथारौं
बिनउपदेससहुनहीनोगी
स्थिरह्योवनसारौं॥जा-
कोध्यानधरतगोपीपतिजो
गनगाकरिहाह्यो॥सोहरि-
वसतसदाउरअंतरनेकवा
ननहिटाह्यो॥परउपदेस-
आपनोरूपयोसाबांछिपिस
वारौं॥स्वरसममनाननही
जियकीजोनेनमनोहमारौं
रागकेदारा॥रूपोजोगाविसर-
जिनजाहू॥बांध्योगांठिछहू-
टिपरीहैकहेफिरपाछनाहू

सू
सा
८८

78

ऐसीवस्त्रग्रनूपमरूयोना
हीकोऊग्रौर॥ब्रनवनि-
ताकेनहीकामकीनमरे-
हिपहैहेरा॥जोहिनकरपठ
योमनमोहनसोहमनम-
कोंदीनो॥सूरदासजोविप्र
नारियहकरनेवंदनकीनो
छंद॥रागभूपाली॥नमग्राय
रूयोनोगगयलेहासीयो-
ङषकोसहै॥दंडउठाभस्म
केयाम्हगानवाग्रामदहै॥
रूयोस्यामनेंकोऊनिठरना
हीसषाजिनकोगावरे॥का
हैकुपरलीनलाकेकोननि

नतेबावरी ॥ ऊधौस्यामके
गुनकहावषानोंतलवंधे
जिनयलकिये ॥ मगषिल
षिलाइहमकोंसोचतोइन
नेदिये ॥ ऊधौएकदिनवेकुं
हनासीगमरूंदावनरच्यौ ॥
सोईस्वरूपविलोकमाधव
आइहिवजननमच्यौ ॥ उधौ
सरदरजनीईंदुसोभाजनतिं
कुंजनगई ॥ वासरीकोमधू
स्त्रनिस्त्रनिवधककीसिरा
गीभई ॥ ऊधौसांवरीसीमद
नमूरतिरूदेषांहीरसिरही
औरनेकछूचितनआवत

कठिनवचनहठकरिरही॥ऊ
धोहमभेदभावतिकमेंही
वीरोसकाहिलगाईयै॥ज्ञा
नपतिसोंनेभाललिष्योस
पाईयै॥ऊधोहमननामौन
नमंत्रसोरेनुकोसपनोभ-
यो॥मंत्रुरीजलनवटनेसे
नेसोयपहनगायो॥ऊधो
वेदमागेभेदकेसोछेदनो-
ध्यानीकिये॥ज्ञानदियेहम-
जगतनाननतसुषसवैऊवि
मालिये॥ऊधोनोगननपन-
पथानपहनोहटेमावही
सयामनेहिसाटवाध्यो-

लिनैश्रीरनभावधे ॥ जेमथ
मेंश्रुहत्तानतीरथहरिवा
नतिनकेहियै ॥ सुश्रभु-
सेविश्रवनैदेफलकहो-
तिनकेकिये ॥ ५४ ॥ ५२ ॥ रा
गसारंग ॥ श्रवनोनैरकट
ककोपायो ॥ वोनीतांनि
रागपहिचामीजबनिरगु
नलिषल्यायो ॥ जोगीजहां
होइश्रगवानीतोवरनहां
वनावे ॥ जेमीकुलनाके-
वलिश्राईजेसीरीतिवला-
वे ॥ ऊविनानहांहोइपढा
नीनममेहोहिवनीर ॥ सू

रदासब्रजवासिउपरकौ
नकौंउपवीर ॥४॥५३॥रा
गनैनसिरी ॥ कमलनैनक
रकीमूरतनैनविनेनट
रै ॥ कथोआइलागसिषाव
नसोंनेनालपरे ॥ जवमो
हनगाइलियेआवतिगवा
लनिसंगचरे ॥ वलदाऊअ
रुसंगसषासवकहाकैम
विसरै ॥ वंसीवटजमुना
तटठाढेमुरलीअघरघरै
सषहिसमोहविनोदजे
कीनेकोउहितरनिठरै ॥
वनवासीजेभयेउदासी

कोसंतापभरे॥ सूरदासके
प्रभुविनक्यौंसोकोताउर
है॥४॥५४॥रागसारंग॥ऊ-
धौनमघटमनतेलेआप॥इक
हमनरीषिनावननावनआ-
येमानेमिषपठाये॥नमस-
नेकैवैनाथनमारेआनएक
मारी॥मित्रकेमित्रसज्जन-
केसज्जननानेकहतप्रकारी
रेमनिसठजनरतप्रवलनि-
केपरउपहेंतिहिजानै॥वि-
परंगवारहोइजोसरषमो
नेरेवानेमानै॥हमहाविक
रेसरकेप्रभसौंहजोमनसो

स
सा
८१

हाई ॥ ३ ॥ लटिमाहूप्रपनेप्र
मट्टियोवादट्टीकरनेलगा
ई ॥ ४ ॥ ५५ ॥ रागसोरठ ॥ कैत
मसोहूटैलरिउधोकैरहि
येगहिमैन ॥ १ ॥ कहमनरी
नरपरजागतबोलिविगहूवे
कैन ॥ पैवहिरंगमिलेदा
हुकारेकाकोमनपतिपाई
तुमसोहोइस्तुनमसोबोले
लेहेनोगाहिपाई ॥ जाकाहू
कोजोगचाहियेसोलेभस्म
लगावे ॥ नंदनरथाननंदनं
दनकोनहकौंनिर्गुनग्रावे
कहौसंदेसमस्रकेप्रभसो

षटनिर्गुनग्रंथियधारीं ॥ अप
नौवीयोग्रापलनौनमग्रा
पनहींनिरवारीं ॥ ४ ॥ ५९ ॥
धनासिरी ॥ आपवोषवरेषा
पारी ॥ षेपलादकैजोगज्ञा
नकीब्रह्मैग्रानउतारी ॥
फाटकदेहाटकमनिमांगा
नभलौविपरंगवारी ॥ षो
टोषायोहेकेथोंकहुंलिय
फिरतसिरभारी ॥ इनकेक
हैकौनउह्काविषैकोनग्र
नारी ॥ अपनोहृथझाइकों
पीवेषारकूपकोवारि ॥ फि
रिलैनाहउहाकविजायैन।

म
सा
८

82

नपाकहूपावै॥ मुहिमांगि
हमदेहिसरजोसामहिश्रा
नदिषावै॥ ४॥ ५९॥ रागसारंग
हमनोहंभाभिसषपायो
नोगोपालमिलैतोनीकेना
तरजगगनमगायो॥ कहांद
मयागोकुलकेवासीवरन
हीनघटनान॥ कहांवेश्री
कमलाकेवल्लभमिलिवै
ठनपकयांतनिगमध्यां
नमुनिसानश्रगोचरनेभय
घोषनिवासी॥ इननेपरश्र
वकहांदेषियोकोनमुक
तिहैदासी॥ नोगकथाऊ

योबालोकोमनकहैवारं

वार॥ सरस्यामनजिश्राति।

भनैनोताकीजननीछार॥

रागगौरी॥ ऐसीवातकहैजि

नऊयौ॥ कमलनैनकीश्रा

नकरतहरिग्रावनिवचनन

सूयौ॥ बातनहीउडिजाइश्रौ

रमोमोमाहीदसकाचौ॥ म

नवचकरमेमोथिपकनमन

नेदनंदनरंगराचौ॥ पालागौ

मोइश्रवकीजेमिटहूदकेको

मल॥ मुरलीधरकोध्यानमि

लावहूश्रोछेपीनदुकूल ॥

इहिवातननमभयेस्यामन

सू
सा
७

83

नविलवतहोगाठकूल॥सु
रवचनसुनरहोयघकोसोव
हूरनग्रायोवोल॥४॥५९॥
रागसारंग॥विलगजनमानो
कुयोप्यारे॥वहमसुगाका
नरकउवरीनेग्रावनेकारे॥
हमकारेसुफलकसुनका
रेकारेमधुपसंवारे॥स्याम
सुदरकीकोनचलावेसव
हीनेनसियारे॥मानोनील
माटनेकाठेनसुनाग्रानि
पधारे॥नानेस्यामसभणोन
सुनासुरस्यामसगुनप्यारे॥८
रागनट॥उयोनहमसवसाथे

४
८

भोरे ॥ विलगानमानोकहौ
हेरेकोटिकुटिललैनोरे ॥ वे
अक्रूरक्रूरकृतउनकीरेने
भरिभरिटोरे ॥ वेचनस्याम
स्यामचनिअंतरस्यामका
ममैछोरे ॥ वेमोहननिरगु
नगुननिनकेदेपेफटका·
पिछोरे ॥ सूरदासकारेका·
रेकीसंगतनकोन्यावेअवगो
रे ॥ १४ ॥ ८१ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो
हमैकहासमुफावहू ॥ पसु
पेछेसुभीव्रजकेसवदेष·
अवनसुनिआवहू ॥ नेनन
वरनतोसुननहिपीवतढं

ऊनवनचनगोले॥ प्रतिको
किलदैश्रादिविहंगमभां
तिभयानककोले॥ जमुना
भईस्यामस्यामहिविनुईड
ढीनक्कुंथोगी॥ तरवरपत्र
वसनननंसभारनविरहवृछ
भएजोगी॥ गोकुलकेसब
लोकदुषितहैंनीरविनाति
समीन॥ सूरदासप्रभुश्रान
नकूटनश्रवपश्रामसेंली
न॥१४॥९२॥रागसारंग॥ जोगा
कीगयमननमरीश्रगाश्रा
गवई॥ सूलगीसूलगिह
मजरनहीतमेंश्रानफंक

ष्टृ सा ७

84

दई॥ भोराकुविनाकूबरीसों
कौनबुद्धिदई॥ सिंहभषतनि-
वरतनितुकामनीवानतनई॥
ध्यानुधरतनटरतसूरतनदिवि
दनापनई॥ सूरप्रभुकीकृपा
तापरसकलसिद्धमई॥ ४८॥
रागसारंग॥ ऐसुलिकहासिषाव
नआयो॥ पतौनैनरूपरसमा
तेकहौनस्तुनतपरायो॥ जोरा
नुगतिहूमकछूननानैश्रोर-
तमायोतान॥ नवकिसोरमन
मोहनमूरतितासोंमनरहा
न॥ भलीभईतुमआयेऊधोट
ओटमाविचारी॥ दाउपार-

सू
८

85

मिलाइसूरप्रभुप्रानहरीहमा
री॥४॥८४॥रागसोरठ॥हमी
हैस्यामसभंवगामकारे॥भली
भईकुपोनसुघ्रायेवेददैजाहरू
मारे॥मंत्रनफुरैतंत्रनहिलागै
चलीगुनीगुनहारे॥हमसुत्रसि
कायनैनभरिदेख्योपायोमं
त्रसिरगारे॥विरहविषानतन
पिदहनहैसोअवनारतिमारे
भ्रनोवेगिगारुडीगोविंदजो
पाविषहीउनारे॥आवनलहे
रमदनविरहाकीजोहरिवेद
वेदहुकारे॥सूरदासमतितिय
रश्रावेहमसिरगारुडआरे॥५॥

रागसारंग॥ मधुकरपहकारन। कीरीत॥ मनवैहरैपरायौस रवसकरेकपटकीप्रीत॥ मै सैमधुकरपुहुपवासलेरहन वहूनरूचिमान॥ दिनकरउद यभ्रमनतऊठवैठनफिरनकर नपहिचान॥ भवनभुजंगपि टारीपालौमैसेनननीतान॥ ऊलकरतनननननहिका। गीश्रुतिकाटभजनात॥ को किलकाकशंगस्यामवनह मैनदेषेभावे॥ सूरदासप्रभु। हारस्यामकेफिरफिरसरन। कंरावे॥ ४॥ ९९॥ रागसारंग॥

स्र
मा
८९

86

मधुकरग्रापनह्रोहिविराने॥
बाहरहितहितकहूबावनभी
नरकानसयाने॥ग्रोस्रकपिं
जरमोहिउचारत॥नैंग्रोक
हतवषानेछूटत॥नहीउति
मिलैग्रपनकुलमीननपलट
हराने॥जद्यपिगननहितजत
मनोहरनरपिकपटीमानै॥
स्रदासप्रभुकौनकानकों
माषीमधुलपटाने॥५॥१०
रागनजैसिरी॥मधुपविराने॥
लोकवटाऊ दिनदषारहेग्र
पनेस्वारथ कौमिलिगयेनकारू
प्रथमसिउहमकोदेपदरश्रा
फिरि

यो सिषा जो पाऊ ॥ हमकों
जोग भोग कछु बनाकों यहि कु
लयहै सुभाऊ ॥ कहांकरौं
केमेहरि रेषो कीजै कोंउ
पाऊ ॥ सूरदास प्रभुकौंन नग्र
रण्यौ प्रान रहो किनजाऊ ॥ ४
राग सारंग ॥ सब जल तजै प्रेम
हकेनाते ॥ चातक स्वान हूं
दन हि छाडत प्रगट पुकार
नताते ॥ समुझन मीन उदक
कीवानी तऊ प्रान हठि हारते
सुनत कुरंग नाद रस पूरन जै
दपि आपरस मारत ॥ निमि
ष चकोर पलक नहि लावत

सु. सू.

87

सिरपेचतजुगवीते ॥ जोत
पनगरैपिवछनातनभएन
प्रेमचटीते ॥ छविछलिक
नविसरतनवैवातेंकरीस
गछनराज ॥ कहुधौंसुरस्या
मछ्वाईकनपकदेहकेका
ज ॥५॥१९॥ रागसारंग ॥ हम
सवजानतहरिकीवातैं ॥
तमनकरतवेराजकरत
नहिंजानतहोकछुकातें
माखोकंससरनसुषदीनो
उग्रसेनराजसिरपातें ॥ उग्रसे
नवैठारिसिंहासनलोगक
हैकुलनातें ॥ तपनेराजरा

नेते आगे तूम मम मुक तनहि
बातें ॥ सूरस्याम इहि भांत स
यानें हम सों बिलवत माते ॥
रागकान्हडा ॥ हमकों नीकै स
मुझ परी ॥ कछु कहू नी अ
जहूं लै आसा सो ऊ तो निबी
री ॥ वेस फल कसन ये सिष
ऊधों पटपक पर पाटी ॥ उन
ग्रैसी के ने इन मे सौ रत न कहू
डाइ रा हा वन माटी ॥ यहि मै
पहिलै ही कहि राषी असित
न अपने होही ॥ सूरकाहि नौ
माषो दीने चलै आपनी गो
ही ॥ ४ ॥ ७ ॥ रागसारंग ॥ मधु

पकहिमानननाटीवात॥ फु
कफुकहिगमलगावनउरि
नहेवेमात॥ निहिचरवा
सननसोटानंदननिगुनक
हेसमात॥ नमकनभटका
नफिरतजनमलोंग्रानका
नकिनपात॥ जटपिसकल
वेलीवनविहरतवसनग्रा
तिनलनात॥ सूरदासब्रज
मिलेग्रानकोंमादीकीऊ
सरात॥ ५॥ ०२॥
मधुकरवहदिनलागेकारे
दहदिसविनवनपलकना
लागतिविरहिमनलकेदाहे

निसदिवैनैनतृपततदरसनके
करिपतहिरदैमांहे ॥ उरते
निकसकाननकिनसीनल
नोपैकानृहाहे ॥ पालागौं
श्रैमैरहनैदश्रवयश्रासन
लथाहे ॥ जितडगौलैनन
गुमसिंयसैवहृतपैदावा
हैनासौउपनैप्रीतरीतश्रति
वैनैनिवाहे ॥ स्राकहालैक
रैयपीहाभैरनुसरसरताहे
॥७॥९३॥ रागसोरठ ॥ हरिसोंभ
लोप्रभुनिसीताकें ॥ जाको
विरहननपैकीनैसिंधु
कियौवीताकों ॥ लंकाना

सू
सा
५

89

रिसकलरिउमारेदेषौभी
मुषताकोहतनराष्यौजिनलि
षिनुदयोज्ञानगाह्योगीता॰
को॥ तिनकोकहापरीषो
कीनेऊवताकेमीताको॥
चढैसेनसंतानोसुधिविस
रीमैं॥ करिअतिकृपाजोग
लिषिपठयोदेषिउराईता॰
को॥ सूरदासप्रेमकहाजा
नैलोभीनवनीताको॥ ४
रागनट॥ ऊधौजाकेमाथेभा
ग॥ विलकनिक्याहिसक
लगोपीजनवेरीचसदाग
मपनोजोगाकोवेललगा॰

१५

वनकाटिप्रेमकोवाग॥क्रु
वजाकोपटरानीकीनीह
मैदेनवैराग॥लैडीकीञ्ज
गरौडीवानैवछौंस्यामप्र
नुराग॥निलजभपदोरूष
लनहैवारहिमासीफाग॥
जोरीभलीवनीहैडनकेरा
जहेंसघ्रुरूकाग॥स्नुरदा
मप्रभुऊषक्षाडिकेचनरा
वचोरनथ्राग॥४॥१०५॥रा
गनट॥ऊधोकोहरिहिनह
मारे॥वैरानाहेरहेमधुव
नीदासीकहतिडलारे॥त
वलैमामहतोजीवनके

समा

90

सुनिनवचनतिहारे॥कहिकै
नृपआनिउरअंतरजोगाजुगा
तिगतिहारे॥नृपअभिमाना
मानछुआयोअजनकिअही
रवेचारै॥माहोंकेसकाज
हुवजाकेसरकदावनभो
१४॥२९॥रागमलार॥जिनबालो
तमवानपराई॥ताकोऊस
ननसमुझनउमैंकनगा
वतउहराई॥पायोसमावा
रखघउपज्योमिलिजलकी
आतिविसराई॥भलीसंग
वसदोतिभलीठारपहिचा
नकराई॥मिठीकथाकरउ

कलागनहेइपजैमोइरउपा

देसषगाई ॥ उलटोम्पाउस्त

रकेप्रभुकोवहीनातिमा

गतिउनगाई ॥ ५ ॥ ०० ॥ राग

सारंग ॥ ऊधोप्रबकछुकह

ननआवै सिरपरसौनहा

मारेऊविनावामकेदामव

लावै ॥ कितककहरगोऊल

नेमषुरालिषिलिषिजोप

पठावै ॥ वाहकेरंगरचेसांव

रेस्वकमोवेहिपठावे ॥ कछु

रकमेत्रकियोवंदनमैंताते

स्पामहिंभावे ॥ नटलीमों

करलियैलऊटयाकपिजों

सू
सा
९१

नाचनचावै॥ नवमेकहूं न
श्रमाकीदासीश्रवऊलव
धूकहावै॥ सूरदासप्रभुप
हैकठिनकाठिपरलोनल
गावै॥१४॥१८॥ रागमलार॥
स्यामविरहकौंनीवैवनवा
सी रहिचटयातरहैकौ
ऊयौविह्वरैऊंजविलासी
ऊविजावरयायोसोहहन
सोंमानोनपकियोकांसी
सूरस्यामकोयहैपरषोरु
कउपहमैोहांसी॥१४॥१॥
धनासिरी॥ हरिठाकुरलोगनि
सोंकयोकहूकाहेकेपीन

मोकीजैतैतौहूहैजलपरइवि
हीकीसोरीति ॥ ज्योंजलमी
नकमलचातकसोंनासो
गयोविनीति ॥ नरपजजरत
प्रकारतहीकछुनाहीहैय
हनीत ॥ मनहठपर्योंकंबध
जइज्योंहारहुमाननजीत
रूकनननेप्रेमसमुद्रसूरप्र
वाहहीकीभीत ॥ ५ ॥ ८ ॥
रागसारंग ॥ मधुकरजाहिका
हौंकमेरौ ॥ पीतवसनत
नस्यामलाजकरराषपाद
नैरौ ॥ याउनकेउपदेसमनला
यकननराषोंकहिडेरो ॥ ३ ॥

नैमानयेसषीमलासवछा
ऊतिनीहीवेहैरों ॥ ऐसीवात
कहैहौतमत्ताहैहौतमत्तासोंहो
इमोकहियेलायक ॥ इहोन
मोटाऊवारहमारेछिनछि
नप्रतिसुषदायक ॥ ऐसोंनप
[illegible]
[illegible] हूपपरागछ
डिकेकैग्रामबसिबास ॥
नैाटमसुरकरयहोंदेषे
निमिषनछाड़िपास ॥ ४ ॥
रागमलार ॥ काहेकेगोपीना
थकहावत ॥ जोमधुकरवे
स्यामहमारेकाहनगोक

लखावत ॥ सपनेकेपहिचान-
माननिघरमैकलकलगाव-
न ॥ जैसेगजराजकानकेओर-
दसनदिषावत ॥ असेमक-
हिवैसनवेकोंमरयनतलिव
लावन ॥ १४ ॥ ८२ ॥ रागनट ॥ स
वीरे प्रानताहमजानी ॥ याह-
नेअसमानकरतेहैनटपरम
[illegible]वानी ॥ अवतोरानजीन-
सनियततेहैकविनासीपटरा
नी ॥ प्रथमहिगाइबालसंग
रहिहेनेभपक्षाकुकेरानी
मनहरिलियेयावनायवासी
सीअवहैवैठत्तानीमहामन-

लमारनमननमोहनकोहेनसं-
कासानी।गुहेनिसाव्रजना-
रिसंगलैवनवसलीलाठानी
सूरदासपकलिपतियांकहे
कौनसुविसानी॥४॥५॥रा
गनट॥मधुवनकेलोगनकें
पतियाई॥मुषऔरेअंतरिगति
औरेवतियांकहिपठिवतनु
वनाई॥जौकोइलसुतका-
गजिवावतभावभक्तिभोज
नजुषवाई॥कुहकिकुहकि-
आयेवसंतरितुअंतमिलेअप
नेकुलजाई॥जैसोंमधुकरअंबुज
रसचाष्योवहुरिनपूछेआई।

स्याम सनेह्यानमनमानें हैं तिनसों
कीनें कहा समगाउ ॥ ७ ॥ ८४ ॥ रा
ग सारंग ॥ सषी री स्याम सबैंप कुसा
र मीठे वचन सुहाये बोलन अन
न्नार कहा ॥ भोर ऊंग काग
पिक कोकिल कपिद्न कीव
टस्यार मदनगुपाल मधुपु
री बिसे गावन मंगल चार
बिरह कठिन लागो गरंथ्रो
नरहे छैाहं बिचारी ॥ सुवकिरि
हे सरहे कसुन मजनी पाये लि
षे लिलार ॥ कारी वटो देषि
वार की सो भाटे निसुपार ॥
स्याम सलिनाम व उमरी वा

तककारतप्रकार ॥ ४ ॥ ८५ ॥ रा
गसारंग ॥ तिनैनपञ्चीमैरीमैकि
नहिनहिमारै ॥ मैंभोराम
वापिविचारिकैतहंजाइजनेहन
ननजानै । कोइकागपालक
राकीनोमिलैक्रलहिनवमप
सपानेसोइबानभईतेइमइराकी
मथुबननैमाधवजबग्रानै ॥ न
वतींप्रेमविचारनकानैहोन
कहांग्रवकैपछितानै ॥ सूरद
सजेमनकेषारेश्रीसरपेना ।
हिपहिचानै ॥ विलावल ॥ जिनको
रूबमपोपराधे ॥ सबसहिको
ग्रापनौउनकोनरूजन ।

कहुकान्हकेभाये॥ सहज॰
समाधारहतजेजोगीमैंनरहावि
भतलभाये॥ रतनकेरोपरहटा
नतमारोजेपेहनबहतनवा॰
हाये॥ नानानेग्रबभलोमा
नेहकथेनावैगाये॥ सहदस
प्रभुदसनकासमानेपि
रनधतराणाये॥४॥८॥ रा
गमारू॥ जोपैयहेप्रीनकेवा
न।तोकथेनमनिरहतक
हतनिरषमावैगान॥वच
नकहतभरिलैननैनलस
सतअकुलान।जोवटवटहेवि
रहितनिरनाकतहिसमुझी

सू
सा
९८

95

जात॥ सगुन ग्रीन कों हमयु-
तिपाल न इषहेत न सब गात॥ न
म निरगुन को श्रीन करन सषु
रूप कहु जात॥ १४॥ ८८॥ राग गुज
री॥ कहा कोऊ जानै रीपार की
र॥ नेह नेह के विक्रूरी सखी-
जे नेम हेमरीर॥ कहि कथा
मधुप सम जुरावत नैंगा बथ
नै मन पीर॥ कैसे नेन मीन
मु विपावन विन रस सनेहा-
रि नीर॥ जोगम समायक हार
मनानै उनवा सीन प्रहीर॥
मो कैसे मिलै स्याम सुवह
रनं गानतीर॥ १४॥ ८९॥

धनाश्री॥ऊधोजोगकहाहैकी
जत॥ओढियतहैकिबिछैयत
हैकिधौंषैयतहैकिधौंपीजत
कैधौंकछुषेलौंनासुंदरकै
कछुभूषननीको॥हमरेनंदनं
दनजोचहियतमोहनजीवन
नीको॥तुमजुकहतहरिनि
र्गुननिरंतरनिगमनीनहैरी
न॥प्रगटरूपकीरासमनोह
रछाडेकौंपरतीति॥गाबुव
रावनगएपछोषनेअबहिंन।
फिरिआवन॥सोईसूरसहाइ
हमारेवेनरसलावनआवन॥४

रागनट॥ऊधोजोगनचहीह।

१०

सू
सा
96

सनामैो ॥ जादिनतेंसुफल-
कसुमनकेसंगपतेंनसुका·
मैो ॥ ननमायासंसारसवन·
सोछुननुवतिछुवनठाम्यौं ॥
नंदनंदनमुरलीसुधधारेवहै
रूपउरग्यामैो ॥ वहैजोगजो
गीननभूलेजोतुमसुपरिहि-
वधामैौं ॥ व्रह्मरंध्रहैतनेपात
निहिनिनहूंचामैो ॥ कहतनु
ननसुकनमनमहिपांत
ऊनहिंमनमामैो ॥ सावहैनि
नरूपस्यामकैहैउरमोहिस
मामैो ॥ ४ ॥ ९ ॥ रागमलार ॥
मधुकरस्यामहमारेचोर ॥ म

नहरिलिषोतनकविनवनमें
निरषनैनकीकोर॥ पकोरहूते
हूदौरप्रेमप्रीतकेजोर॥ गपहु
ञाइतुरातसवफंदनिदैरापद
मनभ्रकोर॥ वोकिपरीनागन
निसवीनेरतमिल्योरकभीर
सूरदासप्रभुसरवसलूसोना
गरनवलकिसोर॥ ५४॥ ९२॥
सारंग॥ अपनस्वारथकोसव
कोऊ॥ उपकरिरहैमधुप
मधुलैपरतनमवीनेप्रकृष्यो
ऊ॥ लीनेफिरतिजोगजोवति
नुकोवडेसयानेदोऊ॥ स्रोरो
कह्योसंदेसोकसोहैकहि

सू.सा.
१९

निवरोकिनसोऊ॥ निरिगयो
मानपरेषौसजनीहृदयमांक
किनजोऊ॥ नवकाहूकोरास
षिलाईजोपहूतानहूतोऊ॥ श्र
वहूमेजियग्रहषुटकतहै।
होनीहोईसोहोऊ॥ सूरस्याम
गोकुलकेनाकबिनचिंताषि
नषोऊ॥ ५॥ ७१॥ रागमलार॥
जोपैकोऊविरहिनिकेउषा।
जानै॥ मौनजिसगुनवायरी।
मरतिकमउपरैसत्तानै॥ ऊग्र
दिवकोरमुदितविधुनिरषत
कहाकौरलेभानै॥ चातकस
दासनकोसेवडषिनहोतवि

नपानी ॥ भौरकुरंगकाककको
किलकोकविजनकपटवषा
नै ॥ सूरदाससरवससजोदीजै
कारेकिरननमानै ॥ १४ ॥ ९४ ॥
रागमलार ॥ मधुकरइहांनाहि
मनमेरो गयोजुवससगनंदन
केवहुरनकेनोफेरो ॥ उनिनै
ननिकाननमोललैकीनोअप
नोचेरो ॥ जोजाकोवसपर्यो
सुताकोविसर्योवासबसेस ॥
लीनेफिरनसूरप्रजनवीधनु
कोऊनसमुझनकेरो ॥ मंदोप
र्योसिधारीअनननहियहनिर
गुनमनमनेरो ॥ १५ ॥ ९५ ॥ रागसारंग

डुयोहरिकाहेकोअंतरजामी
जेनहिआइमिलनतइहिओस
गअवथवजावनलामी॥अप
नीचौपअुानिउद्दिवैठनअलि
नैरसकेस्वामी॥नेकहाजा
नेपीरपराईजैहैमकहकेगा
मी॥आरेउचरसीनकलईसी
जैसीषाठीआमी॥सारास
अनिषतिमवियनहैऊथोपी
वनमानी॥५॥१९॥धनासिरी॥
चरनकविनाभलोकियो॥
सनिसनिसमाचारपऊथोअ
धिकजरातहियो॥जिहिको
गनअहनाहपदरिहहोसफि

रैनदियौ । तिनअपनोमनह
रतजामौहसिहसिलोगजि
यौ ॥ चीरीचंदनचडाइकेश्री
पतिवसनकियौ ॥ सूरसक
लनागरनारिनकोदासीदइ
लियौ ॥ ४ ॥ ९० ॥ रागमलार ॥ ऊ
धोहमनहिनाम्योस्यामहि ॥
सेवाकरनकरीऊनऔरैगपना
नकुलनामहि ॥ ननमनचोर
धीननोनोरनकौनभलाईना
महि ॥ नकहाजानेपीरपराई
लबधुकअपनेकामहि ॥ चात
कसदाचातनकोसेवकदुषित
विनाजलपानहि ॥ सूरदासअ

सू
सा
५१
99

भुअतिपहकीनीरचौकुवरीथा
महि ॥ ४ ॥ १८ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो
हरिपहकहाकह्यौ ॥ राजका
जचितदियोस्रावरैनिजगोकु-
लविसैयौं ॥ हमसीवहुतनवरौंब
त्रिनाइककोटिराजकुमारी ॥
कहापाइहैनंदपिनाअकनस
मतिसीमहिनारी ॥ कनगिरि-
धहैयोंइइसटमेहौंकनवैसष
उपजाये ॥ अवकोनिठुरभपत्र
लनकोलिषिलिषिजोगपठा
पे ॥ परमप्रवीनसकलविधि-
संदरनानेकहूसमुफाप ॥ स्रा
हमारीकौनचलावैमातपिता

विसराये ॥ ४ ॥ ९९ ॥ रागनट ॥ ऊधो
हमब्रजनाथविसारे । जबतेग
वनकियोमधुवनकोचितवत
लोचनहारे ॥ महाप्रलयपनेका
हैराषेइइआसप्रभुटारे ॥ छूट
तनदीआसहिरदैनेनवनसपे
श्रवमारे । अवथवथीहारितेस
ववीतेश्रावनकहिजुसिधारे
सूरदासप्रभुकबधौमिलिहै
लैगयप्रानहमारे ॥ १५० ॥ रागसा
रंग ॥ ऊधोकहियेकाहिसुनाई
हरिबिछुरनहमसहेजिनेदुष
तितेबिरहकेगाई । बरमाथव
मधिबनमैंरहतेकतनसराके

सू
सा
९

100

म्राप॥ कतप्रभुगोपभेषव्रनधा
ह्योकनपसुषइपजाप॥ कनरि
तिथस्रोइंदमदमेसोकनवनरा
सवनाप॥ श्रवकरहानिहुरभपवि
रहिनकोलिषिलिषिजोगपठा
प॥ परमप्रवीनसकलजानन।
होतोनयहकहिश्राप॥ श्रपने।
कैंनवलावेसुतजुमातवपिता।
विसराप॥ १५॥ १॥ रागमलार॥ श्री
मउहिंदेसनकोऊजानत॥ ने।
चानकहतयलिश्रेसीविधान
हीपहिचानत॥ जेगोपालव्रज
मैंगृहगृहनेहधरह्योलेषान॥
नेमव्रतपरेनव्रजवानिहुरभ

षेपरनात ॥ स्वरकुटिलताने
सुनिपनहैलोकपुरानननगा
वत ॥ नषसिषलोंविषरूपवस
नेहैमधुवननामकहावत ॥
१५२ ॥ राग मारू ऊधोजाम्योजा
ननमारौ ॥ जानैकहागानरति
लीलाअंतनषहीरविचारौ ॥ भ
लीभईहमसवैषयानीऊवि
जासोमनमान्यौ ॥ कहियेकहा
लालकेमारेंआवननाहिंषि
स्यान्यौ ॥ ऊधोजाइवोहिंमहिं
ल्यावौसदरस्यामपियारौ ॥
याहोवीसधरोदसकुविजांअ
नेहैकानूहमारौ ॥ सनिरीसषी

सू
सा
९८

101

कहूंनहिकहियेमाधवग्रावन
दीजे॥ सूरस्यामसबवृकैजोमि
लेहैहांसोकरिकरिजीजे॥
९५॥३॥ रागसारंग॥ तुमग्रलिवा
तैंहीकहिजानत॥ निरगुनक
थावनाईकहतनहोविरदकु
थाकहिजानत॥ प्रफुलतक
मलउठिदिषिधावतसवकु
लसंगलिये॥ ग्रोरसुमनसोंम
धुजावतहोफाहिकजानहि
यें॥ चानकस्वानसुदकोगारु
कस्यदारहतइकरूप॥ कहाजा
नेदाउरजलकोग्रनसागरग्रो
समकूप॥ वानकहौंसबमेंसी

तासोंजाकेमनतमभावत॥
मुखवचनजैसोउपदेततैसेही
तमपावत॥ ५१॥ ४॥ सारंग॥ का
हेकोंरोकतमारगसूधो॥ सुनि
मधुकरनिरगुनकंटकमैराज
पंथक्योंरूधो॥ केतमसिष
पटयेहोऊविनाकहोंहूधो
वेदपुरानस्मृतिकिनदेषोजो
वतिजोगकहोंधों॥ ताको
कहापरेषोकीजेजानेछाछदू
नदूधो॥ सूरमूरअक्रूरलेगा
योव्याजनिवेरनऊधो॥ ५२॥
धनासिरी॥ ऊटिलवनसोंरना
कोउआवे॥ तोव्रजराजप्रेम

स्याम
धन

५

स
सा
१२

102

मकेवातेकाकेहाथपठावै ॥
प्रीतपुरातनसमिरसोवसम्हार
नसंदेसेदीने ॥ नेम्रलकहतअ्रा
गकेअ्रोरेस्तरतनेतिरलीने ॥
पक्षपषाकहोनदिमानतक
हैजोभाकीटेक ॥ पेमसमसयु
पमथवनमैंकहाहोसकबि
एक ॥ १५ ॥ १रागमलार ॥ वा
तियनसवकोऊसुवै ॥ असो
नहीकोऊहैप्रीतमलेत्रजना
थमिलावै ॥ आयोहमनकपट
कोवासीनिरगुनज्ञानवतावै
सषाहमारेस्यामममनोहरने
निभरनदिषावै ॥ ज्ञानवथा

नकोभेदनजाननचनरकहा
वै॥ सूरदाससबवहीकाहूकों
अपनोरहितभावै॥ ५५॥ ७॥ रा
गमलार॥ बाननिकोपरतीनक
रै॥ कोअवकमलनैनमुरन
नजिनिर्गुनध्यानधरै॥ जोम
नवेदकहतनजागावीनेरूपरेष
विनजाने॥ सोमनमूढकह
नअवलनसोंनाहिसुहृदेसमा
नै॥ जिहिरसकानदेवमुनिवि
ननध्यानपकलकहिआवन
सोइरसमूररगाइगवागवसंग
सालीलैकरगावस॥ ५५॥ ८
धनासिरी॥ मधुकरहमअजानम

स॰
सा॰
९२

103

नभोरी॥ यहमनन्हाइनहीउप
देसोनागरिनवलिकिमोरी
कंचनकोमृगकौनेदेष्योकि
नगहिकाछोडोरी॥ कहियो
मधुपहारनेमाषनकौनेभरी
कमोरी॥ बिनहींभीनचित्र॰
किनकीनोकिननभचाल्यो
फोरी॥ कहोकौनपैकढतन॰
कनूकानिनहहिभुसीपिछो
री॥ निरगुनज्ञाननमारोरूयो
हमगुवलामतियारी॥ बाहन
सूरस्यामसुषवंद्रहिञ्जषियाः
जानिचकोरी॥ ५५॥ ९॥ विहा
गडा॥ लेवलिऊधोहोमनहीसु॰

हरस्यामाविहारीनहोलैवलि
हौं ॥ हृदैकीप्रीतस्यामजेजा
नतकितकहरगोकुलहो ॥
ग्रापुनजाइमथुपरीछ्रापउहा
रहेहिमिलहो ॥ सूरदासस्वा
मीकेविछुरैंनैननिनीरप्रवल
हौं ॥ ५५ ॥ ॥ विहागडा ॥ मैंनंद
नंदनसोंकछुनकह्यो ॥ सा
निऊधोहरिऐसीकीनीजा
इमथुपरीवसनरसौं ॥ चलत
वहोमोहनग्रावनमेंविसवा
सगहौ ॥ सूविवियोगनंदनंद
नकोग्रावनहिजानतसहौं ॥
५५ ॥ ११ ॥ ऊधोवचन ॥ रागनट ॥ गोपी

स्र
सा
९४

104

सनोहरिमेरस॥ करिस्रमाध
ग्रनभांतिचेनोचरनकोउपेट।
म॥ वेम्रविगतपरनम्रविमा।
सीवटयटरहेसमाई॥ नतत्ता
नविनमुक्तनहोईवेदपुरान।
नगाई॥ सगुनकाउनिरगुन।
कोंध्यावहुरुकमन्नपकविन
लाई॥ इहिउपाईकविरहन।
रोगेमिलोंब्रह्मसोंजाई॥ स्र।
ननसंदेसजुसहसायवकेगो
पीननविलषानी॥ स्रविरह
केकोनचलावैनैनम्रवतस्र।
तिसानी॥ ९५॥ ९२॥ गोपिकावचन
रागसारंग॥ नहीहमनिरगुनसों

पहिचान॥ मनसारसरूपमिं॥ धुमैरहौअपनपौंमान॥ जदपि ग्रानउपदेसजऊयेहरनज्ञान॥ वषान॥ चितउमिरहीमदनमो हनकीचितवनमुरिमुसिका नि॥ नरहोंसपनेहूनेंदनंदनमों नैनिपरमतिकुलकान॥ छूट तनहीमहूनमारनमभुउबम षलान॥ ५॥ ३॥ रागसारंग॥ हा मकौंहरिकोंकथासुनावौ॥ पअपनीसवकथाज्ञानकीअ लमषुराहीगावौ॥ नागरिना रिभलेसमझैगीतेरेवचननि॥ पावौ॥ पालागोंजैसेंउनपदयें

स॰
सा॰
५५

105

उनहींजारहिफवो॥सुनिश्रिी
घरूषरूरामसुंदरकेनुवनी
नियहित्तहावौ॥हरिगुषगति
श्रानुरहहिनैननिवारकिश्रान
दिषावौ॥नौकोउकोटिकरै
कैसीविधिवलविद्यावौसा
वौ॥सूरदासमहिननीरमीनके
नलविननहींसुपावौ॥५५॥४॥
ऊधोवचन॥रागनट॥नानकरिवा
वरीजिनहोहू॥तत्वभजैवैसेर
हैहोपीरसपरसेलोहू॥मेरोव
चनसतकरिमानोछ्वारैरोसव
सोमोहू॥नवलौंसवपानीके
उपरीजवलगश्रनतनहोहू॥

रैमथुपवानछैसीप्रवकौक।
ह्यिावनतोह॥स्रमवसती।
क्षाडिपरमजुषहमैवनावनषो
ह॥१५॥१५॥गोपिकावचनरागसारंग॥
हरिमुषदेषेहैपरतीन॥जोतुम
कोटिभांतपरमोधोनोगज्ञान
कीरीन॥नाहीकछूसयानूजा
नमैयहतनीकेहमनै॥कहाक
होंगहियेमुखभवकोंकेसेम
नेमैमानै॥इहमनएकएकव
हमरनभंगीकीटसमानै॥स्र
रसमधैकुधोमछोइहिविधि
जोगसयानै॥१५॥१६॥रागसारंग॥
ऊधोवाननिहारीकोसेनै॥हरि

स॒
सा
१९८

106

पटपंकजमनहूकरकहिमनवि
नुवानकहूनवनै॥ जोगाजुगत
विसारवसेहैंग्रसीठोरनहीत्रा
वे॥ व्रजवासिनुसोंग्रपनोहेक
रिकुसमिलेनसंकोचवनै॥ त
हांनाहूनहांवेटेजोगीरहाक
मरसरहेगुनै॥ हमग्रहीरछ
समग्रपानेसगषसोंकोमेव्रव
नै॥ जोतुमजानतेतनपकरिपा
योमोनरहोतुमवरग्रपने॥
वारवारफिरतप्रकारनलेमोलो
नाहीवस्तकोमोलहनै॥ भ
षनप्यासनीदगईहरिविनप
तिसतनरहकीकोनगनै॥ मा

याओरछूटगईममताअधिक
ह्वैलोनोगावैनै॥ मोहरग्रान
ग्रानसोवल्लभमोहनकीली
लाअगानै॥ आवतहैकहोसर
शभुनहीनाहोंनममोनवैनै
१५॥१०॥ रागसारंग॥ कथोहरिगु
नहमचकओरी गुनसोमौं
नानेमोफेरैयहैवानसोकेरी
पैरिचलियोनेचलियेउवट
पटईपाई॥ चकउरीकीप्रीत
यहेफिरिगुनहीसोलपटाई॥
सरसहनगनगटहमारेदई
श्यामउरमोहि॥ हरिकेहाथ
परेतेंछूटनेओरननतनकछू

सू
सा
११

107

नाही ॥ ५ ॥ ९ ॥ रागसारंग ॥ ऊधो
इन नैननि नेमु लियो ॥ नंदनं
दन सों पतिब्रत लीना दरस
न नाहि दियो ॥ चंद चकोर स
न सो चान कैसे वंध्यो हियो
ऐसे ही रम प्राषि न इकटक
हरि सों प्रेम कियो ॥ जदपि जा
नि लै आपु जोग हि मधुवन रु
विन जियो ॥ हरि मुष कमल
अमी रस सरस न चाहत नाहि
पियो ॥ ५ ॥ ९ ॥ सारंग ॥ हरि मु
ष निरष निमेष विसारे ॥ ना दि
न नैन पल पट दिंग वार इन नैन नि
के तारे ॥ तजी सीष सव सास

स्त्रकीलाजाजीवनैंजारे॥ वृंद
टचरछाडेवनवीथन्नअंगअंग
रहूउचारे॥ महूसमाधहूपकवि
कागनटकनैंटरतननटारे॥ तिन
कोंवीचविचनकरिवेकोमा
नपितापचहूहारी॥ कहूनस्तन
नसमुफतमहिंघोऊधोववन
नमारे॥ सूरदासपहूटकनमा
ननलोचनहूटीहूमारे॥ ५२॥
राग सारंग॥ श्रोरसकलअंगनिते
ऊधोश्रांषहिंअनहिंउषारी॥ अ
नहिंपिरानसिरातिनहारिविनु
अनेकजतनकरिहारी॥ मरा।
नोवनपलकोचहिंलागनवि

रहविकलभईभारी॥ अतिग
ईविरहपारदरसविनुनिस
दिनरहतउचारी॥ सुनिअलि
अवपलानसलाकैकैसहि
सकतनिहारी॥ सरसअंन
नअोजदवसरसआवनहरो।
हमारी॥ १५॥ २१॥ रागसारंग॥
विनगुपालवैरनभईकुंजै
तववैलतागतिअतिसीतल
अवभईविषमज्वालकीपुंजै
वहतविथाजमुनाषगवोल
तविथाकमलफूलनअलि
गुंजै॥ पवनपानघनसारस
जीवनदधसुतकिरनभांनभ

रखुजै॥ ऊधौ यह कहियौ माय-
वसौं मदनमाग विरहन करी
लजै॥ सूरदास प्रभु कौ लों
नोहन रंग इक रंक नि रषन म
पथजै॥१५॥२२॥ धनासिरी॥ ऊधौ
कैसौं गाषौ पनैंन॥ समरिसमि
रिगन श्रुथिकनतपन हैं समि-
रैन मारैवैन॥ ईन्नु मम मोहरव
दनं इंदके सादर क्रमुद चकोर
परमन्तृषा विन्नु जलद स्याम के
जैसौ करिचान क मोर॥ मधुप
मराल सपद पंकन कौ गन-
विलास जल मीन॥ चक्रवाक
जैसैं दिनकर के सषमनागु र-

लीन्नाधीन॥ सकललोगसनो-
लागहै बिनदेषेबहुरूप॥ सुर-
स्यामकहु बिकैसो बिसरतहै न-
घसिषअंगअनूप॥१५॥२॥राग
केदारा॥ ऊधोअंषियांअनिअनु-
रागी॥ इकटकमगजोवतअ-
रुरोवतभूलहुपलकनलागी
बिनपावससकररापीदेषनहीं
बिटमान॥ अबधौकहाकियो
चाहतहौ छाडैबिनरसज्ञा-
न॥ नुमहोसषास्यामसुंदर-
केजानतसकलसभाई॥ जै-
मेमिलैसबकेस्वामीसोइक
रौंउपाई॥१५॥४॥रागबिहागडा॥

मधुकरसनेलोचनवान॥ रो
किरोषेअंगअंगनननऊडिउ·
डिजान॥ ज्योकपोनवियोग·
ब्याकुलजातहैंननिधाम॥ जा
नयोहगफिरनआवनविना·
टसनस्याम॥ संहिदैनकया
हपलहैकियेघूंघटओट॥ खा
नसुनज्योंजानकितहूंनिक
समननगफोट॥ श्रवनसुनि
नसरहतनहूंकोमनरहतनह
रियान॥ रहतरसनानामस
डिरढिकंटकरगुनगान॥
कछुकदेहुविभागइनको·
मोंसवेपलेन॥ सरस्यामवि

नाविलोकोनैननचैननदैन॥१
१५॥धनाश्री॥अषियांअवला
मीपछितामनचमोहनदरि
चलेमथुरीनचकौटीनैना
न॥ पंथनचलेसंदेसनआवे
धीरनधरैनप्रान॥जादिनतै
केविछुरेनंदनंदनअंगअंग
लागेवानऊधोअवनमजाइ
सूनावहूआवैसारंगपान॥सू
रदासचातकभइगोपीअंन
गनिकीजान॥१५॥२९॥राग
ला॥ऊधोकौंतिसनवहूने
हू॥हमरेहूदयआननंदनंद
नचरचिकीनेगेहू॥पकरिव

मगरगाइउहावननहांसव
रस्योमेह॥हरउठाईकामरी
मोहनतिजकरमाम्योनेह॥
स्रवहमकौलिषलिषपटव
नहैनोगजुमननुमलेहू॥
मूरदासविरनिकौनीवेव
उसनापतपहू॥५॥२१॥राग
बिलावल॥कंकननेभुजछाडु
भई मधुवनचलनस्योमई
रुथोश्रावनश्रवधजुनिकट
दई॥पतियांलिषनविरहश्र
निव्याकलकागभयोनीर
मई॥हरिसौवचनकहोनम
रुयोहरिकीसरननितनित।

सू
सा
५१
॥

नुगाई॥ प्रनतिगोरमनावनसं
करनिसवासवसुरिगननग
ई॥ सरदासप्रभुनमरोमिलन॥
कौमानोवेसीमीनहूई॥५१९

रागमलार॥ ग्रवब्रजनाथनंदकु
मार॥ धरैजानग्रजानमचवा
करीगोकुलग्रार॥ नैननलट
निमेघदामिनिग्रंसोवरषन
धार॥ दरसरविससिदुरोथी
रनस्वासपवनग्राकार॥ उर
जगिरिमैंभरनभारीभम्मका
मग्रपार॥ गरजवियोगवानी
रहनग्रथार॥ मधुपहरिसोंजा
इमथुराचानकहौंकिचार॥

सबनिसत्रुसथामसबैहौंसमा
लेहुसंभार ॥१५॥२४॥ रावयनाति
री॥ हमकोंतुमविनसबैसत्त
वन॥ कहियौमधुपचतुरमा
धवसोतुमहोसषावहावन
माकोननहरिहैहोदीनसु
निकुलसरनागनदीनी॥ सो
ईमारनकरवारमारकरहू
मकोंकानिनकीनी॥ काटि
सिंधुनेसिवसिरसोंषोंगुनह
गारकीनाई॥ सोससिप्रगट
प्रधानकामकौंबहुदिसदेन
उहाई॥ अमरनाथअपराधहू
माकरिपीठदोकमकरायो

सोअबईद्रकोपजलयसैलैब्रज
मेरपराछायो॥ पछ्छरछ्छसिरा·
यातिसिषिनिकोइहिविधिद
ईवराई॥ तिनअबबोलछोलि
ननराहोउपलषोलकीनाई
मृगमदमलयमेलिजलक·
र्दमनोउरवासवसायो॥ सो
ईमारन्हतिनवंसनकोंसगा·
लिवायेल्यायो॥ वछ्छयोरम
तिसोछविब्रजपतितिनहीके
पननायो॥ परोजोवेलला
टरेषसषमेटइकारवनायो
कोनकोनसोंविनकीजेक·
हीतिनककहिआई॥ ॥

सूरस्यामअपनेयाब्रजगाकीरहि
विधिकानचराई॥१५॥३०॥रागसो
रठ॥ऊधोनंदकोगोपालेगोंसों
गयोत्रिमज्योतोर॥मीनजलकी
प्रीतकीनीनाहिविनहीम्रोर॥
अवकेजोहमदसपावेंदेहिला
षकरोर॥हीराहाथनपरनस
त्तुरहीसमुदक्रकोर॥१५॥३१॥
रागकेदारा॥ऊधोमथुराहालेना
हू॥आनहरैअवनलोचनकी
मेटोगरकोदाहू॥बुधिवलवव
नमहानवाहूगाहिविरहसिंआ
वगाहू॥नीरलगावहूमधुवनके
तटचंदनमैनेगाहू॥देषनारस्वप

ऊबिनाकोसहिनसकतयहदाहू
जीवनजन्मसफलकरिलेषेसुर
तुमनहिइछाहू ॥रागसोरठ॥ ऊधोहम
लायकसिषदीजै ॥यहतेजोगअगा
धतेनातोकहौकौनविधिकीजै ॥
तुमहीकहौइहांइननिनमेसीषन
हारीकोहै ॥जोगीजनतीरहोमाधार
मैंतिनकोयहमनसोहै ॥कहतनम
ननविपरीतलोकसेसेवकोऊध॰
हकहिहै ॥देषोयोअपनेमनसवरा
नतमेंहूरषहैहै ॥चरनअगमसंगाय
जेलेपनकोविभुनननमांफे ॥सू
रदाससोभाकोपावेश्रीधरीश्रीमे
।५॥३३॥ऊधोजोगसिषावनआगो॥

सींगीभस्मअधारीमुद्रादैव्रजन॰
नायपठाये ॥ नवकिनजोगक
हैंजोगोपिनसोंनवहरिरासरमै
ये ॥ नवकौंज्ञानउपदेसोनाही
नैवेअधरसरसप्याये ॥ मुलीरस॰
हूसननतसवगोपीसुतपतिगृ
हविसराये ॥ सूरदासमननिसंग
स्यामकोमनहरिहूतपछता
ए ॥ ८५ ॥ २४ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोहम
नातनतहरकीवतराई ॥ वारवा
रपहकहियअध्यानमपावनके
नवराई ॥ जोतुमकहतअगा॰
धअगोचरहरिसतनैसोंमनना
ई ॥ वाहरभीतरस्यामवरनते॰

सू
सा
११४

114

सुनियतनहरभलाई॥कोतुम
करतउकनयुपनीसोकैतु
मकहतनकहाई॥सूरदासप्र
भविनजनतरहैविनपावकहो
लाई॥१५॥३५॥रागसोरठ॥ऊधो
औरैकाजभए॥नवनेदहरव
जछ्याडिमधुवरीऊवधाम
गए॥कैवहप्रीतिरीतिगोकु
लवसइषसूषसवनिरवाहन
यवपरहीगिरनवियोगादेहरइम
सूननकामदेदाहन॥नहीं
सारथतहांमगुनसावरोनि
गुनकपटसनावन॥सूर
सुमिरिव्रजनाथयग्रापने॥

रतनपरेषोश्रावत ॥ १५ ॥ ३८ ॥ राग
सारंग ॥ ऊधोहैंश्रागेतेमारे ॥ नम
देषतननश्रधिकनरनहैंश्ररु
नैननिकेतारे ॥ श्रपनोनोगसि
सिटिकिनराषोइहांदेनझारे ॥
सोकोलोश्रपनेमुषकरिहैंश्र
पनैफलकोंषारे ॥ हमरोगिरि-
धरकोसुनामवलपसोकोन-
इषारे ॥ सूरदासहमसवपके-
हैकेसवषोटेषारे ॥ १५ ॥ ३९ ॥ राग
सारंग ॥ ऊधोनेकहूचनरकहावत
मेनहिनाननपीरपराईहैसवंत
ननावत ॥ नैसीमीननीरकेवि
छुरेकोकोरिजतनजियावत ॥

प्यासेप्रानजानविनजलनिहि
सुधासमुदवनावत॥ हमविर
हनीस्यामसुदरकेतनमनिर.
गुनहिगहावत॥ जोगभोग
रसरागसोगसुषनातेनननसु
नावत॥ पहरामपुपसमनम
वपरहरवदनकमलसभावत।
सोवतनजागतसुपनरैनदिनवद
सूरतमनध्यावत॥ कपटसंदेस
नेदनेदनकेकहिकहिरुचरप
नावत॥ कूरकुटिलकपटीवि
नश्रनसूरदासकविगावत॥ ५

रागसोरंग॥ कहियोनासोंजोहोई.
विवेकी॥ पनोश्रलिगनहीकेस

गीअपनीवानकेटेकी॥ ऐसी
कोहालीवेहीहैनैसोमूढ़
फुरावै॥ फूटीवाननषफटकै
नेकननोहाथनआवै॥ ऐसी
वानकहौंतुमऊनसोंजोनहि
जानैवूफै॥ सूरदासनंदनं
दनविनदेषैऔरनसूफै॥५५॥
रागमारू॥ ऊधोजोतुमहमैवता
यौ॥ सोहमनिपटषटपटीक
रिकरियामनकोसमुफायौ॥
जोगजाननवाजितेलिषिकहिति
नहूंसोंलिवलायौ॥ भटकिफि
रौवोहनकेषगलौंफिरिहरी
हीपैआयौ॥ हमकोंसवअनहि

स्व
सा
१११

116

नलागनहैतनमभवहिनहिवना
यौ। सासलतामालहामकि
येनेकहाअगनमचपायौ॥अव
केनोसोईउपदेसोईउपदेसोजि
हिजियमाइजिवायौ॥वारिक
मिलेसारकेप्रभुकौंकरौंआप
नोभायौ॥१५॥४॥ऊधौवचन॥राग
सारंग॥यहसंदेसकह्यौहैमाधौ
करिविचारजियसाधनसाधौ
इंगपिंगलासुषमनाचारी॥
महजनभवमेवसनमुरारी॥अ
लभावकरिसवमेदेष्यौ॥अ
लषनिरंजनविनहिंपेषौ॥इ
कचितओरएकमनलाई॥

नैन मूंदे अंतरगत ध्याई ॥ हृदय क
मल मैं ज्योति प्रकासी ॥ सोई अच्यु
त अविगत अविनासी ॥ इहि उपा
इ विरहा न मन रहिहो ॥ जोग पंथ
क्रम क अनुसरिहो ॥ यह संदेस
कह्यौ गोपाल ॥ सुनि विलषी
सब ही ब्रजबाल ॥ रे मधुकर ले
पट अपनाई ॥ ऐसे वचन कहे क
हाई ॥ श्री हूलवन भवन विराजै
नटवर भेष सदा हरि साजै ॥
रास विलास करन वृंदावन
विच गोपी विच कान्ह स्याम
घन ॥ अलि आपै है जोग सिषा
वन ॥ थकिन सषी लागी सि

सू
सा
॥८

117

रनावन॥ औरीगीननजोहरिकों
गावै॥ परमभक्तहरिकीसोपा
वै॥ सूरजोगकीकथानभाई॥
सदाभक्तगोपीननगाई॥५५॥ष
गोपीवचन॥रागसोरठ॥ प्रेमभक्तिर
हितनिरसजोगकहागावै॥
निठुरवचनदीननसोंकहेकु
हापावै॥ कमलनैनस्यामसु
दरहेसो। नेईकोंसंदनकहित
कौनजाततेरीम॥ जिनके
नमसषासाधवातकहैं
तिनकी॥ सोसनेहाम
प्रेमकथादासीहै ज
नकी॥ ॥ ॥

निरगुनअविनासीमनकाहे
कोभाष्यौ॥सूरदासजीवन
कनकानूकहाराष्यौ॥१५॥४
रागमल्हार॥हमारेहरिहरिल
कीलकरी॥मनवचकर्मनं
दनंदनुउरयहदृगकरिपक
री॥सोवनजागतसपनदिव
सनिसिकानूकानूनकरी॥
सुननजोगलागतहैऐसोजौं
करईककरी॥सोईव्याधिलैअ
येऊधोदेषीसुनीनकरी॥य
हलैसूरनहानमअरपौजि
नकौमनचकरी॥१५।४२॥रा
गसोरठ॥ऊधोमननभईदसबी

स॰
सा॰
११८

118

स॥ एकवहूतोगपोहरिको।
संगकोअरापेईस॥ इंद्रीसक
लसिथलभापववितमेंहो
विनसीस॥ आसालागेरहेत
सासाजीवहूकोटवरीस॥के
थोनानकुकआपेहोंदेनकों।
करिसीस॥ सहमारेनंदनेट
नविनश्रोवनहोनगदेस॥४४
रागनट॥ मधुकरमामहमारेई
स तिनकोध्यानधरननिसवा
श्रीरेनिवेनसीस जिगनजाइने
गउपदेसोतिनकोमनदसवीस
पकेमनपकेवहसरावितवनिविन
दिनतीसकाहेनिरगुनज्ञानआप।

गोविंत

किनउरनषीस॥सूरदासप्रभु
नंदनंदनविनुश्रौरनहमरीगीस
रागसारंग॥यहगोकुलगोपाल
उदासी॥जोगादकनिरगुण
केरूधोतेसववसईसपुरका
सी॥जदपिहरिहमनजीश्रना
थकरिनदपिरहतचरननिर
मरासी॥श्रपनीसीनलनार
हिनकारनजदपिविधुभयेयो
गहगिरासी॥विदिश्रपराध
जोगलिषपठवतप्रेमभक्ति
तेभयेउदासी॥सूरदासऐसी
कोविरहनमागेभक्तननेग्रा
नरासी॥५॥५८॥रागसारंग॥जिह

सू
सा
॥

117

मनमाधनचोरगर्यो॥ध्रुवकै
मेनिकसनकहिरूयोनिरखैहै
मैघ्रसो॥नहपिहैवेनसुदान
दनकेसेनातछुसो॥हाध्रुव·
नादवसितनृपकेदियनहै
मैनलगनवसो॥कोवसुदेवदे
वकीकहियनसोनानैनोवू·
कै॥सुरहमारेनंदनंदनविनुदे
घेग्रोरनसुकै॥५॥४०॥रागसा
रंग॥मेरेनीयप्रेमीयेव्रजवनी
छ्वारगोपालसोरजेंासवेनो·
लाजैननती॥कीनैकहाका
नकोमनकाछ्वारिश्रमोल
मनी॥विषकोमेहकहालो·

कीनेअमृतपककनी॥ मन
वचकर्मयहैअनमेरेचरन।
कमलसरनी॥ सूरदासप्रभु
हमनकारनतजीजातिम्र
पनी॥१५॥४८॥ रागसोरठ॥ ॐ
येनामविरहुननातमदास
कहुनसननघटधानरहुन।
हैहरिनजिभयेप्रकास॥ वि
रहीमीनमरनजलमागेन
जिजीवनकेआस॥ स्वातिवि
भाविनहिनजिनपपीहाव
रषनमरतपिपास॥ परमपं
ककोमलमैविरहनविधि
कियोनीरनिवास॥ राजवि

सु
सा
१२॰

120

रविसंतोहिमाननसमिसों।
महनउदास॥प्रगटप्रीतदस
रथप्रतिपालीभुजगायेवन
वास॥सरस्यामसोहछबन
गबैमेटजगतरपहास॥५
५१॥रागसोरठ॥कृपोनमब्रन
कीटमातिविचारे॥तापाछेप
हसिद्धिकथाविसतारी॥जि
हिकारनपठयेतुममाधव
सोईसोवजियमाही॥केना
कवैचविरहपमारयजान
नहोंकिधोनाही॥तुमतोव
नवसदाप्रभुकेसंगसनियत
विकटनरहहो॥नलब्रन।

अवलंभफेनकेफिरफिरा
हृतकेहृतहैं ॥ वहप्रभुसका-
नमनोहररचितवनकेसवि
मतेटारै ॥ जोराजुगानअरुभु
कपरमपदवामरलीपरवा
रै ॥ जाकेउरमैंवसतमनोहर
नहानकनिरगुनआवै ॥ सुरदा
ससोभजननवहाऊंनाहिंहृ
सरोभावै ॥ ५ ॥ ५ ॥ रागधनासि
री ॥ जोभटगोरीबजनविकै-
है ॥ सुरकेपाननकवदनेके
मुकनाहलदेहै ॥ दाषछ्लारि
कैकहूकनिवोरीकोअपने
मुषषैहै ॥ यहविवहारनिहा

सू
सा
५५

121

गेहयोपयोनलैहीरहै॥ न
हीलैनाहूनहीनैल्यायेउन
हीपैटसमैंहै॥ गुनिकरिसो
हिस्वरसांवरेकोनिरगुननि
रवैहै॥ ५५॥ ५१॥ रागसारंग॥ मधु
करसमनावहुसोवैरति॥
ग्रहोमधुपनिसदिनमरिव
तहैकान्हकवरप्रवसेरन॥
चिंतभुमरहीमकोहरसुरन
चपलहगानकीहेरनि॥ नन
मनसवहरीलियोहमारोव
सुरलीकीटेरनि॥ विसरस
नाहिसुभगभुजसोभापी
तांवरकेफेरनि॥ कहतव

नैकांयिकामरिझ विवनगा
इनकीछेरनि॥ नसम्रवीनहे
हमैवतावतम्रांषनमदिफर
नि॥ नेदकिमोरछारिकेलेहे
नेगइषनकेछिरनि॥ नहि
नहिप्रेमउदासमजनमुक
निपरोंकिनिकेरनि॥ महरासि
कविनुकौंजीवनहैंनिरगुन।
कहुनकोरनि॥ ५।५२॥ रागप्रभा
वती॥ ऊधोनोगेम्योगहमना
ही॥ प्रवलामारनानकहो।
नानैकेसीष्यानधपाही॥ तेई
मूरतनेकहनहोहरिमूरतनी
यमाही॥ पमवकथाकहकी

क्यौं हम मैं सनैन नारी ॥ अब
नही दिसि रनू टावरु गावन पङ
षकौन सहारी ॥ चंदन ननि
नन भस्म वना वन विरह अन
ल अतिदाही ॥ जोगी फिरत न
हिन गभले मोनो है अपमाही
सूरस्याम मारी न पल छुन न्यो
वन नेपरछाही ॥ ५८ ॥ पद ॥ राग
मलार ॥ नैन निंद नैंदन ध्यान ॥
नहों पहउ पदेसदे नैन हानि
गुन ज्ञान ॥ पानि पल्लव देष मन
अवध भई वें धान ॥ इते परस हा
वाडु कवचन नकैं रहे नतमा
न ॥ भक्तरी कोटक वेंड रुविश्र

वलोकनीसंधान॥कोटवार
नवक्रैनैनकटाछकोटिक
वान॥कोटिवंइप्रकासमुष
ष्रवंतसकोटिकवान॥कोटि
मनमथवारिछविपरनिरष
दीजनदान॥स्यामननपरपी
तकीछविकहौंकहावपाग्रे
मनोनिरननीलवनमैंन
ङिनदेनीमान॥रासरसिक
गुपालमिलमथुराधरकाने
पान॥स्त्रग्रेसीस्यामविनुके
सेहरहकयान॥५॥२४॥राग॥
सारंग॥हरिहमसौंकबहूंनत
दासषिलाइपिलाइप्रधरार।

सू.
सा.
१२२

123

सकौं विसरन ब्रजवास ॥
तुमसौं प्रेमकथा को कहिबो
मानो काटिबो घास ॥ वहरी ता
न कस्वाद कहा मानो नैगगो
वानविलास ॥ सुनरी सषी व
हरि ब्रजपै है वैइ दिन वेई हुला
स ॥ सूरदास यह ऊधो हमकें
भयो नेरहो मास ॥ १५ ॥ ५५ ॥
रागधनासिरी ॥ ऊधो तुमही
अति बरभागी ॥ अपरस रह
त सनेह तगा है नाही मनि
अनुरागी ॥ पुरइन पात रहत
जल भीतर ता रस देह न दागी
ज्यों जल माहि तेल की गागरि

द्वंदननाकोलागी ॥ प्रीतनदे
मैपावनवोग्योहरुषिनरूपपरा
गी ॥ सूरदासप्रबलामतिभो
रागरुहिविरहीज्योंपागी ॥ ५८ ॥
धनासिरी ॥ ऊधोमनमानेकी
बात ॥ दाषछुहारेछाडिअम
तफलविसषपराविसषात ॥
ज्योंचकारकोदेकपूरकोऊत
नैअंगारहिषात ॥ मधुपकरत
घरक्करकादमैफंदनकमल
केपात ॥ ज्योपतंगहितजान
आपनोदीपकसोंलपटात ॥
सूरदासजाकोजासोहितता
कोसोइसुहात ॥ ५९ ॥ ५८ ॥ रागगौरी ॥

सू
सा
२४

124

स्रमकनपातनिहारीऊधो ॥
मैंवियोषउपनेनगालागतवे
लनवचननिस्रधो ॥ आपुनकें
उपचारकरौंअलिनवओरनसि
षदेहु ॥ वशेरोगउपनेहोतुमके
भवनसवारौंलेहु ॥ होंभेषन-
नानाभांतनकेअरुमाथवस
वैट ॥ हमकापरऊरपतिजिय
अपनेयहकलेककनषेटे ॥
मैंचीवातनक्कारिअलितेरीऊ
द्वीअवसतिहै ॥ सूरदासप्रुक-
ताहलनजिकेहंसनारकौ-
वुनिहै ॥ ५ ॥ ५८ ॥ सारंग ॥ ऊधो-
तुमनिजस्पामससषाई ॥ पाला

गोइह्रुइषवृषमौंगोसन्मषदेति
रिठाई॥ कौनेंरसपदाइतनेसो
वनसपनेपाइ॥ किहिंसोनेके
उतविरैपाइगंवायषिलाई
यामधुवाकेकौनेकेनकौ।
नैघासउठाई॥ किहिश्रकास
तेतोरनरैयांआनयरेयरिनाई
घ्रोलनिकेमालामलअपनै।
कौनैंगंधिवनाई॥ किहिका
गदकीनरनीकीनीकीनत
घोसहरनाई॥ कौनैअवलाने
नसहद्याकेनोगसमायल।
गाईं॥ उहिंउरआनरूपदेषन
कीअगतिउटीअनघाई॥ सुर

सू
सा
१२५

125

दासप्रभुब्रजनवनितनप्रेमक
हौनहिनाइ॥१५॥५९॥रागमल्लार
रेम्रलिननमकरमगनगाई॥
हमप्रभुरामनितनमदाखत।
कीनीरसकथानभाई॥केस
करिगोवरधनधाद्यौकेसे।
केसीमाद्यौ॥कालीदवनके
याकेसेसवककोवदन।
विधाद्यौ॥किहिविधिनंद।
महोनसवकीनीकिहिवि
धिगोपधाई॥पटभूषननना
भांतनकेजुवतीजननपहिरा
ई॥दधिमाषनभाजनकेसे।
करगोपसकललैआए॥न

बकीधातविवरथंगाकीनेनी
चतभेषमहाए॥ गरहूवनक
छमहाईस्पामविनुनरफल
वीननमास॥ सूसरनविषे
गनरटिरहिसायननाम॥१५
रुथोवचन॥ असावरी॥ मैंतमपे
अननाथपठायो॥ आनम
लानसिषावनआयो॥ आप
हीपुरषआपहीनारी॥ आप
हीवानप्रस्थब्रह्मचारी॥ आ
पहीपिताआपहीमाता॥ आ
पहीभगनीआपहीभ्राता॥
आपहीपंडतआपहीग्यानी
आपहीराजाआपहीरानी॥

सू
सा
१२९

126

आपुहीधरतीआपुहीआका

स॥ आपुहीस्वामीआपुहीदा

स॥ आपुहीग्वालआपुहीगाई॥

आपुहीपुचरावनजाई॥ आ

पुहिभौंरआपुहीफूल॥ आत

मज्ञानविनानाजगभूल॥

गोविंदकहूजाननहिकोई॥ आ

पुहिआपुनिरंजनसोई॥ इ

हिप्रकारजाकोमनलागे॥

नामसुरननासैभ्रमभागे॥

जोगसमाधब्रह्मविनलाव

हू॥ परमानंदतनवैसुषपाव

हू॥ गोपिकावचन॥ जोगीहोई

सुजोगवषानै॥ नवधाभक्ति

दासरतमानै ॥ भजनानंदहम-
अलिष्यासौं ॥ परमानंदसषकै
नविचारौं ॥ बतियांकहविहसि
कहनसयानी ॥ अषियांहरीकै
लोकलभानी ॥ आवरथ्यथा
नवेसरजानै ॥ विनदेषेकेसर
तिमानै ॥ पुनिपुनिचहैवहैस
पिआवै ॥ रूसरूपविनऔर-
नभावै ॥ नवकिसोरनिनैनैन
निहारौं ॥ कोटनोगवाछुर
विपरवारौं ॥ सीसमुकटकेर
लवनमाला ॥ कौविसरेवेनै
नविसाला ॥ मृगमदमलय
अलकत्रुचवारे ॥ उनमोहनम

स
सा
१२

127

नहरोहमोरे॥ भ्रकुटीकुटिलना
सिकागाजै॥ अरुनअधरामुर॥
लीकरगाजै॥ दाड़िमदसनन॥
त्रितउतिसोहै॥ मृदुमुसकनि
जुवतिनमनमोहै॥ वंदचिवुक
कंठमनिमोती॥ हरिकरतरउर
पतिकीजोती॥ कंकनकिंकि
किनीपटकविराजै॥ गजगत
चालनूपुरनिवाजै॥ वनकी॥
धातचित्रननकिये॥ श्रीवछुन
चिन्हविराजतहिये॥ पीतव
सनछविवरननाई॥ नषसि॥
षसुंदरकुंवरकन्हाई॥ रूपरास
गवारनकोसंगी॥ कवदेषवद

ललितत्रिभंगी ॥ जोनमहिता
कीबातवहू ॥ मनकीइहिविधि
कानचढाई ॥ १५ ॥ ३ ॥ रागसोरठ ॥ ऊ
धोनंदकोगोपालसोंमोगयो
विनत्योतोर ॥ मीनजलकोप्री
तकीनीताहिविनहीऔर ॥ ऋ
वकीजोहमदरसपावैंदेहिला
षकरोर ॥ हीराहाथनपरतस्या
मनरहीसमुवककोर ॥ १५ ॥ ३२ ॥
रागकेदारा ॥ ऊधोमथुराहीले
जाहू आगनहरौभ्रवनलोचन
कीमेटीडरकोदाहू ॥ वुधिवल
वचनहाजवाहूगहिविरहसि
धुयवगाहू ॥ नीरलगावहूम

धुवनकेनेटचंदननैनैनेगाहू॥
देषेनाजूपछ्कविनोसाहिनसक
नयहदाहू॥जीवनजन्मसफ-
लकरिलेषेसूरजमनहिंउछाहू॥
रागसोरठ॥ऊधोहमलाकसिष
दीजै॥यहतेजोगअगननेना-
नौकहौकौनविधिकीजै॥न
मैंहीकहोहहाहननिनमेसी
षनहारीकोहै॥जोभीजनहो-
मायामोतिनकोंपहमनमोहै
कहनसुननविपरीनलोक-
मैसबकोऊपहकहिहै॥देषौ
धौंअपनेमनसबजननमहू-
इपहैहै॥चंदनअगरसंगंघ

नैलेपनकोविभूनननमोनै
सूरदाससोमकैगापावैश्रंषि
श्रंधरीश्रंगनै ॥५॥२२॥
ऊधोजोगसिषावनआये ॥ सीं
गीभस्मश्रधारीमहादेवनना
षपठाये ॥ नवकिननोगक-
हौंगोपिनसोंनवहीरासर-
माये ॥ नवकोंज्ञानउपदेस्यो-
नाहीनवेश्रधरामस्याये ॥ म
रलीसहस्रननसवगोपीस्हन
पनिरहदविसराये ॥ सूरदासमन
जिसंगस्यामकोमनहिंरहन
छेनाय ॥ ५॥२४॥ रागसारंग ॥ ऊ
धोहमजोवजहराकीवतराई

सू
सा
११९

बारबारपहकहिसुध्यानमण
वनकोमनबहाई॥जोतुमकह
तसुगायसुगोवरहरिसन।
मोनजाई॥बाहरभीतरसा
मवरनतेसुनिपनहुभलाई
कोतुमकहतउकनसुपनी।
सोकेनमकहतनकहाई॥सुर
दासहमाविरहमरतहैबिनर्प
वकदोबाई॥ ७॥२५॥ राग सा
रंग॥ ऊधोमोरेकानूभए॥न
वनेयदबनछ्वाडिमधुसुनी
ऊबजाधामगए॥कैवहश्रीति
रीतिगोकुलवसरपषसषसव
निरवाहन॥सबयहगरिन।

वियोगदेहहुमसूननकामदौ
दाहन ॥ नहंसाबारथतहंसग
नस्यावरोनिरोनकपटसूनाव
न ॥ सरसमिरिब्रजनाथआपने
करनहेंश्रहनेननिकेनारे ॥ श्र
पनेनेगासिमिरिकिनराषी
इहंदेनकनङारे ॥ सोकोनो
श्रपनेसुषकहिहेंश्रपनेफल
कोंचारे ॥ हमरेगिरिधरकोस
नामवलपसोकोनउषारे ॥ सू
रदासहमसबपकेहेंवेसब
षोटे ॥ दनगोपालहिकोन
मिलावहु ॥ ऊधोवचन ॥ नाकेरू
पवरनवपुनाही ॥ नैनसूंचे

वेतोमनमारी॥ हृदैकमलमैंनौ
नविराजै॥ अनहदनादनिरंतर
बाजै॥ इडापिंगलासुषमनाना
री॥ सहजसमुंमैंवसतमुरारी॥
मातापितानारीभाई॥ जल
थलघटघटसौंसमाई॥ इह
प्रकासभवउसतरहरिहै॥ जेभा
पंथकमक्रमअनुसरिहै॥ गोपी
वचन॥ हमव्रजवालगोपाल
उपासी॥ ब्रह्मज्ञानसुनिआवै
हांसी॥ वनमैंमोगाकंहेनेला
यौं॥ ऊधवनाकुवरमाहिंगायो॥
सोमाथवतमहाघपडायो॥
स्यामसुहागकपाइदिषायो॥

हमग्रवलाठगीविवमग्रहेरी॥
सोठगहम्पोकेसकेचीरी॥रा
मन्नमसीतान्नुडराई॥भलीव
युग्रवऊवन्नापाई॥नवसिय
केवियोगडुषपायो॥नीरसन्ना
नकहालेकीजै॥नोगमोहदा
सीसिरहीमे॥ऊधोवचन॥परेउ
ल्लग्रविनासी॥त्रिगुनरहितग्रव
धैनवासी॥नहिदासीठकुरा
नकोई॥नहांदेषहूतहांवल्लहै
सोई॥ग्रमैग्रानोवल्लहैनाना॥
ग्रल्लविनाहनेनहिमानो॥गोपी
वचन॥घरीकरैग्रलिनोगसंग
वारो॥भक्तिविरोधीनाननमरो

कहांहोतउपदेसनितेरे ॥ जैनस
वसनाहीअलिमोरे ॥ हरिपथ
मोवैछिनरोवै ॥ जोगपंथपानी
नहिपीवै ॥ जवहरिआवैनवस
खिपावै ॥ सहनसारनिकंठल
गावै ॥ उसहवचनअलिहमैन
नभावै ॥ जोगकहाओठेकिहि
छावै ॥ ऊधोवचन ॥ सेकीजोहो
औरउपाई ॥ तुमरेदरसभक्ति
निजपाई ॥ ऊधोकहेयमवन
वाला ॥ जिनकेसरवससमदन
गोपाला ॥ तुमसमअगरुसैंदा
सनमारो ॥ जोगसुनाइनगान
निसारो ॥ औरगीतजोसुनैस

नावै ॥ प्रेमभक्तिगोपिनकीपा
वै ॥ सूरदासगोपीवड़भागी ॥
हरिदरसनकीठोरी ॥ १५९ ॥
गोपिकावचन ॥ रागधनासिरी ॥
ह्यांहरिन्नवहूकीरकरी ॥ सो
विनतैनैनोनानवरी ॥ ह्यांष
षपीवनवकीसंचाहौ ॥ सक
टविनाव्रनेह्यांहरिमाहौ ॥ व
कासरकौंरह्यानिपासौ ॥ व
कषरिषह्यांहरिवासौ ॥ हरि
नमाह्यांधेवकरह्यां ॥ देषोऊ
धौहमोप्रलंवनह्यां ॥ गावबछ
वहांहरे ॥ औरकियेहरिरक
पलभरे ॥ नेराषेरकसंवतहरी

सु
सा
१२२

तवह्यांब्रह्माग्रस्तनकरी॥ ३।
ह्नैहरिकालीउरगनिकासैं॥
लगेनैनगावनयनलसुवासैं
वसुहमारेहरिनहरे॥कहंलो
करियेंकौनकरे॥हमिहल।
यहांभूषेभये॥डिनपननीपै
टयेगये॥तिहिवहूभोजननखैन
नदिये॥हमसवहरिमिलिभोन
नकिये॥ह्यांगिरिगोवरधनह
तियाहै॥मघवातिसनेहमेउ।
वाह्यै॥सरदनिसामेरासरच्यौ।
ह्यां॥सोसुषहमपैवरननजानक
ह्यां॥हूपभासुरकौंह्यांसंवारो
भैमरकेसीह्यांपछारो॥

ह्यांहरिबिपलग्रंथिसिचावै॥क
ह्यांलौवरनौलीलागावै॥स्वा-
निकेरूपप्रेममगनभयो॥लो
टतपरज्ञानगध्रवनपै॥निरष
नब्रजनभक्तिसुषपावै॥सूर
प्रभुगनगुनिगुनिगावै॥५।९८३॥
ऊधोवचन॥केदारा॥ गोपीसुनो
हरिसंदेस॥ गपसंगग्रकरम-
थुवनहमौकंसदेस॥रजक-
माहौवमनपहिरेयभुषनो-
हौगाइ॥ कुवलयाचानूरमुष्ट
कथानहिपैगिनाई॥मातपित
कोवंधछोरीवासुदेवकुमार।
गनदेनोउग्रसेनहिहौरानिजक

सू
सा
६३

135

रज्ञारि॥ कह्यौ उन्नसकोब्रह्म
वनज्जाशुविषयविकारे॥ सूर
पानीदईलिषिमोहि प्रहैगोपकु
मार॥ ९॥ ६३॥ गोपिकावचन॥ सारंग
रह्यौ उन्नसकहतकौनकेवाते॥
हैंकुर्धेउन्नससमुझनताहीपि
विरह्वनहींनाते॥ कोनूपभये
कंसहिमारयोकोवसुतेधेनव
नचारनगोपहेदकेसंग॥ वासु
रगानरननीकेआगामकारनेन
निगतपग॥ कोपुरनग्रविगतगु
विनासीकोविधिवेदअपार॥
सूरव्रथाकतबादकरतहे
ह्याहेतेऊमार॥ ५॥ ६४॥ रागनट

नमथलीफीरीकरहनखरैनस
मुझेहमाफिरिमछनहैवारप
कवहूहोंगाई ॥ कहूकिनमवा
नकियोचेटचढिसफलसा
केसंगा ॥ किहिनकरिहनकै
नानापटपहिरैग्रपनेग्रगा ॥ कि
हिकेवलयाग्रमरमेंवाहोंकै
नमलहतिनानै ॥ गग्रमैनवस
देवदेवकीकिनिवेरीहतिग्रा
नै ॥ काकीकरतग्रतिहानिस
दिनकौनैषोषपठाये ॥ किहि
मामहतिलियेजगतनसको
नमधुछाप ॥ माछेमोरचंद
ग्रहंगजावषमुरलीकलगाजै

सूरदासजनसुदाकोनंदनगोकु
लमाहिविराजै ॥५॥९५॥रागनट
फिरिफिरिकहासुनावत ॥ श्या
मकालउदिषेलनऊधोबरबर
माषनषात ॥ जिनकेवातक
हतहमनमसोंसोनहिंहमने·
हरा ॥ ह्यांहैनिकटजसोदंन
देषियतप्रानिमोर ॥ बालक·
संगलियेदधिचोरतषातषवा
वतडोलत ॥ सूरसीसनीचोकत
नावतअवकैनाहिकोलत ॥ ६
सारंग ॥ मधुकरकोमधुवनहि
गयै ॥ काकेकहेसंदेसोल्याये
किन्नलिषेपाटयै ॥ कोवसुदेवा

देवकीनंदननंदकुलवसहे
नागर॥ उनसोंहांपहिचानन
काहूफिरलैनैयेकागर॥
गोपीनाथराधिकावल्लभन
स्रमतिकुवरकन्हाई॥ दिनथ-
तिलेनदावनहूनीश्रनवलाई॥
कहियनहेनहमवनरसपा-
नीकरनश्रोरकेश्रोर॥ सूरस
पथकाहूभटकापकेभले
वहठोर॥ ५॥ ८॥ धनासिरी॥
ऊधोमोकरिकृपापांवधा-
रहरिसोंहीनमननाऊं॥ मै
नगाहिनमवैहिरहेहोंसुर-
लीसहसलानाऊं॥ सवहेस

सू
सा
११५

135

थारेवनगोचारनहोवैठेजस
गाऊं॥ निसग्रागमसिदा॰
नाकेसंगनावनप्रभुहिदिषा
ऊं॥ कोजानेइवथासंकोच
वसनुग्रनिकटनग्रावै॥ न
वपहुंचेदवैठेग्रनिदारुनस
षियनग्रानछुरावै॥ छिन
नरहेनंदलालइहाविहुनो॰
कोऊकोटसिषावै॥ सूरदा
सजोगाननेमनतेमनसाग्र
ननकहूनहिग्रावै॥ १५॥ ८८
ऊधोवचन॥ रागसारंग॥ मैव्रज
वासिनकेवलहारी॥ जिन॰
केसंगसदाक्रीडतहैंगिरि॰

गोवरधनधारी॥ कीनहूंकेव
रसाभयेरनकिनहूंकेसंगरा
नी॥ तिन्हकेसंगगायेगावतहरी
केअकहानी॥ किनहूंकेसंग
यमुनाकेतटवेसीटेरसनाव
न॥ सूरदासवलिवलिचरन
नकेयहसषमोहिनितभाव
न॥१८॥८९॥रागसारंग॥ होइन
मोरनकेवलहारी॥ जिनकेस
भगचंद्रकामाथेधरतिगोवर
धनधारी॥ वलिहारीवावासव
सकीवंसीसीसकमारी॥ सदा
रहतहैकरनस्यामकेनैकहू
होतिनन्यारी॥ वलिहारीवांग

नैनानकेउपनेजगतउनारी
नेहराहृदैरोहृतमोहनकैकव
हूंहरतिनवरारी ॥ वलिहारीकु
लसेलसकलनिहिंकरहृनका
लिंदकुलारी ॥ निसकावंश्रग
श्रालिंगनश्रापुनेहूंभईकारी
वलिहारीहृदावनभूमहिम
तैभागकीमारी ॥ सूरदासप्र
भुनागेपारनदिनप्रतिगैयो
चारी ॥ ५५ ॥ ५ ॥ गोपिवचन ॥ रागन
ट ॥ मधुकरनिनमधुवननव
देषो ॥ कछुकदिवसश्रारो
हांरहिकैननमसफलकरी
लेषो ॥ कहेनाइकरिहोउहां

विवरसराजकानकीवान॥ बालकुमारकिसोरनिरषसं
वरघरमाषनषान॥तुमनिर
गुननिरहितनिरंतरनिगम
वषाननतनीत॥प्रगटरूपकी
गमनोहरछाईकौनप्रतीन
श्रीसुकशिवविरंचिसनका
दिकसुनियतजाकोध्यावत॥
सोरषोईव्रजग्वालसुननिसंग
गोधनहूंदवरावत॥५॥१२॥
धोवचन॥रागनट॥अवतौचकि
तौवकिनभयोमनमेरो॥आ
योहोनिगुनउपदेसनभयो
सगुनकेहेरौं॥जोमैकसोजा

नगीताकोनहैसैनपरस्यौनैरो ॥
प्रतिप्रतानकछूकहननप्रा
वैहनभषोहरिकैरो ॥ निज
ननज्ञानसाकिज्ञाननिकरी
कैनोनेहरचनेरो ॥ सूरमयुपर
हिवलैमयुप्रीतोरिनोगाके
वैरो ॥ ५ ॥ ०२ ॥ नसूमतिवचन ॥ क
ह्यौनसूमतिकौश्रासीस ॥ न
हौंरहेनहांनेंदलानिलेनीवो
कौरवबीस ॥ मूसलीदईदोहवी
हूनभतिऊघोयरिलइसीस ॥
घरनोहूनउनहीसूरभेकोने
पासैजगदैस ॥ ऊधोवलनस
षामिलिश्रायेग्वालवालदस

वीस॥ अवकेअजकोफिरिवा-
सोबहुसूरदासकेईस॥१७॥
गोपिकावचन॥रागविहागरा॥
अपनेजियसरनकरातरीरा-
हियै। कथोइननीविनयर्स
मसेंसमपाईकेकहियै।
वोषवसंतकौचूकहमारीम-
रीतियमेंगहियै॥ अतिआरी
नअउनाथज्ञानकेउनिविचा-
रकेकहियै॥ एकवेरदीजेद-
रसनप्रभुदुषकीरासहिर-
हियै॥ सूरदासप्रभुबहुतकरे
कहोवचनलाजनिरवहियै
सोरठ॥ मधुकरस्यामसहोले-

स्रावहु ॥ ब्रजजनचातकम्रा
तपियासेस्वानव्रूंदवरषाव
हु ॥ ह्यांतैनाईविलंवकसेन
नहमरेदस्रासनावहु ॥ सूर
दासप्रभुग्रानमिलावहुसं
तनिमंनसुपावहु ॥ ५५ ॥ ७५
विहागडा ॥ ऊधोपालागति
होवहुरीकिंइहिव्रजकरीहुं
भावरी ॥ तिसिनतीदभोन
ननहिभावैमगजोवतिभई
हृष्टिफोवरी ॥ वहैहंदावन
वहैकुंजनवनवहैनम्रनाभा
भईस्रुभगसांवरी ॥ एकसं
म्रचितकछुनभावततरटन

हितन्योंफिरनबांवरी॥ चल
नमकनपराथरनडलनउ॰
हिवैठनआवननांवरी॥ सूर
दासप्रभुआनमिलावहुन॰
गमैंकीरनहोईगावरी॥ ५
धनासिरी॥ नमकहियोनेस
गोकुलआवै॥ दिनदसरहे
सभलेकरीपेअवजिनग
हरलगाहै॥ नमबिनकछु
नसुहायआनपतिकानन॰
भवननआवै॥ अतिबिलष
तगऊनचरातिनबछरनप
यनपिवावै॥ देषनआपनेआ
षनऊधोहमकहिकहानेगा

वै॥ सूरस्याम विनतीऐसे न-
हि नहरिहिं मिलिसषिपावै
रागमलार॥ ऊधोहरिहैहैंहित
हमारे॥ मैसोनांइकहोंक-
रुणाकरिपइषसवैहमारे॥
नतन रवारग्रहसवासपवन
हैविरहदवदयै दवनारे॥ ना
हिसिरातननानद्वारहैस-
लगिसलगिभपकारे॥ नर
तिपृथ्वेमइमगिनलसीचति
वरषिवरषिचनहारे॥ जोसी
वैवहतभातनननकरिनो
परानउवारे॥ केरकपोन-
कोकिलाषंजननवयकविपो

सू
सा
१३९

131

गविराजै ॥ कौनजीवैरहिमो

नसूरप्रभुवनकेलोगविचा

रे ॥ १५ ॥ ३८ ॥ विलावल ॥ कधौ

आपहैतकियेंरहियो ॥ इहि

व्रजकोयोहाजिनकसोम

वैस्यामसोंकहियो ॥ ननकी

व्यथाकहाकहोंतुमसोय

हहमकोंहैसहियो ॥ किधौ

करौंपहासतिपरिननहीयो

तिहारोंचहियौ ॥ देषनान

आपनोइहिआविनुदावान

लननदहियो ॥ ननजरिवा

नहियो ॥ ननजरिवानहि

नानसूरप्रभुनलनैननिकौ

बहियो ॥ १५ ॥ ७१ ॥ बिलावल ॥
ऊधोदेषनहेहमेसब्रजवासी
लेनउसासमैनैननलषनस
मिरिखमिरिग्रविनासी ॥
भूलिनउठतिनसोटाननकी
मसोदाननकीमनोभवेगम
गसी ॥ छूटननहीप्रानकेजे
घटकेकेठिनप्रेमकेफांसी
श्रावननहीनेदमंदिरमैंभ
योफिरनवनवासी ॥ परम
मलीनदीनदुरवलभयेसा
मविरहकेत्रासी ॥ गोपीग्वा
लसषावलिकसबकहूत
सनिपनिहांसी ॥ काहेदि

योस्त्रामसुषमैडषकपटी·
कान्हविसारी ॥ ५४ ॥ ८०॥ रा
गकेदारा ॥ सवनिनवांधनेतै·
रगाहू ॥ ह्रयदधिमाषनमनो
हरिसारिदेहुरुषावहु ॥ सद
वैटवोघरहियोवननदैहैना
न ॥ पलकहूभरिउघनदैहो
राषिहौराषिहौनोग्रान ॥ स
वनिहारोकहोपरिहैवच·
नमाथेपान ॥ परमचतरस
नानचिनदैनाथलीजैमान
श्रवनकवहूधेंवपरिहैयदह
मारोवोल ॥ किंकिरननकी
लाजपरेश्रवनसवसकरोक

स॒
सा
।४॥

141

लोल॥ समुकिनिनग्रपरा
धकरनीनारिनवतिनीव
वहूतदिननैतिसरहीहैग्रो
षिदीनैसीव॥ मनसावा
वाकर्मनाहीराषि॥ स्वरग्र
भुपद्वोलिदिरदेसमरा
नासाषि॥१५॥८२॥रागसारं
गा॥तिहारीप्रीनकिहैानरि
वारि॥ हृष्यिावितिहानी
नुपहिलैगाइलसवग्रनना
रि॥परीसमारषेनहूदाव
नरनहूनमानीहारि॥ वा
ऊलविकलसंभारतछि
नछिनवदनसयानिपिवा

रि ॥ नवबढ्कृपाश्रवलोगव
ढायोमनमनलगयोगुहारि ।
हृदासप्रभुरह्योननकी
यसोननझोरोमारि ॥ ५ ॥ ८
केदारा ॥ लोचनचातकनोहे
वाहन । श्रवयिगयेपावस
कीश्रासाकमकमकरिति
रवाहन ॥ सरेनासिंधुश्रने·
कश्रेसह्रषपिनपतिसनन
सनेह ॥ पसवनलनउनाथ
नलदविनुश्रधिकदहतदे
देह ॥ नवलोनहिवराषतन
नइपरनवचनसामसरीर
नोयहनह्रषानाइकोसहरनु·

142

आनओसकेनीर ॥ ५ ॥ ८ ॥
जैतसिरी ॥ अवनवसकाकेवोल
सहैं ॥ इनलोभीनैननिकेका
रनपरवसभईरहैं ॥ लाजना
पिसरगाईसुथिनहींतनकी
अवनंदनंदवहैं ॥ मेरेजिय
ऐसेआवतिजमुनाजलजा
इवहैं ॥ अवकेवेरमिलेनंद
नंदनपहइषफेरकहैं ॥ सा
सइषऔसरसरूपप्यारीनेह
केआसगहैं ॥ इकवनछूटि
सकलवछूट्यौकहनसा
मलहैं ॥ सूरदासप्रभुतमरे
वासकोंइहिउषप्रियिकरहैं

धनासिरी ॥ ऊधौ यहै विचार करैं
कित न गये भलो मानो गोकै
बन छार रहौं ॥ कानन देह·
विरह दौ लागी इ ज्ञानी बनै
बैनै स्याम बचन प्रेम कमल ख
षमुरली इहृपो ॥ चरन सरोव
रमाहि मीन न मन रहत पकर
सखीन ॥ नम निर्गुण वा रूप
रज्ञा रतन स्त्र कौं न पटरीत ॥
रागकेदारा ॥ हमैं नो श्रत नेही·
सोकान ॥ कैसे हूं का कम·
लैनैन कौं लै आवहु बन आज
श्रोर श्रनेक उपाइ तिहारो करो
सकल नगराज ॥ कैसे वैनि·

सू
सा
१४३

143

वहनप्रवलनियेककिनजो
गकेसाजु॥नषसिषसुभ
गस्यामदासनविनजीव
ननमहूँयानु॥सूरदास
प्रभुरहतकोनविधिवदन
विलोकेवानु॥१५॥९९॥रा
सारंग॥लेआवहुगोकुलगो
पालहि॥पाइनपरिकोंहू
विनतीकरिकलवलिवा
हुविसालहि॥अवकीवेर
दिषावहुनैननिदीनवंधव
नमालहि॥गाइनिगननगे
पगोकुलकेसिषवनसीष
तावेनुरसालहि॥नदपिम

हागानसुषसंपतिकौमहानै
सुकनामनिलालहि॥ नदपि
सुरमनयुतिललचनहैसुष
सरलीडुवुबीकीमालहि॥५
धनासिरी॥ गोपालहिलेआवहु
नमुनारि॥ अवकीवेरकछुक
हिरुधौछलवलअरुपारिपा
इ॥ इनकोनाइउरहम्योदीनो
नमैंहिपोसमुझाइ॥ निहिवि
नहैंषपलजुगाकीननकहा.
करैवनगाइ॥ नमसोकहाक
होहोमथुकरवनिपांवहूत.
वनाइ॥ गयेसरकेप्रभुकेनंद
कीसोहदिवाइ॥ जैसेकोऊ.

औरननजोनैननेमेलाउलिवाई
धनासिरी॥ सांरगस्यामसहिस्वर
तकराऊ॥ पोठेहोहिनदा
नेटनेदनऊचेठेरसनाऊ॥ श्री
षमगपवरषारिनुग्रापसव
काहूमनचाउ॥ हरिविनुब्रन
वासीग्रसेहैन्योंकरियोवि॰
नताय॥ तुमरोकह्योमानिहै॰
मोहनचरनपकरलेआउ॥ स्व
वकीवेरस्तोकेप्रभुकोंनेवि
ग्रानिदिषाउ॥१५॥ २९॥ गोपि
काऊधोअन्नरष्रसन्नम॥ रागनट॥ ऊ
धोकोसंदेसमनोकिनका
नेटे॥ कोऊआयोउहसनेनह

नेहसबबनसिधारे॥ बैदेबेनु
धुनिहोइमनोआयेघनअषा
ढे॥ थाईसबगलगानकेउ
थोरेछैनाईनाई॥ लेआई
बनबारिसबआनंदउरानस
माई॥ ॥ घरघरआरतीसाजन
तिलकरथिमाथेकीनो॥
कंचनकलसमंगारओरप
राऊमदीनो॥ गोपभीरअं
गनभईमिलिबैठेसबनान
नेलफारेआगेयरीहक्कनर
तिऊसगान॥ ऊमलऊमल
मकारऊमलऊथोकबिजा
ऊ॥ ऊमलऊंसबसदेवऊ

स
सा
१४८
145

सलदेवकीवलदाऊ ॥ प
ठीऊसलगोपालकीर।
हीसकलगाहिपाऊ ॥ प्रेम
मगानऊथोभईदेषनब्रज
कीभाई ॥ ३ ॥ मनमनऊथो।
कहीयोंनबूझेगोपालहि
व्रजकोहेतविसारयोगा।
सिषवतव्रजबालहि ॥ पा।
तीवांचनआवईनैनरहीजल
पूर ॥ देषिप्रेमगोपिनकोऊ
धोज्ञानगर्भभयोहूरि ॥ ४ ॥
ऊधोरहनऊनफेरिनीरनैननि
नहीमोआर ॥ हानीकथाअ
मोदवोलसवचोषसमोओ

मोउनमुनिजनध्यावहीतउ
नपावतपार॥ सोउनसीषो
गोपिकाहुतेविषयनि
कार॥ ७॥ सुनिकुधोकेवचन
रहीनीचैकरिनारी॥ मानो
मोगानसुधाग्रानविषजाला
जारी॥ हमअहीरकहाजा
नैंनैगाननगतकीरीत॥ नं
दनंदनजनछाडिकेकोलि
षमैजेभीत॥ ८॥ एकेअलष
अपारआदिअवगतहैसोई॥
आदिनिरंजननामताहारी
कैसबकोई॥ नैननासिक
अग्रहैनहांब्रह्मकोवास॥

सू
सा
४८

146

अविनासीविनसैनहीसह
ननोतपरकास ॥ ७ ॥ जोनो
पगाकरनहीकहाकोउष
लवांध्यो ॥ नृपैनैनसुपन-
हीवोरदयिकोनैषाय्यो।
लापगोटलेकहेनोनरदे
न ॥ ऊधोताकोनाउयहना
हिनसकैनैन ॥ ८ ॥ माया
नितग्रथपीनाहिहैलोचन-
नैसे ॥ नानीनैनग्रनेननाहि
स्फनननहिकेसे ॥ वृफो।
निगमबुलाइकेकहेवात
समुफाई ॥ आदिग्रननहि
जानियेकोनपिताकोनाष

जाकोमाई॥ ९॥ ऊधोचरला-
गीग्ररुषोरकहोमनकाहि
लगावे॥ ग्रपनोचरपरहरै
कहोकोषोवुफावे॥ मूरष
जाटवजातहेहमैसिषावन
जोग॥ हमसोंभूलीवहतनहे
हमभूलीकियोलोग॥ ९॥
कहूऊधोसतभावभावतो-
मोरमुषसांचो॥ जोगप्रेमर
सकथाकहेकंचनकेकां-
चो॥ जाकेपहरेहूजियेसचो-
ताकोनेम॥ मधुपहमारी-
सोंहतमैंजोगभलोकैप्रेम
प्रेमप्रेमनेहोइशीमनेपार-

स. सा. ४

147

हीयैयें ॥ प्रेमवेध्योसंसारप्रे-
मपरमारथलहियें ॥ सांचो-
निहचैप्रेमकोजीवनका-
तिरसाल ॥ एकनिहचैप्रेम
कोवैमिकोजवैमिलैगोल
हतगोपिनुकोप्रेमनेमरु
योकोभूलैं ॥ गावतगन
गोपालफिरनकुंजनमेंरू-
लैं ॥ छिनगोपिनुकेपगाय
ेपमनमागेनेम ॥ याईयाई
हुमभेटऊरूयोंक्योंकोप्रेमप
तिगवालपनापसबब्रजवा
सी ॥ यतिघरपावनभूमन
होंविलसैअविनासी ॥ ३पदे

१२

मनभायोहूनोमोहिभयोनंद
पतिपैवल्योकियेगोपको
भेस॥ १४ ॥ भल्योनंदउपतिना
मकह्योगोपालगुसांई॥ पक
वेरव्रजनजनारदेहगोपिनदिषरा
ई॥ वृंदावनसषछाडिकेकरा
वसेहोआई॥ कृपावंतहरिजा
निकेकथोपकरेपाई॥ १५ ॥
प्रभुजेव्रजनकोप्रेमनेमकछु
कह्योनजाई॥ रसभरेनैननि
नीरवातकछूकहतनआई।
स्वासमभूतलपरेरहेनैनज
लछाई॥ पोंछपीतपटसोंक
ह्योभलीआपनेगसिषाई॥

अथोवचन॥श्रीभगवानप्रतिरागय
नाश्री॥नवद्दोइहांतेनुगायो॥
नवव्रजराजसकलगोपीज
नआगेहैन्ननयो॥अनरोजना
ईनदवावाकेसवहुनसोथ
लिह्यो॥मेरीसोहमावकहि
अथोमैयाकहोकह्यो॥वार
वारकमलमोहिश्रुनलेले
नमरोनाम॥मनोजकलगी
नषतवानकन्येौक्रमक्रा
सवलराम॥सुंदरपरमवि
चित्रसोभितयहमुरली
टेचाली॥लइउठारसपमानि
सुरगभूशीतग्रानिउरसाजी॥ ५५

स्
सा
५८

148

रागकेदारा ॥ माधवजेसबनो-
खनकोनेम ॥ मोथिमैंषटमा
मेटष्यौगोपिकनकोप्रेम ॥
हृदैतैनहिटरनटारेस्यामरा-
मसमेन ॥ प्रससलिलषवा
हमानोप्ररवैनेननिटेन ॥ वौ
रंग्रवलकलसकुचवरपानप
प्रवछाई ॥ सुमिरिनमरीश
गटलीलाकर्मऽहिहैगाई ॥ दे
ह्योहसमेनप्रपनकमललो
वनध्यान ॥ मरुनकोप्रेमदे
षेफीकोलागनतान ॥ ५ ॥ ९२
केदारा ॥ सवैघनवरवारपके
रीत ॥ जोऊकुषेनधेरयनवाढ

स
मा

149

नमोप्रभुतमरोशीन ॥ प्रेमप
रमविविद्रसयानीओरसव
नजगनीत ॥ ववनजोगकी
सननयकितभईओवारू
कीभीत ॥ पकैथरनगहीउ
टिहछकरिमेटिवेटकीने
न ॥ सोपभेषनिजरूपस्याम
लैरहीविष्णुरुनीन ॥ १५ ॥ ९३
रागसोरठा ॥ मायवन्नपरवज
केगोवोहार ॥ मेरोकरोप
वननंदकुमार ॥ पकग्वाल
गोस्वनहैरंगतपकलकुकर
लेन ॥ पकमंडलीकरीवेहार
नछाककवानइकदेन ॥ पक

ग्वालनटवरवपुलीलापक
मेंगुनगावन॥ वहुतभांतक
रिमैंसमुझाईनैकनरैमेंम्राव
न॥ निसिवासरनुरहतहैंएक
टकछिनछिननवननभीति
सुरसैवेफीकोलागनहैदेष
वहूसरीन॥ ५५ ॥ २४॥ नैनसिरी
सुनोस्यामवैसववृजवनिता
विरहनमारीभईबावरी॥ सू
रसैवेफीकोलागतहैववतिहु
रिनहूंलोकयागावरी॥ कव
हूंकहतहरिमाषनयोकोन॥
वैसयाकहिनगावरी॥ कव
हूंकहतहरीरूपलवांधोव

स्र
सा
१५

150

रवरतैलेंचकोरावरी॥कव
हूकदतव्रजनाथवमैवननो
वनमगाभईदहिफोवरी॥स्र
रदासप्रभुतमरेदासकोंग्रव
वहमृदनभईसोवरी॥१५॥१९
रागनट॥कहिवेकेनकछूस
कराषी॥त्रुडिविवेकप्रउमा
उश्रापनेमुषश्राईनेभाषी॥हो
पहुकहोतनपहरपकमैवपल
मेंाहिश्रनेक॥हारिमातिउरि
वल्पोदीनंद्भुछाउश्रापनीटे
क॥होंपटयोकनहीवेकानें
सटमरषजोश्रपनो॥नेमेपढ़ं
ववहूनेवातनकीउहोंनाहूनो

नानौ ॥ श्रीमुषकेसिषकेत्रं-
यादिकनेसबभएकहानी ॥
पकहोइनोऊनरदीनेस्राम
मछीउफानी ॥ ७ ॥ ९८ ॥ रागसा
रंग ॥ नाहिनेश्रवसपिरहीहि
पै ॥ स्रमोस्यामराधिकास-
षीसबव्रजगावतनननकियै ।
सैनसोव्रुनषलिषतिकिसल
यनिसबनश्रवनछियै ॥ कर
केकनकोकिलाउरावनवि
नमुषनामलियै ॥ ससिसंका
निसिजालनकेमधिबसन
वहाइसियै ॥ दिसिदिसिसी
तसमीरहिरोकनअंबरसो।

स.
सा.
५५

रहिये॥ मृगमदमलयपरस
ननलफलजत्रविषविषम
प्रिये॥ जोनरनेपरमिलनस्र
प्रभुतोन्यायेनजिये॥ ५५॥ ९०
रागनट करीनपरनदृरिमोपे
ब्रजकीचात॥ पेष्यौहमसबे
लीतारीनरहरसनकोप्रक्रला
न॥ नवनमहेनबचनफल
फलेनेनहोप्रवगुहपनपात
कोउतिनादिकपोतककलाह
लकरननहीउहिप्रात॥ गो
मृगनिकसिनिवाईहैनमष
प्रतिउषितनननहिपान॥
गोपिग्वालउस्वामहूनास

नविरहनालखकलान॥ सो
कलकेवहविपनकहाक
होनमविनहोनइनाथ॥
सुरदासस्वामीदरसनकर
नसरनदिनरात॥ ५॥ १८॥
सारंग॥ व्रजमेसंभ्रममोहिभयो
तुमरोसिषयोग्यानसंदेसो
सवेभुमलगयो॥ तुमहीसं
वालककिसोरवपुवरवर
हेप्रतिदेष॥ स्यालीपरचन
स्यामसमनोहरप्रदभुतननट
वरपेष केनककूपवालहे
दनसंगगाइचरावनजात
मेष्यापानदोहनीकाराकोम

चोरीमाषनषात ॥ नंदनंदन
श्रनीकलीलाहैगोपीविन
हिचराचत ॥ यहसबदेषीनै
नहमारेब्रजमनदेष्योभावत
नोसदेसकह्योमेउनमोश्र
पनोमोजियजानि ॥ उनमन
श्राइंदसोदीसोकह्योगावे
मान ॥ करोकपटीकूरना
मकहितनेचलनकह्यो
छिनमामोषटमासस्तरप
भेदेषतभूलिरह्यो ॥ ५ ॥ १५ ॥
बिहागरा ॥ हरिआईसोभलीर
नी ॥ मोदेषनिकोहैरहीराधि
कास्रटकसमरकोंदीनी ॥ न

नअतिकंपविरहअतिव्याकु
लउरथकीपीरवहूकीनी ॥
व्रतचलतगहिरंगरंगीरि
स्वेदसलिलभरभीनी ॥ छूटी
नभुजफूटीवयावलफटी
चकीकीनी ॥ मनोप्रेमके
परनपरेवायाहीपैपढिली
नी ॥ अवलोकनरहिभोति
उमापतिमनअहिमतिलई
छीनी ॥ सूरदासप्रभुकहो
लौंभररमामतिहीनी ॥ ९८॥

रागमलार ॥ सुतोस्यामयहवा
नओरकोऔरकोसमुफारक
है ॥ उहूहैदिसिकोअनविरहवि

सू॰
सा॰
१५२

१७३

रहनीकैसेकैजुसंदै॥ जब
राधातबहीसषमाधोसा
दोरटनरहै॥ जबमाधवहे
जातसकलतनराधाविर
हदहै॥ ऽभयअगनिडैद्रा
कीटज्यौंसीतलताहिचहै
पहिलेजानअगचंदनसी
सतेहोनउसहै॥ समाचार
तीतेसीरैकेपाछेकौनक
है॥ सूरदासऽहविकलबि
रहनीकैसेकुसषनलहै॥
१९॥ रागकेधारा॥ देषमैलोच
नचुवतअचेत॥ मनोकम
लससिआसर्इसकौंसक

तागा निन निरेन ॥ कहूं कंक
न कहूं गिरी मुद्द काक कहूंट
ड्रि कहूं नेत ॥ चेन निन हीत्र
की पुत री स सुफाई मैं वेन ॥
डार षरी १ कर टक नो वन कु
धउ स्वास निलेन ॥ सु दास
कहू सु पिन रहीन न वंथी
निहारी हीन ॥ ९०२ ॥ रागनट ॥
न मेरे विरह त्र जना थ गापि
का नैन निन दीवडी ॥ लीवी
नान निमेष कूल दोक पने
मान वठी ॥ वलीन सकन॰
गोकुल नव का लो मैं वप॰
लक पल वोरन ॥ ऊधउ स्वा

सुखमीरतनरंगनिनैननिलक
कनकहतोरत॥ कानाकीच
कचीलकियेपटश्रंजनसुध
रकपोल॥ रहेपयिकजनरू
सुतहाथकिहुस्तचरनसु
पबोल॥ नाहीश्रोरउपाइसो
पतिविनदरसनकीकीजे॥
श्रसुसलिलवूरितनसबगो
कुलसुरसुकरगहिलीजे
रागधनासिरी॥ अतिमलीनवृष
भानकुमारीहरिश्रमजल
भीज्योउरश्रंचलतिहिलाल
चनधुवावतिसारी॥ अधमु
षरहतश्रनननहिंचितवति

गाथगापैजैसेथकिनजुवा-
री॥ रूपैत्तुकरवदनअमुला
नैनोंनलिनीहीमकरकी
मारी॥ सुनिसेदेसवहसद
नमन्नकभंईकसंदेसहूजे
ग्रलिनारी॥ सूरदासकेसे
कविजीवैब्रजविनस्याममु
रारी॥ ९९॥ ४॥ रागविहागडा॥
विनदेसनेनास्यामप्रवीन॥
हरितुमारेविरहाधामैजु
देषीछीन॥ नम्मोतेलतंवो
लषैभरनंग्रंगावसनमली-
न॥ कंकनाकररदननारी
हाउभजवनलहीन॥ कह-

सू
सा
५५

155

तनकाजसंदेससंदरिगव
नसोननकीन ॥ लूटीलु
टावलिचरननरजकीगिरि
वलधीन ॥ नैनभरिभरिसज
लकीनेहूधिदृगधीन ॥ के
ववचनवोलअवैदेटपाव
ससीन ॥ फेरिरहीसभारभ
दृस्पोपरससाहसदीन सू
रहरिकेदरसकारनरहीआ
सालीन ॥१९॥५॥ रागकेदारा
भरिभरिलेनऊंडऊसवास ॥
सोवरेव्रजनाथनसविनउ
षितमननिराश ॥ अमित
पीरअधीरडोलनसुखिरि

न बिलास ॥ नेइ स्नेह भई इघ बद
रुन मिल किये रस रास ॥
निगम गाइ जन लोग निरख-
ज गाकर तिन पहास ॥ सूरन
म बितु बिकल बिरहन मरा-
ति दरसन प्यास ॥ ११९ ॥ राग
केदारा ॥ भरि भरि लेन लोचन
नीर ॥ बिना तुम सजन नाथ बि
रहन बिरह बिकल अधीर ॥
कमल दल रस आन राषन-
छिक चंद्र बीर ॥ जाल मनि
म मि किरन रोक न मल पमे
दम सीप ॥ हो इ स्हां नैम प्याम
आयो देषि मन मिन भीर ॥

सुरस्यामसैनानसोमिमेट-
मनमथपीर ॥१०॥ रागसोर
ठ॥ माधवनूनोगकोवोकु
मैयो॥ स्यामसुषबृद्धिवचन
सुथासमसनिकलूनकैयो
नवनवभावननंगमरोहयि-
सषिलेवनसुमैयो॥ नमलैः
कहैनानकोमारगपानीहे
सुबहैं॥ सकलसिंगारहार
रसमावमनुजनवनीतलहौ
वहोनपावोलिषिसुमटहौ
नहौ॥ मुहिम्रास्वर्णकयैः
लागनसुमैपैकेसेनानस-
हौ॥ सुरस्यामससनिमयानों

लैगरौ भुजग्रीवगहैं ॥ ९९ ॥

राग केदारा ॥ कहौं लौं कहिये ब
नकी बात ॥ सुनौ स्याम सब सवि
नउन लोगन कै सै रहि व सब विहा
न ॥ गोपी ग्वाल गाइ गोसुत सब
मिलिन बरकत समान ॥ अनिन
नहीन सिस रहि सरित हन मो
रुन बिन पान ॥ नोको कृपा
वनै हेउ हि मारग व्याकुल फि
रवान तिल पहान ॥ बलन नरे
नमे मरम स्थान रहि पछु न कु
समान ॥ पियवान कवन व स
नेयावन न वाइ सब ललन दीषा
न ॥ सूरदास से टेसन के २२०

सू मा १८०

157

ष्यिकनउहिमगानान ॥ १८ ॥ १
केधारा ॥ हरिजूसुनोवबनसु
नानविरहव्याकुलछीन ॥ न
नमनहीनलोचनकान ॥ य
हहैसंदेसब्रजनकोनाथसुनो
निदान ॥ मैसबैब्रजनदीनदेख्यो
ननकिनाम्नोप्रान ॥ नमविना
सोभानहीप्रभुनोदिवसवि·
नभान ॥ स्वासस्वासउस्वास·
वटैमैसुनधिस्रासायानि ॥ ज
गतजीवनजगतपालनजग
तनाथकृपाल ॥ करिजतन
कछुसकेप्रभुमोनिधेब·
नवाल ॥ २ ॥ १ ॥ रागनट ॥ ब्रजन

नइषिनपतिननलीन॥ रहनक
कटकेबिनचानकस्यामघन
तनमैनानरूनबिद्रुमललनान
करहनजोनमककैहोस्रुतिम
नपकैयो३पदेस॥ चषनिप्रहज
लंबूट्ठरकेनतवनभ्रनश्रवेस
योमुरलीमोवंडुकपीनपट
वनमाल॥ रहीबहछुविसंग
ग्रगानलपटिस्यामनपाल॥
दिवसकाटनसकलमिलि
केकहनगुनबलबीर। रेनइइ
पतिनिरषनलफतिमीनमो
विद्रुनीर॥ होहकरुनानाथ
नेधकहोऊपेनाइ॥ सरस

सू
सा
१५८

158

मुषवरसमैदैकैलेहुमरननि
वाहै ॥ १८ ॥ ११ ॥ केदारा ॥ गुनमैं।
पांचौदिनसौवसियै ॥ गोष
नमारीसौंजियउपजततिव।
हूरथपुनपोकसियै ॥ वहवि
नोदवहलीलारवमोदेषनरी
वनआवै ॥ मोंकोंकहांवहुरे
वैसोसुषवडभागीसोपावै
मनसावाचाऔरकरमना
होतकहतनकछुराषी ॥ सू
रकाछिनसीघोव्रजनतेयोह
यमाहितेमाषी ॥ १९ ॥ १२ ॥
सोरठ ॥ माधवनूकहाकहें
वाकीरति ॥ वैषतनिवनैकहै

तिनहिआवैप्रेमरसरसनमन
मननुग्रति॥ जदपिहोषट्मा
सरहौंठिगलहीनहीउन।
कीगति॥ कासौंकहोइभां
तिनकोऊसबहूनिकीपकै
मति॥ नमकृपालरुणाम
यकहियतनानैहोनोकर
नटति॥ सरदासप्रभुसोंइको
जैनानेनमपावौपति॥ ९०॥
केदारा॥ हरिनुवरसषबहूर
कहो॥ जदपिनैननिरषतनह
रिसतनपिरिमननानतहां
मरलीमुषसिरमोरपषौवा
उरंगुननकोहारु॥ भागेधेउ

रेन्नतनमेंरहतनिरखीवितवा
निवारु ॥ रातदिवसश्रमसर्थी
संगलियेवोलनरोलनषात
सूरदासप्रभुनवनेमोमनक
हिनमकनकलूवान ॥ १८ ॥
रागसारंग ॥ नेनोपैहूंरिकरुना
केश्रालै ॥ नैकनहोतनकठा
कहनचितमोहिश्रधिक[illegible]
लै ॥ मोसोंवातनकहोकिनस
षाववकहाश्रवतिननपेषो ॥
गहेंविरहकीलाजनहीनदि
नकरिसहहश्रजनरेषो ॥ नि
गमकहतनवसहोतभक्तके
सोफलनहीकीन ॥ सूरश्रसार

कुटिहाहाबननलग्रषिषयांभ
विलीन ॥१८॥५॥ श्रीशुषवचन ॥ रा-
गसोरठ ॥ ऊधोभलोज्ञानसमुझा
यो ॥ तुमसेमेंप्रवकहाकहा-
नहैमेंकहिकहापठायो ॥ क
हिगावनहैवेरेचनरापेक्काक
लकहननस्रायो ॥ मेरोहामब्र-
भवासिनिकोहैनदरिहिपा-
मेंहिडगायो ॥१९॥६॥ ऊधोवचन
रागसोरठ ॥ बनकेनिकटनाइफि
रग्रायो ॥ गोपिनेनेननीरसरा-
नाकेपारनपहूंचनपायो ॥ ना-
रेसेषमनावंवेटिकेवाहनपा
रगयो ॥ ज्ञानध्यानबननेमजो

नकोसंगपावारलयो॥ ३ दि
नदेतेवलजातेनेकउनविरह
पवनझकझोरी॥ सरतह
कुमेंमानवांरहवलरहकरहक
करिनेरी॥ होहुंखुशिवसो-
वागहेकेनकउ३कीघाई॥
जानेनेवहजोगवाकुंऊरो
कहथेगयोयासांई॥ जानन-
हूतेयाहवानलकीअगनर
वेकोधीर॥ सरकपजोकहू
कहेउनकीपहोप्रेमकीभी
र॥ १८॥ १॥ सारंग॥ सवेनोतोउ
घअपनेसनाऊं॥ सवतिन-
सोकहकथाजोगकीवेाान

रनोइषपाऊ । रोपचंककरै
निगुनकीनाहीमैंअटकाऊ ।
वैरमरीवारथकेनलमेंकौ
ह्याहनपाऊ ॥ कैनकोसो
कुनारीजैनानेभमोअगाऊ ।
वैमेरेसिरपरीयांवारेरोके
धाकासिरठाऊ ॥ पकग्रारो
रिपकीफुटीटोरनपहरीष
गऊ ॥ सूरदाससेवेषहहरसन
होवारहेषरीपठाऊ ॥ १८ ॥ ८
सारंग ॥ मैसमुफाईअनिअप
नोसो ॥ नटपितुनेपरतीतन
उपजी ॥ सवैलषोमपनोसो
करीनमारीमवैकरीमैंग्रो

सू
सा
१८१
कैं
161

रकहीकछूपती ॥ अवननिव
वनिसुननभउनकैस्यावन
नापेघुमानी ॥ कोउकहैवनाइ
पवासंउनकीवातनजुपक ॥ य
मपमखनमारिवाधीजिन।
केंगुनेनटेक ॥ देषनउनकोपे
मउहाकोपरेहैसवउलेंगो ॥
सूरस्यामहैहोथकोमसेगो
मगवोकाभूलेंगो ॥ ८ ॥ ५ ॥ राग
सारंग ॥ कोउसुमननवानहूं।
मारी ॥ मानेकहाजोगगाखव
पतिप्रगटप्रेमसुखननारी। को
मकहतहरिगईकंनेवननैन।
पामैवैहैन ॥ कोउकहत।

ंद्रमरघानकिगिरिगोवरधन
लेत॥कोऊकहतनागकाली
सनहरिगएजमुनातीर॥कोऊ
कैहैगयेब्रजबासमारगलिये
संगबलबीर॥कोऊकहतग
वालनसंगषेलनवनहिल
कानै॥सूरसमरिगुननामन
मारेकोऊकह्योनमानै॥१८
रागनट॥हरिहौंअहरदावेदसा
हो॥आताभगहाइकोमोपै
वचननिहारेपाहौं॥हारमा
नितहिचल्योदीनकैमानआए
ननषेद॥जानिलियेथोरेमे
वहुतोप्रेमनमोकेवेद॥ऊतर

म
सा
१८२

कोऊन्रानहीग्रावैनवडनही
मिलिजानन॥मेरीबानकहाव
ब्राहुश्रापधवचनमैमान॥ग्रप
नोटोमनानमनहोमनवैलाव
मीठीनोरि॥नापकोहुश्रकन।
कावीमैंदेरकटो॥१८॥२२॥
केदारा॥मेनन्वहाहीकोजभ।
मो पगपाउनकेप्रेमकोसे
मैनमहुविसरगयोनमसे
मसकलिगघोहोकोबैनाक
होहोश्रवन।रेषनहोउनहीके
कैहोलयोदिकिलिगाव
न॥मलत्रुकपहिबटमोसविनीने
पैहेविकारनलागयो॥म

सूरप्रभुनकहीहैगोपिनुसोंश्रा
वनमूंदिरहिभागे ॥ १९ ॥ २२ ॥
सारंग ॥ ब्रजकेबिरहेलोगबिचा
रे ॥ बिनगोपालथकिसेठे
लनअतिदुरबलतनकारे ॥ नं
दजसोदामारगजोवतनिस
दिनसांझसकारे ॥ चहूंदिसि
कान्हकान्हकरिटेरतअंसुव
नचलतपनारे ॥ गोपीगांइस
षासबदेषअतिहीदीनदुषा
रे ॥ सूरदासप्रभुबिनयोंदेषत
चंदबिनाज्योंतारे ॥ १८ ॥ २३ ॥ सा
रंग ॥ दिनदसघोषचलोगुपा
ल ॥ गाइनिकीअवसेरमिटा

सू
सा
१८२

163

कैमिलै ग्रपने बाल ॥ नाच
न नही मोरता दिन नै रटत न बा
ण काल ॥ स्रगहू रैन मो रैट स
न बिन स्रवन न न बेनु र माल ॥ बृं
दावन हरीं गौ होत दृष्टि ग्रौ स्या
मत माल ॥ सूरदास मैं या ग्रता
थौं है व राच लिये गोपाल ॥ १८२ ॥
श्री सूरवचन ॥ धनासिरी ॥ ऊधो
मोहि ब्रज बिसरत नाही ॥ बृं
दावन गोकुल बन उपबन
सघन कुंज की छांही ॥ प्रात स
मै माता जसुमति ग्ररु नंद दे
खि सुख पावत ॥ माखन रोटी द
ह्यौ सजायौ ग्रति हित सो जु बाव

५
न

गोपीग्वालबालसंगषेलत।
सबदिनहमनसिरात॥ साट
सथनिधबिरजनबासीजिन।
सोहितउनहेनाथ॥१८॥२५॥
बिलावल॥ जोननमाहिनबिसा
रत तिहिनबिसारेंपकचरी॥
मेरोननमननमकेसकटग
बोहषश्रानंदभरी॥ जोप्रहि
भेभजोमैंनाकोयहपाय
नमेरेपाइपरी॥ सदासहाइक
सेबाजननकीगुपनइनीसो।
प्रगटकरी॥ जोभारथभर।
हीकेश्रारावेगजकेबंटन
री॥ सूरजदासमनाहिगरका

सु
सा
१६४

164

कोनिसवासरजोगपनहरी
९९॥१९॥इतिश्रीदशमस्कंधेबिनी
[illegible]तींसोध्यायः॥ जहांस्यामसव
नगसउपापो॥ ऊंडेसमजलस
बहूहरमाथेो॥ धरनीरचिक
पूरामेंभारी॥ विविधिहमनि
छविमारी॥ जवनीचरमंडली
निगाजै॥ विविविविकानूत
फनिविवभ्राजै॥ सत्रुपमली
लायगटहिपाई॥ गोपिनके
कीनोमनभाई॥ विविश्रीसा
मनारिविवगोरी॥ कनकं
बंभमरकनकचरोरी॥ सो
भासिंधुहिलोरहिलोरी॥

सरकारि है बानै मति थोरी ॥ १

गौड़मलार ॥ राम मंत्र लवै ने स्या
मा ॥ नारि हू पा सहू पा स
गिरिधर बैने सहस मसिस
हस हाट सथ नामा ॥ मुकुट
कीलट कछु विकटाउ पा।
माक है वैन जानै नहीं नैन
जानै ॥ स्रम गान बसे च नावी
व व पलाव सर कछिन स्रा
छिन नहीं श्रौरे ॥ स्राप्र भुरा
स रसिक नागरी मध्य होऊ
पर सपर नारिपति मनहि
जौरे ॥ ८८ ॥ गौड़मलार ॥ पर
सपर स्याम सबाम सोहै ॥

स
मा
१६५

165

सीसच्चीथंरॐहिलनदिनम
निश्रवनतिरषच्छविस्पामम
ननहूनिमोंहे॥मासिकाल
लिनवेस्परवनीग्रयरवरस्ता
भगनाटकछ्छविकहिन
नाई॥यरनिपगपटकिका
फटकिमैंहूरिमटकिनेम
मैंग्रटकिरीफेकहूाई॥न
ववलनहूरिमटकरहोन
वनीटटकिलटकहीलट
कषगाछ्छविषगाछ्छविवि
वारे॥कहूनप्रभुस्पावलो
वसोईस्नगनिलेहूमहूंसे
सेचलीजोजिहोरे॥८९॥

गौडमलार॥ निरषव्रजनारिन्हकि
स्याममलाजै॥ विविधवेनीर।
चीमांगपीटीहूभगभालवे
लीविरचेंड्रलाजै॥ श्रवनना
हेकलेवनवाकुनासिका
हेसषजनकीरकोटलाजै॥
सुरकीस्वामिनीनारिब्रज।
भामिनीनिरषिपियप्रेमसो
भामुलाजै॥ ८२॥ विहागडा॥
वनव्रजनारिसोभाभारि॥ व
गनिजैहूरलालनहिगाश्रग
पेवरंगमारि॥ किंकिनीक
टिकनिनकेकनकावुरी।
फुनकारिहारयवौकीचम

166

कवैठीसभगमोनिहार॥ कं
सिरीउलरीविराजनविडुक
मावलवुंद॥ सभगावेसरललि
ननासासीकिरहीनंदनंद॥ श्र
वनपरनाटंककीछविगोर
ललिनकपोल॥ सरसभुव
सगुनिभयेहेनिरषलोचन।
लोल॥ ५०॥ जैनसिरी॥ नैनस
फलस्रमभयेदमारे॥ देवलो
कनिसानभजायेवरषनसु
मनसधारे॥ जपजपघुनिकि
नरसुनगावननिरषनजोग
निसारे॥ सिवसारदनारद।
यहभाषनयनिधनिमंदउ

लारे ॥ सुरललनापतिगतिबि
सराईरीनिहारिनिहारि ॥ ना
तिनबैनैदेषिसुषहरिकोग्रा
ईलोविसार ॥ यहकछुबित्तिहै
लोकमैनाहीजोवृंदावनधा
म ॥ सदाताकीरसकीसेवासु
राधिकास्याम ॥ २२२ ॥ असाव
री ॥ हमकोबिधिब्रजबधूना
कीनीकहाअमरपुरबासदि
ये ॥ बारबारपछितातियहैक
हिसुषदहूजोहरिसंगरहे ॥ क
हाजनमजैनाहिहमोरेफि
फिरिबनग्रवतारभलौ ॥ वृंदा
बनद्रुमलहूजियेकरतासोंह

इमसंगसोचलौ॥ परवानलागै
रैकोंप्रानदासीहेवनराहियै॥
सूरदासप्रभुंश्रीनाथजीसौनम
विनुकासोकहियै॥ ८२॥ वि
हागरा॥ धमनदनसदाकोंने
दन॥ धमसिखंडहेदमिलट
कनिधनिकेंडलधनिमगाम
देवदन॥ धनिगापिकाधनिसं
दनाधनिमोदनकीजोरी॥ जो
वनमधदामनीकीछविपट
उपमाकछूथोरी॥ धनमेंडली
जीसोपित्रकीनाविवंदक मा
गधामसमवगोपकुमारीको
अंतसामविहार॥ धददसमसहवो

सू सा १८०

167

धसकुमारीधहृदसस्महृसगोपा
ल॥ काहृसोकंहुश्रुननाहीक
रनाहीकरनपारख्याल॥ प
निब्रजवासस्प्राससबप्राणकै
सीहोनहृमारी॥ स्रस्रमरलल
नागुनगावसिंधकिनरही॥
निजलोकविसारी॥ २४॥
सृ.दोबिलावल॥ नरुनमालगो॥
पाललालवनमालग्रीवध
बिहृदयबिसाल॥ कवहूंगो॥
धनसंगवालककवहूबिर
रनसंगसषारवाल॥ यमधम
ब्रजकोपहृनापककीनोम॥
हृपकोषिप्रनपाल॥ कवहूक

मू
सा
१८

वनदरिसेहेंनाइकेंगोपसदानं
लेनसबबाल ॥ पैठिपताल
हिंनाथ्योकालीफनफनप
रनिरतनदेंताल ॥ ८५५ ॥ राग
कान्हडा ॥ कुंडलचंचलकपो
लदमनवचमकनडिननाल
तिलकसभगसिरकेसर
नैनाविचवने ॥ कटिकछ
नीचंदनकीषोरस्यामवर
नलसनैछ्वैरेनदनागरकें
जैयैवारने ॥ त्रिभंगीनिरत
करतब्रजजुवतीनमे
डिलभयइहहहवीचब्रेगाग्र
गस्यामबजे ॥ मोरमुकट

सीसधरैगगननैहैस्वरनुअभु-
निरषभ्रमरनिनभजपञ्चप
धुनिभंनै ॥ ८२९ ॥ रागधनासिरी ॥
रासमंडलमध्यस्यामराधा
मनीचवनवीचदामनीकोधु
निसभगांग्रगाढ़विसेरपट
नहीवाया ॥ नायकाश्रश्र
श्रहूटिसासोहैपवनीवहूं-
पासमवगापकेंस्या ॥ मिले
मवसंगनहिंलषतकोड
परस्पारवनेषहूटस्पामहूम
रमसंस्या ॥ सजेसिंगारन-
यमानजगनमगारहोग्रग-
नभूषनरतनवनेवैसे ॥ सू

रप्रभुनवलगिरिधरनवलनागरि
कानवलवननारिमेरलीनेसे
रागगौरी॥ जुवतिअंगछविनि
रषतस्याम॥ नंदकुमारश्रीअ
गमाधुरीअवलोकतअनवा
म॥ परीद्रिष्टिकुचअंचपिया॥
कैवहुरमषकसोनजाई॥ श्रं
गियानीलकेरलीयतीनिरष
तैनैतनजरोई॥ वेनिरषतिकेवा
भुजकीछविपहूचनिपहूची
सजनि॥ कारलवनिमुदिका
सोभनिपाछविपरमनलाज
न॥ वरनिविंदुनिरषहरीजेके
मनिपावालविस्याम॥१॥

नेंदलालब्रजवालसछविकेंा
वरनसूरदास॥ ८२८ ॥रागगौरी॥
स्यामतनरागतपीतविछोंगी
उरवनमालकाछनीकोंछे।
केटकिंकनछविरोरी॥ वेनी
स्रमननितेंवनझोलतिमेंरगा
मिनीनारि॥ सिथलवषनिता
मथितागमिलवहीतिरछिलि
होरि॥ पगनरंगचावककी।
सोभादेषिपियामनभावन॥
सूरदासप्रभुतननिभगेहेंस्त्रव
तिनमनहिरिझावन॥ ८२९ ॥वि
रागसा॥ विरतनस्यामनामनागे
गा॥ मुकुटलटकनिभ्रकुटीम

सू. सा. १२

170

ढकनिधानेहरिवरांग्रग॥ बलति
गतिकरिजलिहिकिंकनिवे
वरकुनाकार मनोहरमरमा।
लवानाचरमपामविहाल॥ ल
मनिकरपहूवनिमपहवीमहे
कायतिजोति॥ भावमेभुज
भितजहीनवहीमेभाहेन।
कवहूनिरननिनारिगनपाक
वहूनिरननग्रायहरायभुग्र।
निमिककेमनरखोगमप।
नाप॥ ८॥ ३। ॥रागविहागड़ा॥ ञ्
निमछेगनिमननिवजनारि
हानभावैनननिरीफव।
निमिरिवरयारि॥ ४॥

पराह्निविपरानभुजनिलटक
वनिहृदाकरनश्रनूप॥ वेंव
लचपलकूमकाश्रेवलश्र.
भुनहेवहूकूप॥ इरातिरघनश्रा
गकूपपास्यादोऊमनहीम
नरीफन॥ हंसिहसिवदनवा
वसवरघनसेवंश्रगजलभीन
न॥ वेनीछूटलटकिवगरानी
मुकटलटकलटकीनो॥ कु
लषिसनसिरतेभपन्योरेसभ
गखानसनमानो॥ गानकरंत.
ममागिरीकेपीयलीनीश्रकल
लाई॥ रसवसहेलपटायरहेरो
कुसरावसहेलपटायरबोवलि

सू
सा
१२

171

नाई ॥ ८२ ॥ राग गौरी ॥ निरतत स्र
ग श्र भूषन वाजत ॥ श्रति सो ठं
ग सुभाव देषियत इकतें इक श्र
ति गाजत ॥ कहूं नवनेरी सोभ
श्रै सावरन वरनि न जाई ॥ जे
से घन नें स्याम मन मोहन तैसे
ये गोपी छवि विधि कराई ॥ केकन
श्री किंकिनी नूपुर पायन न वि
छुवा सोहत ॥ श्रट भुज ग्रुनि उप
जति रूप नति इहि मिलि केभ्र
म भुम इन उत जोहत ॥ स निस
नि श्रवन मन हीरी कंढ्री मन
राधा मर सक सीना ॥ स्रा स्याम
सबके सघ दायक गोपि

पिकुगननिम्रगीता ॥ ८१ ॥ रा

गविहागज्ञ ॥ उघटनिस्यामनिर

ततनाथि ॥ थेईथ्रपरउपंगाउ

घेलेलनहैगिरिधारि ॥ नाल

मुरजनवावबीनाकिन्नरीर

समार ॥ मुचंगमहंगमिल

वनमचरवंदकुमार ॥ नागरी

सबगुननिधिनागरमिलवल

नपियमेरा ॥ कवहूंगावनक

बहूनिरतनकदहूनिरतता

कवहूंउघटनतंरंग ॥ मंडली

गोपालगोपीश्रगाश्रंगसुअ

हारि ॥ सुरसभगाननवलना

गरिदामिनीकविहारि ॥ ८२

रा
सा
१२२

128

रागबिहागरा॥ निरतनैहैरीकुस्या
मस्याम॥ अंगमनपिपैष्या
रीभ्रतिनिरषवक्रतनसबबाम॥
तरपलेतिचपलासीचमुकत
कमकतनभूषनअंग॥ पाछबि
पउपमाकहूनाहीनिरषन
सषभ्रंनेन॥ श्रीराधिकामक
लगुनश्रवनाकोस्यामभ्रथी
न॥ सेमनेहैननहीकंकमाती
भईहैनिभ्रतिलीन॥ रसमस्
इमानोछबलनभयोहैरानाके
पान॥ सूरदासप्रभुनीकिय।
किनभपकेहननकछुवनषान

रागकल्यान॥ कनहुषियप्रहाषि।

हरिदेलगावै ॥ कवहूंलैलैन॰
नागरीश्रुतिसघरंगदेसवन॰
कैमनरिझावै ॥ कवहूंछंव
नदेतश्राकर्षजियलेतकरत
विनुचेतववमतहेतश्रपनै ॥ मि
लनमुजकंटदेहनिश्रगल॰
टकिकेलातउषिहीयहतिकु॰
किश्रपनै ॥ लेतिगहिउंचति
विचटेनयरनश्रमतपकक
रचितकरकसीसधारै ॥ सूर॰
प्रभुस्यामनीस्यामसनमुष॰
होइतिरषमुषनेनईकटक॰
निहारै ॥ ८३५ ॥ विहागडा ॥ रसव
सस्यामकीनीनारि ॥ श्रयवर

सू
सा
१२३

सश्रवबनवोसपामामसबब्र
जवारि ॥ कामस्रानाभमैवाल
सवनपरीश्राम ॥ पइकननना
रिइकुइकश्रापकहोप्रकास
कवहूंनिरतनकवहूंगावहूंको
कविलास ॥ साकप्रभुरामनाप
ककाजसुषइषनास ॥ दिहागत्र
इलहिइलहनिस्यामास्याम ॥
कैककलाविनपउपसण
इषनलाजनकाम ॥ जाफल
कोउजननारिकियोनपसोफल
सवनिदियो ॥ मनकाननाभई
सवप्रानसवहूनिमानिलियो ॥
गानेपनाइहिवाईगपजानिरिव

८३९

०

सखसखनकेबैरखवनावननागरि
रूपसुरूप॥ तियासखचरिपिय
कोमनमोहनसुरपवसकरन
रिझावन॥ सुरस्यामममोहन
सुरकोबागवारउरलावन॥८
रागरामकली॥ स्यामास्यामराज
वनभारी मनमेंकरहनओर
नहीमोसीकोउपियकोप्या
री॥ दोहाछंदसुवपरनसरहरी
हैगाइसेनावन॥ आपुनरीक
कैनकोरिकवनपहतिपगवै
वतावतिनिरतनघाटतिगत
सेगीतपरसुननकोकिलला
मन॥ सुरजस्यामनागरीनागरि

४२

ललनामेंउलगाजति॥ ८९८ ॥रा
नकली॥ गेऊबनितेपीयवांवा
निषिमेंनलजानिहिंहैंनही·
सोभावलासगानिगंजिहस·
मोहनिकोककलाप्रवीन॥ है
सियसपनानगावनिकाति
पीयप्रापीव॥ सुनतसगावन·
होनव्याकुलाहूतवकिनगांई
सूयभुवसकियेनागरनानि·
नानिगाई॥ ८९९॥ रागकली॥ प्या
रीसामलईउरलाई॥ उरनउसें
परमकोसुषवतिकापैजाई॥
कनकलविमनमलपलेपनति
रषभागनिग्रेग॥ नासिकासु ॥

भवालैलैउनिकस्यामसुंदरनें
ग॥ देनेंजुबनलेतसबकोंमा
नधरनभाग॥ सबभुवसकि
येकागारिकदेनथमसहाग।
विहागड़ा॥ रीकेपरमधारहरीना
रि॥ कंटभनभुनधरेदोउसं
तनहीनिवारि॥ गौमस्याम
कपोलसललितसुधरसुसन
मार॥ परस्पारदोउपीयप्यारी
रिफिलेनउगार॥ प्रानपकैवेद
हकीनीभकुप्रीतप्रकास॥ स्वा
मीस्यामनीमिलकरनें
गविलास॥ ६४॥ विहागड़ा॥ ग
वनस्यामस्यामाअंग॥ सघरन

स
सा
१८५

175

वनागहिअलापतिसुरधानपि
यंसंग॥तानगावतकोकिला
गीलनाइअलिमिलेदेत॥सोर
सेगचकोरडोलतग्रापग्रपनेहे
न॥भामिनीअगनोनमानोम
लहस्यामलगान॥परमपरहो
डुकरनकीडमनहिनतुलह
न॥अवनविचकवपरमसोभ
निषिहमितगोपाल॥स्याके
वनगिरनिविचमरहोहेअध
काल॥८॥४४॥विहागडा॥सो
हनमोहरिरसभरे॥मोहमो
ननेनफेरनतहोनेनटरे॥
अंगिनिरषिअनेगललि

गलजितमकैनहिठदगाई ॥ प
ककीकहाचलतमनमतको
टाहतलमाई ॥ इनेपरहेसिम
गननतिछविनिरनमेदेखप
र ॥ उठनखेचलप्रगटकवेदा
ठकनकरमचटमा ॥ टकि
केवकीतरकिमालाहीथर
नीजाई[illegible]मपुकरनिषि
करुनाकरनलईउठाइ ॥ ८४२
रागगैतसिरी ॥ प्रेमसहितमाला
करलीनी ॥ पारिहादैरहतिप
हनानीभपपरननिरीनीपीन
वमनलेखमनलपोछनतलि
लेकंहलगाई ॥ चरननिवारपर

स
मा
१-१

176

मनतैदूरणेकहतनगुनटिस्रम
पाप॥ जचस्रमदेषिणवनसुष-
होकीफेकिजगवनसंग॥ सू-
रतासमप्रभैंदनिहारानवलन
पियाकेसंग॥ १४४॥ राग भैरो॥
हाहाहाषिणनिनकरो॥ जैसे-
करोमैं[illegible]मैमेगिजायोसोमेराम
नतुमहेहरो॥ तुमनेसस्रमव-
शेकरानहोनेसैमेदउलाउगी
मेस्रमदेषिनमाईस्रगाकोभन
भरिकटलागाउगी॥ मैंहारी
मैनतुमहूहाचानवोपिस्रम
मैठोगी॥ तासमाभमज्योउ-
खेगालईमहिमेगा

मेंहूंहूं सिमेरोंगी ॥८४५॥ रा

मकली॥ निरजनस्यामस्यामा

हेत॥ मुकटलटकनिभृकुटी

मटकनिनारिमनमघटेन॥

कवहूंचलनिलछ्वागनिमो

कवहूंउघटनवेन॥ लोलकुं

लंगेरमेरितचपलनेननिमे

न॥ स्यामकीछविदेषिनागरि

रहीइकटकजोहि॥ स्याम्रभु

रलाईलीनीप्रेमगुनकापोहि॥

रागकामोद॥ अरझीकुंडललटपे

मरसेंपीनपटवन॥ मालवी

वशानिराकेंहरेरोफनन॥ प्रा

ननिसोप्राननैननैननिसोंस्पर

१४५

स्.
सा.
११

177

के। देवरकीलीलछविदेषेलष
रानस्यामघन॥ होसीहोउनि
रनकैरीतिफिरीफिरेकभरे
ननोषइननाथेरउज्जटनहेम
नमन। मनहामग्रभुज्यारिमंद
लीजुवतिभारीनारि॥ कोंग्रेव
लैलैपेंछवनदेषकन॥ १४०॥
रागग्रसना॥ मोहनलालकीमं
गललनाये॥ सोहैजैसेमनरुत
मालकेछिगफलसमनजर
रको॥ वदनकांनग्रनूपभांनव
हीसेभानवीलवरनववन।
विवशरासोमनोससिसरको
मकतालतारागनपांतिविं।

ववेसमैसवूनौ॥ मिलहूमैंहोन
रंगजेसेहरहकौ॥ सदासष्भ
मोहनैदोऊनकीछविवाढी
मेटनउघनिरषनिरषेनैनमैंन
दरटकौ॥ ९४९॥ बिहागरा॥ पिय
संगषेलनत्रपिकअसमभयोग्रा
उरीहेहेंकोविषारि। ग्रपनेत्रव
लैसषवाऊंरूविवटनश्रम
कनकेवारि॥ निरननउलरि
गयेग्रंनभूषनविथुरिलटिवे
पिहेंसंवारि॥ सनैमरपिय
प्यारीकोमिलनजाहिनसह
वैनाहिंजोवारि॥ ९५१॥ रागके
दारा॥ प्यारीदेषिविहवलगान

२

स
सा
११

178

नेदंनेदनदेषिषीऊंग्रकभिल
पदान॥कवंहूंलेरिउछेगवा
लाकरिहिरामपरवान॥प्रेमरा
सकरिभेदोऊंनेनमिलगुस
कान॥रामसकामनाथनैन
नहीविहान॥सुरप्रभुब्रजनरु
निसेमामिलकतनमषनसिराव
मुरलीस्तुति॥रागकल्यान॥हरषमुर
लीनादस्यामकीना॥काषि
मननतिहूंभववसननवथाकैं
पवनससिरिभलोगवनमाव
लीना॥नारिकावानलजतुड़ि
मनमनसजेतिननननतनेजिरिं
सहूलागेपो॥नागसरसनिषके

२५०

सिद्धचारनकेसामराजंगुसव
ध्यानमोम्यो ॥ आवननाटटसौ
मेसंग्रासनवसौगर्भवैकुंठ
पुनिमगरवासी ॥ कहनश्रीप
यासेगाधिकारवनपम्हाशुभ
ध्यामकेटामकासी ॥ ८५ ॥ श्री
॥ विदागग ॥ मालीनिवैकुंठगप
नारायणकमलाशुनिटपति
श्रनिरुविहरयहई ॥ सनेपि
यायहवानीश्रटभुनवृंदावनर
तिहेछो ॥ धन्यधन्यश्रीपतिम
षिकहिजीवनव्रजकेलिष्यो
एसविलासकानंनटवसोह
मनेयुतिहरी ॥ येनि(वन)धामधम्म

१५

सब्रजयरानीउहिलागेजोसुरि

पहसबतिहूंभवनमैनाहीजो

हीसेगफलपक॥स्रानिरषि

नारायणउकरटकभेलेनेनवि

मेष॥८५२॥असावरी॥जोसबस्या

मकरतहूंदावनसोसबतिहूं

उसनाहीहो॥हमकौकहेसषि

लतरगनउनकीपहककहिका।

हिय्रउलाहीहा॥सनोवि।

याश्रीसतनाकहनहोमाने।

आनकोईहो॥नंदउसमभग

सामसबविनुहूंदावननदि

होइहो॥हरतकरतासोअ

भुहोहीवहसबनानेस्या।

गोरोहोहो ॥ सायमगायावर
गितिपाययनिसघनेदइलागे
हो ॥ ८५६ ॥ रागमलीन ॥ नवहरि
मलीनादप्रकाशे ॥ जगम
नइष्यावरवाकीनेपाहेनन
लजविकाशे ॥ स्वर्गपनासट
सोदिसहूरनयुनिसाख्यावन
कीनो ॥ निसिहरीकलपसम
नवठाईगोपिनकोसषरी।
नो ॥ ससवनभयेजीवजलष
लकेननकीसयनसंभीर ॥
सास्यामसुपवेत्रमयुरस्तनि
उलटेसबओहार ॥ ८५७ ॥ रा
गकल्यान ॥ मुरलीमनविपरी।

सू
सा
१८

180

नकराई ॥ तिहभवनभरिनारि
समायेगधारमनवमाई ॥ व
छुगाथनतिनहीमषपरसनव
रनतहीननपेषु ॥ नमुलाईल
टपारवलीपाछेपवनथकिन
सनवेषु ॥ विहभलभपनहीस
पिकाहसगीधारतिनरनारि ॥
सुदासमवचकनतनहोतनहोत
नत्रवतिनमुषकारि ॥ २ ॥ ५५ ॥
रागकेधारा ॥ तुरलीसनननग्रवल
चले ॥ पथकेचालनलजातपाह।
नविफलवृक्षफले ॥ पपश्रवन।
गोपनसघननितेसमउलकित।
गात जुतेउमग्रजातनपलववित

व

वेवलपात ॥ सुननतषगामरगामै
नमाखैषोविरकीग्रतुहार ॥ प
रमितमगिनमानपरमैजगी
जोगविसारि ॥ सवालगरलगुरू
सैजसोवतवैहैसहजसुभाई ॥
सुप्रभुरसरातनकेहितसठ
धरैनवठाई ॥ ५५ ॥ सापूरवी ॥
नैदनंदनसवगारवासरीवजा
ई ॥ सुागमवणयनीनिसायस्रित
सानिगाई ॥ ग्रनीनयुनातनसे
गीनसुबरग्रोरनाननिलाई ॥
सायपायपनालप्रायनिरनधा
यपनिमहंगावजाप ॥ सुातुव
भुनवलवालसकलकलाग

नरवीरअरामरणरामरीरुरीकरैं ॥
रागकल्यान॥ रघोगरामरंगस्याम
सुवतिनसंघटीनोसुरलीधुनि
करअगमसंवरामसंरासुनिगमसु
रामसुवतीतजिगेहवासवन
हिगवनकीनो॥ मोरहारसुम
रनागरसनिजनगनभजागसि
वसारदादिकिनभएजानी
अमरागनअमरनारिआयेलो।
कनविमारिश्राकअग्राकमा।
मकहनथमथमवानी ॥
धकिनभयोगानिसमीरहे।
रमाभयोअधीरनारागनल।
निनभएमारागनहिपावै॥

उलटिजमुनवदनथाविपरी
तसबविचारिसहानुप्रभुसंगना
रिकौनकउगतापै ॥ ५ ॥ ५८ ॥ रा
गगौरी ॥ नंदकुमारारासरसकी
नो ॥ अद्भुतकौनकप्रगटदि
षायौ ॥ कियेस्यामसबहूनिम
नभायौ ॥ विवगोपीविचरुमि
लेगुपालाना हिंकेवनसोभन
सुभमाला ॥ राधामोहननमध्य
विराजै ॥ त्रिभुवनकीसोभाव
हूराजे ॥ रासरंगरच्यौअतिभा
री ॥ हावभावनानागतिकारी
निरतनअंगगतिकितभईनाग
रि ॥ रूपगुननकरपरमउजाग

स्र
मा
१८२

182

ति॥ उमगि स्याम स्यामा उर लई॥
बांबार कहै प्रेम समाई॥ केट
केटभुन भुज दोऊ जोरी॥ चन।
दामिनि कुटन हिलोरै॥ स्या।
स्याम नवति त्रुमषदाई॥ नव
तिन के मन गर्व वढाई॥ ८॥११

इतिश्रीदशमस्कंधेत्रितीयोध्याय॥ ॥